होमियोपैथिक मतके अनुसार

गृह चिकित्सा

लाहिड़ी एण्ड कम्पनी

मथुरा शाखा से प्रकाशित

गृह चिकित्सा

(होमियोपैथिक मतके अनुसार)

स्वर्गीय

डाक्तर जगदीश चन्द्र लाहिड़ी की बनाई हुई

पञ्चम संस्करण

बङ्ग भाषा की गृहचिकित्सा से हिन्दी भाषा में
अनुवाद किया गया।

लाहिड़ी एन्ड कम्पनी मथुरा शाखा से
प्रकाशित

—

द्वितीयवार मुद्रित
(बहुत परिवर्धित)

मूल्य ॥।=] आना } *Muttra 1906* { *Price 14 As*

श्री देवकी नन्दन प्रेस में छापागया श्री वृन्दावन धाम।

भूमिका

आज कल दिन दिन भारत वासियों की दरिद्रता के साथ साथ तरह तरह के रोग भी बहुत बढ़ रहे हैं परन्तु उन के साथ रोग दूर करने के उद्देश्य से पश्चिमीय चिकित्सा प्रणाली भी खूब बढ़रही है यहां तक कि आज कल ऐसा कोई विरला ही गांव निकलेगाजहां दो एक आदमी अंग्रेजी चिकित्सा के पूरेया अधूरे जानने वाले नमिलते इस अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली में एलोपैथिक और होमियो पैथिक दोही प्रकार की चिकित्सा प्रधान है इनमें से भारत में सब जगह एलो पैथिक सब जगह जैसा प्रचार है होमियोपैथिक वैसा नहिं है बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि केवल बंग देश के सिवाय और देशों में अबतक होमियोपैथिक का जैसा प्रचार है उस नहीं की बराबर ही कहना चाहिये पर इस रोगी पीड़ित भारत वर्ष केलिये होमियोपैथिक चिकित्सा जैसी उपयोगी है औरचिकित्सा वैसी उपयोगी नहीं है यह एक सर्व प्रकार से सिद्ध बात है विशेषित एलोपैथिक मतकी चिकित्सा जैसी साध्य है वैसे ही इसकी औषधें विश क्रिया युक्त है जिनका व्यवहार समाचार पर विपत्ति से खाली नहीं होता परन्तु होमियोपैथिक चिकित्सा प्रणाली वैसी नहीं है इसकी कीमत कम औषधें साधारण और चिकित्सा प्रणाली सुगम है यहां तक कि मामूली लिखना पढ़ना जानने वाला आदमी भी पुस्तक की सहायता से सहज सहज रोगों की चिकित्सा करसका है और पड़ोसी कुटुम्बी गरीब दुखियाओं का कष्ट मोचन करके अपूर्व यशप्राप्ति लाभ करसका है इसका विशेष गुण यहभी है कि औषधि यदि लाभ न उपजावे तो कभी हानी भी न होगी।

आजकाल बंग देश में होमियोपैथिक चिकित्सा प्रणाली का विस्तार होनेके साथ बहुत से चिकित्सा ग्रंथ भीप्रकाशित हुये हैं सुप्रसिद्ध लाहिरी कंपनी के प्रतिष्ठाता स्वर्गीय जगदीश चन्द्र लाहिरी इसके पथ प्रदर्शकथे इन्होंनेही सबसे पहले कलकत्ता राजधानीमें एक सब से बड़ा औषधालय स्थापित करके बंग भाषमें अनेक प्रकार के चिकित्सा ग्रंथ रचेथे और उन्होंनेही बंग देशीय गृहस्थों के लिये गृह चिकित्सा नामक पुस्तक बनाई थी उस की सहायता से प्रत्येक गृहस्त सहज सहज सब रोगों में होमियों पैथिक औषध देकर लाभ उठा सकते है धीरे २ बिहार प्रदेश के पटना, और बांकीपुर शहरों में एव युक्त प्रदेश के श्री मथुरा धाम में उक्त कम्पनी के शाखा औषधालय स्थापित होने से उन देशों में इस चिकित्सा प्रणाली प्रचलित करने के लिये बंगला गृहचिकित्सा का हिन्दी अनुवाद बांकीपुर शाखा से प्रकाशित हुआ किन्तु वह अनुवाद प्रथम प्रकाशित गृहचिकित्सा का अनुवाद मात्र था इस के ऊपरान्त बंगला गृहचिकित्सा के चार संस्करण और प्रकाशित हुए जिन में क्रमश अनेक बातें बढ़ती गयी और साधारण पीड़ाओं की चिकित्सा का विषय विस्तृत रूप से सयोजित होने के कारण पुस्तक का आकार बहुतही बढ़गया पुरानी छपी हिन्दी गृहचिकित्सा भी प्राय १ वर्ष हुआ सब बिकचुकी इस समय पांचवी बार छपी हुई बंगला गृहचिकित्सा का यह हिन्दी अनुवाद दूसरीबार छापा जाता है पुरानी छपी पुस्तकों के साथ इस की तुलना करने से इसे एक नवीन पुस्तक कहना भी अत्युक्ति न होगी।

जो सब रोग कठिन और सांघातिक हैं वह सावधानी से छोड़दिये गये हैं क्योंकि जिन के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है उन्हें ऐसे कठिन रोगों की चिकित्सा में प्रवृत्त होना उचित नहीं

है। सहज सहज रोगों की चिकित्सा करनाही इस रोगों का उद्देश्य है। जिन के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है वह यदि इस के द्वारा उपकार प्राप्त कर सकेंगे तो हम भी अपने परिश्रम और व्यय को सफल समझेंगे यह गृहचिकित्सा स्वर्गवासी ग्रंथ कारकी बड़े आदर की वस्तु है।

बड़े आनन्द का विषय है कि प्रति दिन शिक्षावृद्धि के साथ साथ यहां वालों का यदि होमियोपैथिक चिकित्सा पर भी पड़ती जाती है और बड़े २ शहरो में होमियोपैथिक चिकित्सा कभी दीख पड़ते हैं। परन्तु अंगरेजी न जानने वाले चिकित्सकों के उपयोगी पुस्तक का बिलकुल अभाव था परन्तु हमने उस अभाव को दूर करने के लिये सब प्रकार का कष्ट और व्यय स्वीकार करने का संकल्प किया है विसुचिका चिकित्सा और चिकित्सा तत्व नामक दो बड़ी २ पुस्तकें जितना शीघ्र होसकेगा अनुवाद कर के हिन्दी मे प्रकाशित होगी।

सर्व साधारण लोग जिस से इस पुस्तक द्वारा लाभ उठा सकें इस के लिये इस भाषा जहा तक सम्भव है सरल रखी गयी है और जिस रीति से यह पुस्तक प्रत्येक घर मे पंचांग के समान रह सके उसी लिये इस पुस्तक का आकार पहले से थोड़ा और कागज छापा खूब बढ़िया होने पर भी कीमत पहले से कुछ अधिक रक्खी है॥

श्री उपेन्द्रनाथ गाङ्गुलि
मनेजर लाहिड़ी एण्डको
मथुरा शाखा

अ	पृष्ठ

औ — पृष्ठ

क

पृष्ठ

ख

बूंद टपकाने की सुगम रीति



बून्द टपकाने का एक प्रकार का यन्त्र है जो टेढ़ा होता है यह केवल कांच का है।

इस यन्त्र के बड़े हिस्से को शीशी के भीतर डालदो जिस में दवा है और छोटे हिस्से को बाहर रक्खो जैसा ऊपर आकार दिखाया है। कांच के बड़े भाग को शीशी में डालके हिलादे फिर जिस पात्र में दवा देनी हो एक एक बुन्द डालदेवें।

१ अभ्यास करने के लिये किसी शीशी में पानी भर के यन्त्र डाल के सीखे।

२- एक बार एक दवा में यन्त्र डालने के बाद खूब पानी से धो कर के दूसरी दवा की शीशी में डाले

३- भूलकर भी कभी सुराख द्वार नली से दवा न टपकाना चाहिये। कारण ऐसा करने से उसका भीतरी हिस्सा साफ नहीं होता है।

बूंद टपकाने की सुगम रीति



बून्द टपकाने का एक प्रकार का यन्त्र है जोटोढ होता है यह केवल कांच का है।

इस यन्त्र के बड़े हिस्से को शीशी के भीतर डालदो जिस में दवा है और छोटे हिस्से को बाहर रक्खे जैसा ऊपर आकार दिखाया हैं। कांच के बड़े भाग को शीशी में डालके हिलावे फिर जिस पात्र में दवा देनी हो एक एक बुन्द डालदेवे।

१ अभ्यास करने के लिये किसी शीशी में पानी भर के यन्त्र डाल के सीखे।

२- एक बार एक दवा में यन्त्र डालने के बाद खूब पानी से धो कर के दूसरी दवा की शीशी में डाले

३- भूलकर भी कभी सूराख वार नली से दवा न टपकाना चाहिये। कारण ऐसा करने से उसका भीतरी हिस्सा साफ नहीं होता है।

तापमान यन्त्र (थर्मामेटर)

यह यन्त्र कांच का होता है इस की नली में पारा रहता है जो गर्मी को पाकर चढ़ता है इस के ज़रिये से बुखार जाना जाता है इस के लगाने की यह विधि है। जिस जगह पर नाली में पारा जमा रहता है उसी हिस्से को बगल में पांच मिनट तक दबाये रखना चाहिये, ऐसा करने से पारा चढ़ेगा, कांच पर निशान रहते हैं उनमें जो बड़े बड़े दाग है उनको "डिगरी" कहते है। और छोटे छोटे दाग १ एक डिगरी के पांचवें भाग होते हैं।

शरीर का मामूली ताप ९८·४। या ९८ ॥ डिगरी होता है। ज्वर होने पर ताप चढ़ता है और वह यन्त्र से जाना जाता है। ९८ डिगरी से कम ताप होने से जीवन का भय है परन्तु किसी किसी का स्वाभाविक ताप ९७ डिगरी तक होता देखा गया है परन्तु विषूचिका में ताप ९१ तक होता देखा गया है। जिस प्रकार ताप न्यून होने से भय होता है वैसेही अधिक सेभी १०७ डिगरी वा इस से अधिक ताप भी भयानक है। ताप यन्त्र के लगाने के पूर्व ९८ डिगरी तक पारा कर देना चाहिये इसका उपाय यह है कि ऊपरी भाग को मुट्ठी से पकड़ कर झटका देने से उतरता है इसी प्रकार से ९८ पर करके लगाना चाहिये। सावधानी से व्यवहार करना चाहिये इस के टूटने का भय रहता है।

श्रीश्री राधावल्लभोजयति ॥

होमियोपैथिक गृह चिकित्सा ॥

प्रथम अध्याय

१ । होमियोपैथि

ईश्वर की सब से बड़ी सृष्टि मनुष्य जीवन है और स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) ही मनुष्य जीवन का सब से बड़ा सुख है। स्वास्थ्य के बिगड़ जाने से उसका बना देना और फिर ऐसी कोशिश करना कि जिससे जिन्दगीभर स्वास्थ्य ज्यों का त्यों बना रहे यही इस पुस्तक के बनाने का उद्देश्य है। शरीर के रोगिल होने से होमियो पैथिक के इलाज से जितनी जल्द और आसानी से तन्दुरुस्ती हासिल होती है, दूसरे और किसी मतके इलाज से वैसी आसानी से और जल्द तन्दुरुस्ती नहीं मिलती है पहले इस पुस्तक को पढ़कर होमियो पैथिक इलाज में चित्त देने के पाठकों को यह जान लेना उचित है कि होमियो पैथिक क्या है। इस लिये होमियो पैथिक के बाबत थोड़ी सी मोटी मोटी बात नीचे लिखी जाती हैं।

इतिहास - करीब सौ वर्षका अरसा हुआ सन् १७९० ई० में महात्मा हैनिमन के द्वारा इस होमियो पैथिक मत का प्रवर्तन जर्मन देश में हुआ है। यह बात ठीक है कि हैनिमन के जन्म लेने से बहुत पहले भी यूरूप और हिन्दुस्तान के आयुर्वेद वगैरह प्राचीन चिकित्सा शास्त्रों में इसके चिन्ह पाये जाते हैं। परन्तु हैनिमन

ने ही सब से पहले इसको ऊंची पदवी पर बैठाया है तब से प्रति दिन इसका प्रचार देश देशान्तर में फैलता गया और इस की यथार्थता सब मनुष्यों के हृदय में जमती जाती है। इस वक्त करीब चारसौ इंगलेन्ड में और दस हजार से ऊपर अमेरीका में कायदे के मुआफिक सीखे हुये होमियो पैथिक डाक्टर हैं। सिर्फ ६० वर्ष से होमियो पैथिक मत का इलाज हिन्दुस्तान में चला है। इनहीं साठ वर्ष में बहुत से अच्छे अच्छे चिकित्सकों ने पुरानी चिकित्सा प्रणालीको छोड़कर इस नये मत को ग्रहण किया है। बङ्गाले में होमियो पैथिक इलाज का आदर खूब है। और आदर के साथ ही साथ इसके चिकित्सकों की गिनती भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है।

होमिया पैथिक क्या है ?—तन्दुरुस्ती की हालत में जिस दवाई के देने से जो लक्षण शरीर में उत्पन्न होते हैं। अगर वैसे ही सब लक्षण किसी रोगी की हालत में मालूम दें तो वही दवाई देना चाहिये। जो दवा बीमार को बीमारी के जिन लक्षणों को दूर कर सक्ती है। वोही दवा तन्दुरुस्ती की हालत में देने से वैसेही लक्षण पैदा करसक्ती है दवाई और रोग के साथ यह एक नित्य और स्वाभाविक सम्बन्ध है। इसका नाम होमियो पैथिक अथवा सदृश चिकित्सा विधान है। अच्छे शरीर में कुनेन देने से कम्पज्वर की हालत पैदा करसक्ती है। इसलिये कुनेन से कम्पज्वर आराम होता है तन्दुरुस्त को अगर आरसेनिक देने से हैजे की सी हालत मालूम देती है इसलिये आरसेनिक से हैजा आराम होता है होमियो पैथिक काल्पनिकमत नहीं है यह प्रत्यक्ष प्रमाण के ऊपर बनी है खूब यत्न से परीक्षा के जरिये जो प्रत्यक्ष प्रमाण मिला है उन्हीं सब अकाट्य और प्रत्यक्ष

प्रमाण और अभिज्ञमता पर यह होमियो पैथिक मत स्थापित हुआ है। हैनिमन ने जब इसको जारी किया था तब वर्षों तक छिपाये रक्खा था और जाहर नहीं किया था अन्त में परीक्षा प्रमाण और अभिज्ञता से इसकी यथार्थता को स्थिर और निश्चयमान कर जब उनको विश्वास हुआ तभी उन्होंनें इस को सर्व साधारण में जारी किया था। ऐसाही प्रत्यक्ष प्रमाण और अभिज्ञता की मजबूत भीत पर यह होमियो पैथिक मत कायम किया गया है। जब तक यह प्रमाण अभिज्ञता का फल भ्रम पूर्ण साबित नहीं होगा तब तक एक बड़े भारी किले के माफिक होमियो पैथिक इलाज की बात भी अचल और अटल रहैगी।

अमिश्र औषध।—जैसे यह होमियो पैथिक मत प्रत्यक्ष प्रमाण के ऊपर निर्भर है वैसे ही इस के इलाज की राह भी अत्यन्त सहज है। एक वक्त में सिर्फ एकही दवा रोगी को दी जाती है। इस लिये बिना मिली हुई एक एक दवा का अलग अलग असर खूब सहज ही में समझ सके हैं जब बहुत सी दवाइयां आपस में मिली होती हैं तो यह बात समझ ही में नहीं आसकी है कि दवा का क्या असर है हर एक दवा का खास असर होता है। बहुत सी दवाइयें एक जगह मिलजाने से आपस में एक दूसरे के असर को बाधा पहुचाती हैं। सिर्फ ये ही नहीं अगर इन मिली हुई दवाइयों से कुछ नतीजा निकला तो ये बात समझना कठिन है कि किस दवा के असर से यह नतीजा हुआ और अगर कोई नतीजा नहीं निकला तो दवा बदलने के वक्त यह भी समझना कठिन है कि उन मिली हुई दवाइयों में से किस को निकालना होगा इसलिये होमियो पैथिक इलाज में एक वक्त में सिर्फ एक ही दवा दी जाती है।

अल्पमात्रा (कम मौताज)।—होमियो पैथिक कहने ही से अल्प मात्रा या (कम मौताज) नहीं समझना चाहिये। इस बावत में आम लोगों की बड़ी भूल देखी जाती है। रोगके साथ इस दवा का एक खास सम्बन्ध होमियो पैथिक का मतलब है। दवा की मौताज होमियो पैथिक का मतलब नहीं है। मात्रा या मौताज कुछ भी क्यों नहो किन्तु होमियो पैथिक के कहने से दवाई की सादृश्य व्यवहार प्रणाली ही समझी जाती है। रोग में दवा का इस्तैमाल करने के बारे में एक खास मत अथवा नियम (कायदा) खास ही होमियो पैथी है हैनिमन साहब ने जब होमियो पैथिक मत चलाया तो प्रचलित मात्रा या मौताज का इस्तैमाल करते थे आखीर में परीक्षा और अभिज्ञता द्वारा उन्होंने समझाकि कम मौताजमें दवा देना काफी है। खास कर जियादा मौताज में बारबार दवा देने से जो नतीजा होता है थोड़ी मौताज में उस से जियादातर नतीजा मिलता है हैनिमन साहब के पीछे सब होमियो पैथिक डाक्टरों ने भी इसी मत का समर्थन किया है मात्रा या मौताज के थोड़े होने से आश्चर्य व अविश्वास करने की कोई बात नहीं है। रोगी के शरीर में होमियो पैथिक कायदे के मुआफिक कम मौताजकी दवा देकर परीक्षा करो फिर जैसा नतीजा देखा जावे वैसा ही करना चाहिये। प्रत्यक्ष प्रमाण से बढ़कर और कोई प्रमाण नहीं है। रोग होने से शरीर का और शरीर के अन्दर रहने वाले बहुत यन्त्रोंका एसेजन गुण खूब बढ़ आता है इसलिये मात्रा कम होने से भी थाम मात्रा की दवाई से ठीक होता है। अच्छी अवस्था में अगर किसी बदन के हिस्से को दबाया जावे तो तकलीफ नहीं होती है। परन्तु फोड़ा अथवा चोट लग जाने के कारण बदन के किसी हिस्से को दबाया जावे जिसमें कि ने तो दर्द मालूम होता है।

होमियो पैथिक की विशेषता—होमियो पैथिक का इलाज लक्षण के मुताबिक होता है । और इस का इकट्ठा लक्षण ही रोग है इस के सिवाय और दूसरी बात नहीं है । होमियो पैथिक की किताब में लिखे हुए लक्षण के साथ रोगी के लक्षण मिलाये जाते हैं इस के बाद चिकित्सा की जाती है। जिस दवाई के लक्षण के साथ बिमारी का लक्षण जियादा मिलजावे उसी रोग की वही दवाई है और उसी के देने से सर्वथा फायदा होता है। जिस दवाई के लक्षण के साथ बिमारी का लक्षण जियादा मिलेगा वही दवाई जियादा फल दायक होगी सब लक्षण दूरहोने से बिमारी भी दूर होजाती है।

होमियो पैथिक आश्चर्य नहीं है—होमियो पैथिक आश्चर्य नहीं है और अभिज्ञता के विरुद्ध भी नहीं है जो बात कि पहले हमने देखी नहीं है इसलिये वह बात झूठी होगी इस का कोई सबब नहीं है। जैसे किसी मनुष्य से रेल अथवा तार के जारी होने का हाल कहा जावे कि भाफ पानी और धुआं के जोर से चलती है और तार बिजली के जोर से इधर से उधर खबरें पहुंचाते हैं तो कभी कोई विश्वास न करेगा परन्तु जब जो चीज आखों से देख रहे हैं उनको झूठी नहीं कह सके जिस बात को कि हमने कल हसकर उड़ा दिया था उसी को आज प्रत्यक्ष देखकर सत्य मानना पड़ता है यह हमेशा समझना चाहिये, कि अभिज्ञता और ज्ञान धीरे धीरे उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं।

विश्वास करना होमियो पैथिक नहीं है—जिन लोगों का खयाल बंधा हुआ है कि होमियो पैथी का इलाज विश्वास अथवा कल्पना के ऊपर है उनको यह ख्याल करना गलत है। दवा का जो गुण है वह ठीक समय पर पहुंचने पर

जरूर अपना गुण करेंगी। जैसे गोदी का अज्ञान बालक और जो बिमार अपना बुरा भला नहीं जान सक्ता उस को होमियो पैथिक दवा से जरूर फायदा होता है। दूसरे गाय भैंस आदि बेजबान पशु जोकि बोल नहीं सके वहभी ठीक चिकित्सा करने से और होमियो पैथिक दवा देनेसे अच्छे होसके हैं और जो लोग होमियो पैथिक इलाज के ऊपर किञ्चित मात्र भी विश्वास नहीं रखते वहभी इस दवा से पूर्णरूप से आराम होजाते हैं परन्तु विश्वास होने से ही फायदा नहीं होता किन्तु दवा खाकर आराम होने से ही होमियो पैथिक पर विश्वास करने लगते हैं।

पथ्यका विचार होमियो पैथिक नहीं है।—जिन लोगों का ख्याल है कि होमियो पैथिक के पथ्य कड़े हैं इसी से आराम होता है। यह सर्वथा झूठ है। क्या पथ्य का विचार करने से हैजा, गठिया, पेचिस, खांसी, आदि आराम होता है कदापि नहीं। स्वस्थ का बिगड़ना ही रोग है और स्वस्थता ही स्वाभाविक अवस्था है। अपथ्य और अत्याचार करने से ही विषम रोग भोगना पड़ता है। इसलिये जितना बीमारी की हालत में मनुष्य अपनी स्वाभाविक अवस्था में रहेगा उतना ही जल्दी बीमारी से अच्छा होना सम्भव है। इसलिये बीमार को चाहिये कि देर से हज़म होने वाली चीज और सुगन्धित वस्तु मसलन् गुलाब आदि का व्यवहार न करे और चांदनी रात में वन विहार अथवा लेहसन कपूर, गरम मसाला इलायची आदि का खाना स्वभाव के विरुद्ध है।

सुस्थ शरीर में होमियो पैथिक औषध बहुत लोग उपहास अथवा हँसी करके यह कह देते हैं कि हम एक शीशी होमियो पैथिक दवा की खाजांय परन्तु हमारा कुछ नहीं होता किन्तु हमारा कहना इस के जवाब में यह है कि अगर कोई आदमी

स्वस्थ शरीर में तीन-छै-या दो सौ नम्बर की दवाई की एक शीशी खा जाय तो उन को उसी वक्त तेज लक्षण प्रकाश नहीं हो सका परन्तु यह जरूर ख्याल रहे कि कुछ न कुछ जरूर असर करेगी। पीड़ा के समय शरीर की उत्तेजना जरूर बढ़जाती है ऐसी हालत में थोड़ी मात्रा दवाई अपना असर जरूर दिखाती है और स्वस्थ शरीर में उत्तेजन शीलता गुण नहीं रहता है इसीलिये इतनी थोड़ी मात्रा औषध स्वस्थ शरीर के ऊपर अपना कोई असर नहीं दिखा सकी यह बात अच्छी तरह समझने के लिये दो चार उदाहरण नीचे लिखते हैं।

(१) मसलन् दिन के समय सूर्य का प्रकाश हम अच्छी तरह देख सके हैं। परन्तु जब कि आखों में पीड़ा हो अथवा दुखने आगई हों तो सूर्य के तेज को आंखे देख सकी हैं कदापि नहीं इसी तरह दवाई का फायदा भी वैसाही है अच्छी अवस्था में जो दवा सेवन कराने से कुछ फायदा नहीं दिखाई देता इसी तरह बीमारी की हालत में शरीर की उत्तेजन शीलता गुण बढ़जाने से वही दवाई बहुत जल्दी फायदा पहुंचातीहै।

(२) दूसरे बालू अथवा रेत के ऊपर या पत्थर के ऊपर बीज डालकर फलके लखने की इच्छा करना मूर्खता है इसी तरह स्वस्थ शरीर में थोड़ी मात्रा दवाई देकर फल मिलना असम्भव है परन्तु ख्याल करिये कि थोड़े से बीज को अच्छे खेत में डालने से फल मिलने की उम्मेद होती है। इसी तरह थोड़ी मात्रा दवाई से काम लेने के लिये उस दवाई का साफ २ लक्षण शरीर में मौजूद रहना उचित है।

(३) जैसे चुम्बक पत्थर की आकर्षण शक्ति लोहे के साथ है। वैसे ही रोग के साथ औषध की आकर्षण शक्ति है। कदापि आप चांदी के ऊपर चुम्बक पत्थर लगा कर यह कहना चाहें

कि इस में आकरषण शक्ति नहीं है यह सर्वथा मिथ्या है। वैसेही स्वस्थ शरीर में ऐकोनाइट नम्बर३० डायल्यूशन देकर यह कहो कि फल नहीं हुआ यह कहना भी अनुचित है। क्यों कि लोहे में चुम्बक लगादें तो फौरन खैंचलेगा परन्तु चांदी को नहीं इसी तरह तेज नाडी आदि लक्षण देखकर ऐकोनाइट देओ तो फौरन उसको फायदा दिखाई देगा।

होमियो पैथिक का सुभीता।—होमियो पैथिक मत के अनुसार इलाज कराने में सुभीता भी बहुत है। इस से थोड़े दिन में ही आरोग्य होता है। और कष्ट तथा खर्च कम पड़ता है। ऐमरीका आदि स्थानों में जितने होमियो पैथिक और ऐलो-पैथिक अस्पताल हैं। वहां सब चिकित्सा का हाल देखकर यही निश्चय कर चुके हैं कि होमियो पैथिक इलाज से बहुत थोड़े दिनों में आराम हो जाता है। और एक बार आराम होजाने से वह बीमारी दुबारा जोर नहीं करती है। अथवा बीमारी फिर लौट-कर नहीं आती है। इस मतके इलाज में दस्त कराना अथवा कै कराना या खून गिराना आदि दुर्बल करने वाले उपाय बिलकुल नहीं है। रोगी को कष्ट दूसरे इलाज में जियादा होता है। एक तो रोगी वैसे ही अपनी पीड़ा के कारण दुखी होता ही है दूसरे वह जायके और कड़वी दवा पीनी पड़ती है ऐसे कष्टों से बचने के लिये होमियो पैथिक इलाज बहुत अच्छा है दूसरा सुभीता इस में बड़ा भारी यह है कि चाहे बच्चा हो या बूढ़ा हो बदजायका न होने के कारण सुगमता से पी लेता है। ती-सरा धनी हो या कङ्गाल दवा सस्ती होनेके कारण सब कोई ख-रीद कर अपना इलाज सुगमता के साथ करा सके हैं। होमियो पैथिक इलाज से जो बीमार अच्छा होजाता है उसका आराम स्थिर और निश्चित है। नये और पुराने दोनों रोगों के लिये

होमियो पैथिक इलाज बहुत अच्छा है। हैजा के समान तथा और जल्द मार डालने वाला दूसरा और रोग नहीं है। ऐसी भयानक बीमारी का इलाज सिवाय होमियो पैथिक के और दूसरा नहीं है।

होमियो पैथिक भविष्य—सत्य की हमेशा जय होती है जिस का मूल सत्य है उस को जय लाभ जरूर होती है। इसी तरह होमियो पैथिक चिकित्सा बहुत से विघ्न और विपत्ति उठाकर अपने सत्य से स्थिर है। और इस का प्रचार देश देशान्तर में प्रतिदिन फैलता जाता है। पहले जो लोग होमियो पैथिक को अपना दुश्मन जानते थे वही लोग अब इस को मित्रता से देखने लगे हैं। और इस होमियो पैथिक की प्रशंसा करने लगे हैं। होमियो पैथिक ने जैसी प्रशंसा इन थोड़े दिनों में प्राप्त की है इसी से उम्मेद की जाती है कि थोड़े दिनों में यह होमियो पैथिक अच्छी चिकित्सा की प्रणाली कह लाने लगेगी और स्थिर होगी।

स्वास्थ सम्बधीय नियमावली——बीमारी होने पर दवाई देकर निवारण के अपेक्षा बीमारी न हो ऐसा उपाय करना उचित है। पाप, अत्याचार करने और शारीरिक नियम पालन न करने स एवं नियम विधि न जानने से रोग का विप-रीत फल भोगना पड़ता है। सर्व साधारण को स्वास्थ्य रक्षा के नियम जानना और उन के अनुसार चलना उचित है। स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन करने से अक्सर रोग के भयानक कष्ट से बचजाते है, शरीर बलवान् होता है और अकाल मृत्यु भी कम होसकती है। इसी लिये स्वास्थ रक्षा के प्रधान नियम नीचे लिखते हैं।

हमारे देश में विलायती सभ्यता के साथ साथ रोगों की संख्या भी बढ़ रही है। मनुष्य की पहली और स्वाभाविक

अवस्थाओं में रोगों की दशा ऐसे विस्तार को नहीं पहुंची थी। हम लोग जितनेही सभ्यता के अभिमान में फूले फिरते हैं। उसी हिसाब से कठिन कठिन रोग आकर हमारे समाज में घुस कर हमारी सुख स्वच्छंदता को छीनते एवं उस के बदले में दुःखशोक और विषाद फैलाते हैं। हमारा जीवन ज्योंर सभ्यता की उन्नति के साथ क्रमश स्वाभाविक से अस्वाभाविक दशा में आता जाता है। त्योंही हमें भी वैसेही बनावटी उपायों का अवलम्बन करके शरीर की सुख स्वच्छंदता बनाये रखना चाहिये हम आज कल इनबनावटी उपायों के अवलंबनमें भी अभवा और आलस्य कर रहे हैं इसी से हमारे देश में स्वास्थ शरीर मनुष्य नहीं है ऐसा कहना भी अत्युक्ति नहीं है।

हम लोग बहुत से कार्य ऐसे ले बैठते हैं जिन में शरीर का चलाना बंद कर के केवल मस्तिष्कही चलाना पड़ता है। परन्तु यदि शरीर को स्वस्थ रखना हो तो हमें बनावटी कसरत करनी चाहिये। किन्तु कर्तव्य कर्म समझ कर भी हमारे देश में ऐसे कितने मनुष्य हैं जो नियमित रूप से कसरत करते हों!

आहार या खाना।

आहार छोड़ कर जिन्दगी नहीं रहसकी जब लड़का पैदा होता है तो धरती पर गिरने के साथही माका दूध पीने लगता है। आहिस्ते आहिस्ते जब उसकी उमर बढ़ती है तो शरीर की पुष्टता के लिये बहुत तरह की चीजें खाकर सम्हलता है और पूरी उमर को पहुंचता है। और अन्त में खाने की ताकत घटजाती है उस वक्त जिन्दगी का चिराग बुझ जाता है। खाने की चीज जब पेट के भीतर जाती है तो उस के पचाव करने को दो तरह की तरकीबें करनी उचित हैं। पहिला तो पकाना दूसरा बचाना। खाने का उद्देश्य यह हैकि भोजन कीहुई चीज पचकर खून के साथ एक होकर शरीर के रोजाना खर्च को पूरा करे। जोखाना नहीं पचता है उसमे शरीर के खर्च की पूर्णता अच्छी

तरह नहीं होसकी और खाना शरीर से अलग रह कर कोई तरह की बिमारी को पैदा कर देता है। इससे भोजन की चीजें अच्छी तरह और होशयारी के साथ बनाई जायें इस का ध्यान रखना चाहिये ज्यादा अन्दाज से, घी, लहसन, प्याज, गरममसाला मिले हुये भोजन से पतले दस्त आने की बीमारी होजाती है और पचने की ताकत कमती होती है। खाने की चीजें बहुत हौले हौले चबा कर खाना चाहिये खाने की चीजें अच्छी तरह चबाई न जावें तो वह मुंह की लारके साथ अच्छी तरह पर मिल नहीं सकी इस लिये पचने में रुकावट करेगी आज कल प्राय जो अम्ल रोग होता है उस का कारण जल्दी भोजन करनाही है।

हम लोगों के खाने की असल चीज रोटी तथा चावल है इस लिये गेहूं व चावल खूब साफ अच्छा होना चाहिये दोनो वक्त चावल खाने के बदले एक वक्त रोटी खाना बुरा नहीं खास कर मैलेरिया फैली हुई जगह में बहुतों की राय है कि चावल की जगह रोटी खाना अच्छा है। भात से रोटी ज्यादा पुष्ट है बनिस्बत मैदा के आटे की रोटी अच्छी क्योंकि आटेमें चोकर अथवा भुसी मिले रहने से कोष्ठ को साफ रखती है रोगी को देरी देर से पचने वाली रोटी का आहार देना उचित नहीं।

दाल तरकारी सब्जी वगैरह भी हम लोगों के खाने की चीज है। बिमार को अरह की दाल नहीं देनी चाहिये मूग मसूर मूंट मटर की दाल उम्दा है दाल हम लोगों के लिये खास पुष्ट करने वाली खाने की चीज है। क्योंकि मांस में जैसा एक प्रकार का अधाखार से निकला हुआ पदार्थ रहता है वही दाल में भी मौजूद है। पेट की बिमारी में दाल नहीं खाना चाहिये।

दोयम मांस उत्तम खाना है अलावह इसके मच्छी अच्छा पुष्टाई का खाना है मच्छी का सोरवा [रसा] खून को बढ़ाता

है परन्तु रोगी के लिये छोटे छोटे [फोई] और [मागूर] मच्छी का सोरवा देना चाहिये बहुत बड़ा छिलकादार अथवा चोटीदार और बड़ी झींगा मछली रोगी के वास्ते नहीं देना चाहिये क्योंकि यह बहुत देर में हजम होती है, । *

तरकारियों में बहुत सी पुष्ट और खाने के काबिल हैं इङ्गलैंड वगैर देशों में हैं जहा कि केवल मांसाहार चला हुआ है व भी खाली मास की जगह सब्जी तरकारी अधिक खाने के लिये खूब प्रचलित होरही है। आलू परवल कच्चा केला अरगी कटहरकी बीज गूवर आदि तरकारियों में अच्छी हैं कभी कभी कड़वी चीजें भी खाना अच्छा हैं। पत्तीके साग के किस्म की चीजें बहुत खाना अच्छा नहीं है परन्तु उसमें क्षार रहने के सबब से कभी कभी हम लोगों को साग खाना चाहिये। रोगी के लिये साग पथ्य नहीं। फलों में अनेक खाने लायक उपकारी हैं। जैसे आम नारियल कटहर केला फालसा जामुन पपीता नारंगी अनार खरबूजा बेल वगैर' नारियल सूख जाने पर देर से पचता है ज्यादा कटहर खाने वाले को पेट की बीमारी होती है।

दूध बहुत उत्तम खाने की चीज है। संसार में दूध छोड़कर दूसरी कोई ऐसी चीज नहीं है कि जिसे खाकर आदमी हमेशा जिन्दा रह सके। दूध में हम लोगों की जरूरत के लायक सब चीजें बहुत उमदा तरह से मिली हुई हैं गौ का दूध हम लोगों के देश में प्रचलित है दूध इतना उपकारी और जरूरी चीज

---

* सर्व साधारण से प्रार्थना है कि जो बात ऊपर मछली और मांस के बारे में लिखी गई है वह उच्चजाति के इस्तेमाल करने के वास्ते नहीं है क्योंकि किताब के पढ़ने वालों में से जिनके वास्ते यह किताब बनाई गई है बहुत ऐसे हैं जो इन चीजों का इस्तेमाल करते हैं।

है कि इस लिये हम लोगों के देश में गौ पूजी जाती है पेचिश अथवा खासी की बीमारियों में बकरी का दूध फायदे मन्द है बच्चों के हक में मा का दूध जैसा उपकार करता और जल्दी से पचने वाला है वैसी दूसरी चीज नहीं है। जब मा के स्तन में दूध नहीं रहता तब गधी का दूध या गाय का दूध पानी मिलाकर देते हैं अक्सर दूध के द्वारा से संक्रामक बीमारी बहुत जगहों में फैलती दिखाई दी है। दूध से बहुत तरह की और पुष्ट करने वाली चीजें तैयार हुआ करती हैं उनमें से मासन घी वगैर उम्दा चीज हैं।

हम लोगों के देश में आज कल मास खाना दिन प्रति दिन बढती पर है। इसमें शक नहीं कि मास एक उम्दा चीज है क्यों कि जल्द पचकर थोडी खुराक में ज्यादा ताकत पैदा करता है मास इतनी उम्दा खाने की चीज होने पर भी दो कारणों से उस से जहर का फल पैदा होता है। पहले जैसा तैसा मांस का खाबेना यह सब जानते हैं। कि बाज दफे जो मास बजारों में बिकता है वह ऐसा खराब होता है कि खाने काबिल नहीं होता इङ्गलेण्ड में इस तरह का मास खाने के सबब से जो कठिन बीमारियां देखने में आती हैं, हिन्दुओं के यहा मास खाने के बद कई तरह के कायदे जारी रहने के सबब से यह सब बुराइयां देखने में नहीं आतीं। दूसरा ना पचने वाला मास तैयार करता हैं। हम लोगों का ऐसा यकीन है, यकीन काहेको भूल कहना चाहिये, मांस तैयार कराने के साथ घी, मसाला, प्याज वगैर चीजें भी बेअंदाज मिला देते हैं खयाल करना चाहिय कि ऐसी ऐसी चीज जरूर बुराई पैदा करेंगी?

दो दफे असल भोजन और दो मरतबा * जलपान कर लेना

* बगालियों में थोडा सा खाने को खाकर ऊपर से पानी पीने को जलपान कहते हैं

हर एक मनुष्य को बेहतर होता है जल पान के साथ मीठी चीजें अधिक न खाना चाहिये, जल पान के समय फल फल और समय अनुसार पूरी, कचौरी, दालमोठ, चिड़वा, अथवा चिरवा, लावा अथवा खील वगैर भी उत्तम है। आहार के समय ऐसी जगह बैठे कि जहा कोई दूसरा गैर न होवे। दूसरे हर रोज ठीक समय पर भोजन करना उचित है भोजन के वक्त में गड़बड़ न करने से अक्सर चन्द बीमारियों के हाथ से छुटकारा हो सका है।

खाने के बाद दांत और मुह को अच्छी तरह से साफ करना चाहिये। खाई हुई चीजों में से कोई चीज अगर दांतों में रह जावे तो मुह महकने लगता है और दांतों को बरबाद कर देता है दांतों के लिये उचित ख्याल नहीं रखने से आज कल थोड़ी ही उम्र में दांत गिरते हुए देखने में आते हैं। दातुन करना सबों के लिये उचित और ठीक है। खास कर जिन के दांतों की जड़ ढीली पड़ गई हो और खून बहुत गिरे उनके लिये दातुन करना बहुत जरूरी है।

पानी अथवा जल—ज्यादा मिकदार में साफ पानी बि[ना] ज़िन्दगी नहीं रह सकी है साफ पानी बिना आज कल खा[स] कर हैजा वगैर भारी भारी फैलने वाली बीमारियों की ज्य[ादती] होती दिखाई देती है। उम्दा साफ तालाब इस देश में ना[ही] है ऐसा ही कहना ठीक है। गुजरे हुए जमाने के पोखर और त[ा]लाब कुछ तो सूख गये और कितने ही मैले होकर बीमारि[यों] की खान बन गये हैं मगर नदियों का पानी पीना चाहे [वह] सोना और सुगन्ध है। यदि बरसात में नदी ... होजाय तो थोड़ी ही कोशिश में यह साफ ... सका है। उत्तर पश्चिम देश में ...

में लाते हैं जिस तालाब में बराबर लोग नहाते और कपड़ा धोते हैं उस के पानी को पीने के काम में लाना उचित नहीं है पीने के पानी के लिये एक तालाब अलग छोड़ देना चाहिये जिस जगह साफ पीने को पानी ज्यादा न मिले वहां कूआं या दूसरे किस्म का पानी गरम करके बालू रेत और कोयले के जरिये से साफ कर लेना चाहिये । इस तरह के नियम और सावधानी से रहने वालों को मेलेरिया और हैजे के बीच में रहते भी रोग से बचते देखा गया है ।

हवा अथवा वायु—जिन्दगी के कायम रखने के लिये पानी की तरह जरूरी हुई साफ हवा का सेवन करना एक असल उपाय है साफ हवा बहुत आसानी से हम लोग थोड़ा सा परिश्रम कर बिना खर्च अच्छी तरह से पा सके हैं । जीव जन्तु अथवा पेड़ पत्ता सड़ जाने से तथा स्वास के जरिये अक्सर हवा खराब हुआ करती हैं और बहुतसी साफ हवा के साथ मिल कर खराब हवा अक्सर शुद्ध होती है क्या अमीर क्या गरीब सबों को हर रोज साफ हवा लेनी चाहिये । दरिद्र लोग बराबर बाहर मैदान में काम काज करते रहते हैं इस लिये उन लोगों को साफ हवा मिलने में मुश्किल नहीं होती है हमारे देश में एक घर में और एक ही बिछावने पर कई आदमी सो रहते हैं और घर के भीतर साफ हवा की आमदरफ्त के लिये दरवाजा या खिड़की नहीं रखते यह कायदा ठीक नहीं है । हर मनुष्य स्वास के साथ हर घन्टे चौदह १४ घन फीट हवा लिया करता है इस लिये इस बात पर ख्याल रख कर एक ही घर में कई आदमियों को सोने देना चाहिये सरदी के डरसे भी इस देश में बहुतों के घर के दरवाजे और खिड़कियां और छोटे मोखे तक को बन्द करके बेटे पोते वगैरः को लेकर सोते देखा गया है । ऐसे घरों की हवा

थोड़ी देर में श्वास की आमद रफ्त से जहरीली होजाती है ऐसी हालत में घरकी दीवारों में कम से कम दो खिड़की जरूर होनी चाहिये।

रहने का घर सूखा और साफ रखना चाहिये सोने का मकान तर और भीगा इसमे से वात और खासी वगैर की सख्त बिमारी पैदा होती है।

कसरत——कसरत से बदन जोरावर होताहै और रोग पास नहीं आने पाता और मन में फुरती होती है। जिन्दगी बढने के लिये कसरत बहुत जरूरी है। मिहनत बिना बदन के हिस्से सुस्त होजाते हैं और दौरान खून यानी चलना फिरना खून का कम होजाता है खासकर खून का आना जाना धीरे से होता है सुस्ती हकीकत में रोग की जड़ है इसी सबब से इस देश के अमीर उमरा या रईस अनेक रोगो के अस्पताल बन बैठे हैं। कसरत से बदन के पट्ठे मजबूत और बलवान होते हैं दौरान खून यानी खून का चलना फिरना और श्वास की आमदरफ्त बढकर देह की कुल खराबी पसीने की राह दूर होकर पाचन शक्ति को बढाकर भूख को बढाती है।

जिनसे जिस कदर मिहनत और कसरत होसके उसी तरह की कसरत करना उचित है। टहलना सब से बढी कसरत है क्योंकि सबों की तबियत के माफिक और सहज है। सब हालत और सब उम्र वाले आदमी वाजिब अन्दाज से टहल फिरकर बदन के माफिक कसरत कर सके हैं। इसके अलावह घोड़े की सवारी, दौड़ना, मुग्दर हिलाना, और कुस्ती वगैर भी उम्दा कसरत हैं।

गुस्सा और रोग की दशा में कसरत करना उचित नहीं है रोगियों को होशयारी से कसरत करना चाहिये बीमार आदमियों

के लिये तकलीफ देने वाला कोई भी मसलन टहलना, फिरना, और तेज हवा में आना सख्त बुरा है इस देश के आदमी जरासी उम्र बढ़ने से कसरत करने को शरम की बात समझते हैं पर यह बिलकुल भूल है क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ हम लोगों के शरीर की कलों की चाल जितनी मद होती हैं और बाहर की मिहनत देने वाले काम कम होने पर घर में काम करने से मन की चिन्ता बढ़ती है उतनी ही कसरत करके शरीर को तेज और मन को खुश रखना चाहिये।

पोशाक - तरह तरह की पोशाक पहनना सभ्यता के अनुकूल हैं सरदी और गरमी में आराम देना यही पोशाक का मतलब है, ऋतु बदलने के अनुसार होशयारी से कपड़ा बदलना अच्छा है इस देश में गरमी मुख्य है हम लोगों के देश में बराबर गरम कपड़े से ढके रहने की जरूरत नहीं है बराबर गरम कपड़ा जैसे फलालैन और मोजा वगैरह से बदन ढके रहने से बदन में शीत सहने की ताकत कम होजाती है इसी लिये बहुत मामूली सबब से भी सरदी, खासी और गले के दर्द वगैरह की बीमारी होजाती हैं।

जोरावर और मिहनती लोगों के बनिस्बत रोगी और दुबले, जवान आदमियों के बनिस्बत बूढ़े और लड़के लोगों की हिफाजत के लिये गरम कपड़े की जरूरत है फिर भी सरदी के डरसे ज्यादा होशयारी जरूर है या इस लिये बराबर फलालैन का इस्तेमाल और घर का दरवाजा भी बंद रखना बुरा है गरमी में सूती कपड़ा जाड़े में हस्ब हैसियत गरम कपड़ा व्यवहार करना उचित है।

इस देश की एक कुरीति का हाल लिखना पड़ा किसी किस्म का कपड़ा क्यों नहो बराबर उसको साफ रखना चाहिये सभ्यता

थोड़ा देर में श्वास की आमद रफत से जहरीली होजाती है ऐसी हालत में घरकी दीवारों में कम से कम दो खिड़की जरूर होनी चाहिये।

रहने का घर सूखा और साफ रखना चाहिये सोने का मकान तर और भीगा रखने से बात और खांसी वगैर की सख्त बिमारी पैदा होती है।

कसरत—कसरत से बदन जोरावर होता है और रोग पास नहीं आने पाता और मन में फुरती होती है। जिन्दगी बढ़ने के लिये कसरत बहुत जरूरी है। मिहनत बिना बदन के हिस्से सुस्त होजाते हैं और दौरान खून यानी चलना फिरना खून का कम होजाता है खासकर खून का आना जाना धीरे से होता है सुस्ती हकीकत में रोग की जड़ है इसी सबब से इस देश के अमीर उमरा या रईस अनेक रोगों के अस्पताल बन बैठे हैं। कसरत से बदन के पट्टे मजबूत और बलवान होते है दौरान खून यानी खून का चलना फिरना और श्वास की आमदरफ्त बढ़कर देह की कुल खराबी पसीने की राह दूर होकर पाचन शक्ति को बढ़ाकर भूख को बढ़ाती है।

जिससे जिस कदर मिहनत और कसरत होसके उसी तरह की कसरत करना उचित है। टहलना सब से बड़ी कसरत है क्योंकि सब की तबियत के माफिक और सहज है। सब हालत और सब उम्र वाले आदमी वाजिब अन्दाज से टहल फिरकर बदन के माफिक कसरत कर सके हैं। इसके अलावह घोड़े की सवारी, दौड़ना, मुग्दर हिलाना, और कुश्ती वगैर भी उम्दा कसरत हैं।

गुस्सा और रोग की दशा में कसरत करना उचित नहीं है रोगियों को होशयारी से कसरत करना चाहिये बीमार आदमियों

घ, स्नान के करने के बाद ठहर कर भोजन करना चाहिये। स्नान इस देश में खास कर हिन्दुओं के लिये रोजाना काम है पहले धर्म के नाम से बहुत से बदन के आराम के लिये बातें मानी जाती थी पर अफसोस की जगह है कि विद्या के लोप से आज कल धर्म का बन्धन ढीला हो पड़ा है और शरीर की नियमावली की आवश्यकता और उत्तमता आज तक साधारण लोग नहीं समझ सके हैं। बस इस वक्त स्नान, आहार, वस्त्र सम्बन्धीय शरीरिक नियम के नहीं मानने का बुरा फल देखा जाता है।

होमियो पैथिक दवाइयों के विषय में नियमावली।

——होमियो पैथिक की दवायें विश्वासी और रसायन जानने वाले दवा फरोश के पास से खरीदनी चाहिये। इन औषधों में अन पढ़े दवा बेचने वाले हम लोगों से छिपा कर तरह तरह के फरेब कर लिया करते हैं और एक दवा के बदले दूसरी दवा दे दिया करते हैं। इस फरेब के सबब से होमियो पैथिक दवा के फल में बहुत नुकसान होता है और चन्द एक चिकित्सकों की भी शिकायत होती है और रोगी प्राया जो बैठता है ऐसे धोखे बाजों से सब सावधान रहें।

होमियो पैथिक दवा खाने के लिये तीन तरह की होती है। पहले टिंचर या अर्क दूसरा ग्लोबिउल पील्यूल्स यानी छोटी बड़ी गोली और तीसरा ट्राईटूरेशन यानी चूर्ण।

(१) टिंचर या अर्क ! दरख्तों की जड़, पत्ते, छाल, और फल वगैर को (अलकोहल) शराब में भिगोकर के भिजावट का अर्क या मदर टिंचर तैयार होता है मदर टिंचर की १ बूंद लेकर उस में ६ बूंद अल्कोहल मिलाने से फस्ट डेसीमल, ड्राईल्यूशन (एक दश मलब) क्रम बनता है और ६६ बूंद अलकोहल

के बस होकर हम लोगों को जब घर से बाहर आना पडता है तो उस वक्त बदन ढाक कर बाहर निकलते हैं गरमी में पसीने से कपड़ा जो बदबू दार मैला हो जाता है वह किसी से छिपा नहीं है आम तरह से गरीबी हालत के सबब से कम स कम सातवें दिन धोबी को धोने के लिये देना असभव होता है बदबूदार कपडे बहुत दिनों तक पहने रहने से जो बदन में बीमारी पैदा हो जावे तो इस में आश्चर्य भी क्या है !

इस हालत में पहनने के कपडों को साफ पानी में खूब धोकर धूप में सुखा कर काम में लाना चाहिये। मैलेपन का विचार इस देश में दिन दिन तरक्की पर है।

स्नान।

स्नान यानी नहाने के फायदे।—स्नान करना उचित है यह बात यहां बालकों को सिखलाना न पडेगा नहाने से शरीर ठंढा स्वस्थ और साफ रहता है। चमडे के सुराख खुलजाते हैं बदन की बदबू रफे होती है और सरदी सहने की ताकत बढती है नदी, तलाब, वगैर बहुत जल में बदन डुबा कर नहाना अच्छा है। जिस तरह हर रोज भोजन करने का समय मुकर्रर रहता है। उसी तरह से नहाने के लिये भी वक्त बांध देना चाहिये। नहाने के पहले खा लेना उचित नहीं बुधवे और रोगी को ठंडे पानी से नहाना मने है। उन लोगों को पानी थोडा गरम करके नहाना चाहिये। निरोग बदन के लिये हर रोज ठीक समय पर ठंडे जल से स्नान करना चाहिये।

नहाने के वक्त पहले शिर पर पानी देना बहुत जरूरी है, बाजे लोग पहले कमर पर पानी देकर नहाते हैं सो बहुत बुरा है अगर बदन में पसीना होवे तो उस हालत में स्नान करना बुरा

चाहे तो दवाई अच्छी और असली होनी चाहिये। आज कल के दिनों में देखा गया है कि अकसर दवाई खानों में बुरी दवाई मिलती है यह काममें लाई जाती है परन्तु यह दवाई अच्छी नहीं होती जिन लोगों का काम इलाज करना नहीं है और दवाई बनाना नहीं जान ते उन से दवाई लेना मुनासिब नहीं है। होमियो पैथिक दवाई बनाने के लिये रसायन शास्त्र और चिकित्सा शास्त्र में ज्ञान धर्म भीति सज्जन होना चाहिये ऐसे आदमी से होमियो पैथिक को बन- वाना चाहिये होमियो पैथिक दवाई देख कर यह कोई नहीं कह सका कि यह दवा असली है या नकली है। इस लिये धूर्त और चालाक लोग एक दवाई के बदले में दूसरी दवाई देते हैं। अथवा एक डायल्यूशन के बदले में दूसरा डायल्यूशन देते हैं। ऐसे लोगों के यहा सब दवा मौजूद न रहने से ऐसा करते हैं। इस लिये सब को चाहिये कि बहुत होशियारी से और वि- श्वास के लायक दवा बेचने वाले से दवा खरीद करैं होमियो पैथिक इलाज की निन्दा का कारण खराब और असलीदवा न पहुंचने से ही आजकल होता है।

मात्रा——पहले तो कौन डायल्यूशन काम में लाना चाहिये इस बात को ठीक करलेना उचित है। यह करने के लिये बहुत अभिज्ञता और बहुदर्शिता की जरूरत है हर तरह की बीमारी में नीचे या बीच का डायल्यूशन जैसे १, २, ३, ६, और १२, और पुरानी बीमारी में ३०, और १०० या २०० से भी जियादा डायल्यू शन काम में आता है। पूरी उम्र के रोगी के लिये १ बूंद अर्क किसी डायल्यूशन का क्यों न हो १ तोला साफ पानी में मिलाकर एक दफे देना चाहिये - उम्र की कमी के हिसाब से एक बूंद को दो या चार हिस्से में कर देते हैं।

छोटी गोली ४ और बड़ी गोली १ या २ ट्रइटुरेशन या सफ्-

हल मिलाने से पहला सेंटसीमल डाईल्यूशन (पहला शततमिक) क्रम तैयार होता है। यह पहला दशमिक या शततमिक तरीके का १ बूंद लेकर उस में ९ बूंद या ९९ बूंद अलकोहल मिलाने से दूसरा दशमिक या शततमिक क्रम तैयार होता है। इसी तरह से तीसरा चौथा १००, २००, आदि बहुत से क्रम बनते हैं। अर्क साफ बरतन में या साफ पानी में मिला कर बीमार को पीने को देते हैं।

(२) ग्लोव्युल यानी छोटी गोली और पील्यूल यानी बड़ी गोली। ग्लोव्यूल देखने में सरसों की बराबर और पिल्यूल मटर की बराबर होते हैं दुग्ध शर्करा या साफ चीजों के जरिये से सब गोलियां पहले बनती हैं बाद जो दवा देनी जरूर हो उस के अर्क में अच्छी तरह से भिगो लेते हैं घर के इलाज करने अथवा जहां साफ पानी नहीं मिल सका वहां इन गोलियों से बड़ा काम निकलता है सफर घूमने के वक्त गोली साथ रखने और इस्तेमाल करने से खूब सुभीता होता है अच्छी तरह से अगर गोली रक्खी जावें तो बहुत दिनो तक रह सक्ती हैं।

ट्राईट्युरेशन या चूर्ण।—चूर्ण जो दवा बहुत कड़ी और अल्द अलकोहल में घुल नहीं सक्ती जैसे सोना, लोहा, तांबा बगैरः धातु और दूसरी चीजें दुग्ध शर्करा यक (अथवा दूध से निकाली हुई शक्कर) के साथ चूर्ण करके अच्छी तरह से मिला लेते हैं यह ट्राईट्यूरेशन तैय्यार करने में बहुत मिहनत और होशियारी चाहिये।

अकृत्रिम औषध।—अगर दवाई से रोग आराम करना

मे से छोटा पत्थर का कटोरा या चमचे से रोगी को देना चाहिये। यह चमचा दूसरे पात्र में डुबाना न चाहिये। दवाई पीने के बाद यह चमचा धोकर रखना चाहिये होमियो पैथिक दवाइ व्यवहार करने के लिये साफ और सुथरा बर्तन होना चाहिये।

समय अगर दिन में दो दफे दवा पीने की जरूरत होवे तो एक सुबह और शाम के वक्त पीनी चाहिये पुरानी बीमारी में सुबह शामही दवा पीना बहुत है अगर दिन में ३ दफे दवा पीने की जरूरत हो तो भोजन के दो तीन घंटा बाद दवाई दी जा सकती है। हैजा आदि नये और जल्दी मारने वाले रोगों में रोग की हालत के अनुसार १ घंटा आध घंटे या १५ मिनिट पर भी दवाई दी जा सकती है।

होमियो पैथिक मत के अनुसार दो दवा एक साथ मिलाकर नहीं दी जाती जब एक दवा से सब लक्षण न दिखाई दे तो उस हालत में एक के बाद दूसरी दवा देनी चाहिये जहा तक हो सके एक ही दवा से काम लेना चाहिये। होमियो पैथिक दवायें बहुत साफ और गन्ध रहित और जहां धूप न लगे ऐसी जगह में रखते हैं। कपूर सब दवाइयों को बिगाड़ने वाला है इस लिये जिस घर में दवा रक्खी हो उस घर में कपूर न रखना चाहिये दवा खाने के समय साफ पानी और साफ शीशी, मिट्टी या पत्थर के बरतन में दवा तैय्यार करना चाहिये और उस वक्त में किसी तेज तरह का मसाला या गन्ध की चीज, खटाई, कपूर काम में न लायेंगे। दवा खाने के १ घन्टे बाद और १ घन्टा पहले कुछ खाना या तमाखू पीना मना है।

बाहर इस्तेमाल के करने के लिये ये मिला हुआ अर्क काम में आता है। यह अर्क अर्क मे से कभी ग्लोशल, कभी ग्लिमी मेंट कभी मदरम तैयार होता है। ६ हिस्सा साफ पानी जैतून-

फ १ ग्रेन से जियादा मिकदार (या मात्रा) में न खाना चाहिये लड़कों के लिये आधी और चौथाई खुराक देनी चाहिये।

मात्रा का पूर्ण प्रयोग - जरूरत के माफिक और बीमारी की हालत देखकर कभी हर १५ मिनट पर कभी दिन में २, या ३ दफे और कभी ७ वें दिन में एक दफे दवा देनी चाहिये हैजा वगैरह सख्त बीमारी में आधा घंटा या १५ मिनट पर दवा दी जाती है। पुरानी बीमारी में दवाई जितना कम दिया जाय उतना ही अच्छा है दवाई से फायदा दीख तो जैसे दस दफे दिया जाता था तो घटाकर होले होले कम करके बंद कर देना चाहिये।

औषधि पूर्ण बकस - हर एक गृहस्थ को चाहिये कि एक बकस दवाई से पूर्ण और उसके साथ १ किताब जरूर रखना चाहिये। और बकस के अन्दर सिवाय दवाई के और कोई चीज नहीं रखनी चाहिये। दवाई के बक्स को बन्द करके रखना चाहिये और दवाई को हमेशा धूप और रोशनी तेज खुशबू से बचाना चाहिये। जिस शीशी से दवाई ली जावे उसका काक फौरन बन्द करदेना चाहिये - अथवा एक शीशी की दवा या कार्क दूसरी शीशी में न लगाना चाहिये एसी हिफाजत न रखने से दवाका तेज गुण नष्ट हो जाता है।

दवाई व्यवहार करने के नियम —दवा की गोली जल में घोलकर भी खासके हैं अथवा जबान पर रखने से घुल जाती है। अर्क साफ पानी में मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिये दवाई की बूद किस तरह से गिराई जाती हैं उसका चित्र पहले पन्ना में दिया गया है। जिस पात्र या बरतन में दवा बनाई जावे वह साफ और खुशबू से रहित होना चाहिय। दवाई कांच या चीनी पत्थर या माटी के बरतन में बनानी चाहिये। दवाई बन जाने के बाद पत्थर या कागज से ढाक देना चाहिये उस पात्र

दवाई क्रम यानी डाइल्यूशन		
३५ पलसेटिला	६	
३६ पडो फाइलम	६	
३७ फस्फरस	३	
३८ बेलाडोना	३	
३९ ब्रायोनिया	६	३०
४० भेराट्रिम एलबम	६	३०
४१ भेराट्रिम भिरिडि	६	३०
४२ मार्क्यूरियसकर	६	
४३ मारफ्यूरियमसल्	६	
४४ मारफ्यूरिएस आयुड	६	
४५ मसफास	६	
४६ रमटक्स	३	
४७ लकेसिस	६	
४८ लाइको पोडियम	६	
४९ साइलेसिया	६	३
५० सलफर	६	३०
५१ सिपिया	६	
५२ सिना	३	२००
५३ सिकेलि	६	
५४ सिमिस फ्युगा	३	
५५ स्पाबाइना	३	
५६ स्पजिया	३	
५७ स्ट्रामोनियम	६	
५८ स्टाफिसेग्रिया	६	
५९ हेपारमल	६	
६० हामामिलिस	३	
६१ हाइड्रासटिस	६	
६२ हाईयोसायमस	६	

वहुत जरूरी २४ दवाई

दवाइयों के नाम

१ आर्सेनिक	६
२ आर्नीका	६
३ इपीका	३
४ एकोनाईट	६
५ केमोमीला	१२
६ काफिया	३
७ किल्केरीया कार्ब	६
८ कार्बोवेजिटेबिलिस	६
९ चाईना	६
१० जबसीमोनिम	३
११ ड्रासरा	६
१२ नक्समोमिका	६
१३ पलसेटिला	६
१४ फोसफरस	३
१५ बेलेडोना	३
१६ ब्रायोनिया	६
१७ भेराट्रम	६
१८ मरक्यूरियस सल	६
१९ रसटक्स	३
२० सलफर	६
२१ साइलिसिया	६
२२ स्पाजिया	३
२३ सिना	३
२५ हिपारसल्	३

(*Olveoil*) या गरी का तेल या मक्खन मे एक हिस्सा वे मिला अर्क मिलाने से जैसा हो वोशन वेनीमेन्ट या मरहम तैयार होता है ।

जो दवाई हमेशा काम में आती हैं उन का सुचीपत्र नीचे दिया जाता है । और उस में जो जो डायल्यूशन दिये गये हैं वह हमेशा इस्तेमाल किये जाते हैं। खास खास बीमारी में जो खास खास डायल्यूशन इस्तेमाल होते हैं उन के हाल उस बीमारी की जगह में लिखे जायंगे।

जो दवाई हर वक्त काम में आती हैं उनकी

सूची

दवाइ	नाम	डायल्यूशन	दवाइ	नाम	डायल्यूशन
१	औरम	६	१८	कालिवाई क्रोमि कम	६
२	आरसेनिक	६, ३०	१६	कोलचिकम	६
३	आर्निका	६	२०	कालौ हाइड्रो	६
४	आईरिस	६	२१	कोफिया	६
५	आरटिका	६	२२	कैल केरिया कार्ब	६
६	इपिका	३	२३	कारबो भेजिटेबिलिस	६ ३०
७	यूफ्रेसिया	३	२४	कलोसिंथ	६
८	इगनेसिया	३	२५	कौलिन् सौनिया	६
९	एकोनाइट	६	२६	कैंथारिस	३
१०	एन्टिमनियमटार्ट	६	२७	कयाम्थारिस	६
११	एन्टिमनियम क्रूड	६	२८	कोकुलस	३
१२	एसिड फस्फरिक	६	२९	चाईना	६
१३	एसिड नाईट्रिक	६	३०	अलसी मीनम	३
१४	एपिस	६	३१	डिजिटेलिस	३
१५	ओपियम	३, ६	३२	ड्रसेरा	३
१६	क्यामनिला	१२	३३	डलकामारा	६
१७	कालि बाइयट	३	३४	नक्स भोमिका	६, ३०

ने के समय से पहले सोवे और रात के ३ बजे तक अच्छी तरह सोकर ४ बजे तक जागता रहे और पश्चात् पांच बजे के फिर सोवे और फिर निद्रा की तृप्ति न हो या मन न भरे।

पलसेटिला—ज्यादा रात्रि जाने पर जियादा भोजन करना बदहज़मी के सबब से निद्रा का न आना किसी तरह निद्रा न आने और न सोने की इच्छा करे।

सहकारी उपाय—शाम के वक्त नहाना, या ठंडे पानी से बदन पोंछना, सोने की जगह में हवा की आमदरफ्त होने देना, जियादा रात में जियादा खाने से बचे रहना, सोने से चन्द घंटे पहलेही से मन स्थिर और शान्त रखना, सवेरे उठना, कड़ी चारपाई पर सोना उचित मेहनत और कसरत करना बहुत जरूरी है। जिन लोगों को रात में नींद नहीं आती उन लोगों को ऊंचे तकिये पर सोना नहीं चाहिये। अगर नींद न पड़े तो एक अच्छी बात पर खूब ध्यान देने से तुरत नींद आयेगी।

(२ अजनी यानी गुहेरी)

लक्षण। आखों के पलक की कोरपर पलक के बीच में फुन्सी की तरह होती है और दर्द तथा तकलीफ ज्यादा होती है पीव निकल जाने से आराम होजाता है।

इलाज। पलसेटिला श्रेष्ठ औषध है। अगर गुहेरी नीचे के पलक में होतो पलसेटिला ज्यादा फायदेमन्द है। गुहेरी होनेपर पलसेटिला शुरू हालत में देने से भोपचती है और न तकलीफ होती है बिना किसी तकलीफ के आराम हो जाता है अगर प्रदाह रहे तो पलसेटिला देने के पहले दो एक खुराक एकन-नाइट देना चाहिये।

स्टाफिसेग्रिया। अगर दोनों पलकों में गुहेरी हो अथवा ऊपर के पलक में हो और पके नहीं परन्तु सख्त हो जावे सर्माहारन

रमिनीका रिकरिट केम्फर अर्क कपूर

बाहर लगाने की दवाई

१ आरनीका
२ कैंथारिस
३ हेमामेलिस
४ केलेनड्युला
५ रसटक्स
६ लिडम

द्वितीयोऽध्याय.।

नम्बर १ अनिद्रा ।

अकसर यह किसी न किसी रोग का साथी है। बहुत दिनोंसे नींद न आती हो तो दिमाग दुबला होकर घातक फल पैदा करता है

चिकित्सा—बेलोडोना–सोने की अच्छी तरह इच्छा रहने पर भी न सोना, अथवा शाम के वक्त नींद मालूम होती हो और निद्रा न आती हो, मानसिक चिन्ता, बेचैनी, और झूठा डर देने वाला हृदय, अथवा बुरे स्वप्न के कारण निद्राका न आना।

कौफिया—मन में चिन्ता या उत्तेजना रहने पर या बहुत दिन तक रोगी की सेवा में रहने से और जागने से, साफ कारण न रहने पर बच्चों को निद्रा न आना।

जेलसिमिनम—छोटी नसों की उत्तेजना से नींद का न आना।

इगनेशिया—कौफिया के बाद कभी कभी व्यवहार होता है उत्तेजना के बाद अवसाद होने पर अथवा नींद की हालत में बेचैनी रहने पर रज, और फिकर और दुखी होने के कारण से नींद का न आना।

नक्सवोमिका—बहुत ध्यान से चिन्ता करना अथवा रात्रि जाग कर पाठ करना या बदहजमी में ताकत कम होनेपर रात्रिको सो·

जी मिचलाना, कड़वा, खट्टा, या बदबू लिये हुये डकार का आना, छाती जलना, जिह्वा में मैलापन, मुँह का स्वाद बिगड़ जाना, शिर में दर्द होना, पेट फूलना, भोजन में अरुचि होना, भोजन करने के बाद तकलीफ होना, कभी कब्जियत, कभी जियादा दस्त होना।

कारण—अपरिमित भोजन यानी ज्यादा भोजन करना अथवा भारी चीज खाना, शराब पीना, बे चबाये हुये और जल्दी जल्दी खाना, मन और शरीर की ज्यादा मेहनत, कसरत बन्द कर देना, रात का जागना, सरदी का लगना अपने परिवार और गृहस्थ काम की बहुत चिन्ता करना आदि, कारण से यह रोग पैदा होता है। इस बीमारी के इलाज के वक्त ऊपर लिखी सब बातों पर ध्यान रख कर इलाज करना होता है। रोग का सबब बिना दूर किये हुये हजार तरह की दवा देने से भी कोई फायदा दिखाई नहीं दे सकता।

इलाज—शुरू हालत में नक्सवोमिका पलसेटिला [भारी चीज या घी, और तेल की बनी हुई चीज खाने से] आइरिस [कै, शिर में और पेट में दर्द] आरसेनिक कार्बोसिम्य [फल, खट्टा चीज खाने से] हाइड्रासटिस [पाचन शक्ति कम होजाना] पुरानी हालत में नक्स वोमिका, पलसेटिला, हीपरसलफर, ऐन्टीमोनियम क्रूडम, कार्बो वेजिटेबिलिस, कैलकेरिया, सलफर, मरक्यूरियस।

बच्चों के लिये—कलकेरिया, इपिका, मरक्यूरियस नक्सवोमिका, पलसेटिला। बुड्ढों के लिये—कार्बोवेज, नक्स-मसचेटा, वैरेटा। लाइकोपोडियम गर्भवती स्त्री के वास्ते। आर-सिनिक, फैरम, इपीका, एन्टिमक्रुड, क्रियाजोट, फास फरस

ग स्टाफिसेग्रिया बहुत फायदे मद है और सलफर देने से भी बार बार गुहेरी का होना बद होजाता है।

ग्राफाइटिस। बार बार गुहेरी होना, और पलक के किनारे म घाव होना।

सेवन विधि—शुरू हालत में एक एक बूंद सवा तोले पानी मे तीन तीन घंटा बाद एक एक खुराक देना चाहिये पुरानी बीमारी होने से सुबह शाम दिन में दो खुराक देना चाहिये।

सहकारी उपाय—गर्म पानी से सेकना और थोड़ा बड़ा होने पर पुलटिस बांधते हैं। अगर पक कर अपने आप फूट न जावे तो सुई से थोड़ा सा छेदकर पीब निकाल देना चाहिये। आंख को बांध देना चाहिये जिस से काम से बचे और आराम पावे और रोशनी से बचे।

३ बदहजमी।

जीवन अग्नि की शिखा तुल्य है। जैसे बिना लकड़ी के आग नहीं जलती उसी तरह बिना भोजन के जीवन की अग्नि बुझ जाती है। जैसे आग से ताप निकलती है उसी प्रकार देह से भी ताप निकलती है। ताप जो खाने से निकलती है वह केवल देह की रक्षा के लिये है। देह में जो ताप रहता है और देह परिश्रम करने से क्षय होजाती है उस को पूर्ण करने के लिये भोजन का प्रयोजन है। जो स्वाभाविक क्रिया से हम लोगों के खाने की चीज लोहू में परिणत होकर शरीर को वह पुष्ट करती है वह परिपाक क्रिया के बिगड़ने से जो बीमारी पैदा होती है उस बीमारी का नाम बदहजमी है।

लक्षण——अवस्था के अनुसार हाल बदलने से बदहजमी के कई प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं। उन में से नीचे लिखे लक्षण अकसर देखे जाते हैं—भूख का कम होजाना, पेटफूलना,

ज बिगड़ा जावे खाने पर सेने में दर्द सब चीज कड़वी मालुम पड़-ती हो, दर्द शिर में बहुत हो कब्ज, पाखाना सूखा और सख्त हो।

लाईकोपोडीयम्—। कमजोर बीमार को बद हजमी और देरी से हजम होगा, खाने के बाद नींद की ऐंडाई आना पेट फूलना, दस्त साफ न होना। पेट फूलने और कब्जरहने से लाइकोपोडियम और पेट फूलना और पेट की बीमारी, में कार्बो भेजिटेबिलिस उपकारी है।

आरसिनिक —फल और खट्टी चीज खानेसे बदहजमी होना, खाने के बाद जी मिचलाना, या कै होना, पेट में जलन मालुम होना ज्यादा पानी पीने की इच्छा होना बार बार में थोड़ा थोड़ा पानी पीना बेचैनी, पेट में भारीपन यानी पत्थर के सम तुल्य भारीपना मालुम देना

कपालेकेरिया कार्ब—कमर में धोती या पाजामा कड़ा बांध कर नहीं रख सके हैं मुह का खट्टा स्वाद रहना और खटाई सी कैफा होना, शिर में दर्द, दस्त का ज्यादा होना, थोड़ी मेहनत से थकन मालुम देना।

खासी और कमजोरी।

सलफर- यह दवाई पुरानी हालत में विशेष कर बवासीर रहने से नक्स भोमिका के साथ बदल बदलकर काम में लाई जाती है। और दवाई देने के समय में यह सलफर कभी कभी एक एक खुराक देने से ज्यादा फायदा करती है।

सेवन विधि - दिन में दो दफे,।

सहकारी उपाय- इस बीमारी में नीचे लिखे हुये नियम के ऊपर निगाह रखकर दवाई इस्तैमाल करना चाहिये।

पलसेटिला ॥ मन की हालत के कारण से नक्सवोमिका [कामकी फिक] इगनेसिया, [रजके सबब] वेकोनाइट, चायना, अथवा, नक्सवामिका [रात के जागने का सबब] शरीर क्षयकारि नि स्त्राव, जैसे पेट की बीमारी खून का आना, पीब आदि के आने से बदन की ताकत जाती रहना चायना, एसिड फस्फरिक, फौसफरस, कारबोभेजी, कैलकेरिया । ठंढा लगने से-वेकोनाइट, आरसिनिक, मरक्यूरियस, पलसेटिला । नियम विरुद्ध भोजन करने से-एन्टिमक्रुड, नक्स, इपिका, पलसेटिला ।

शराब पीने से—कारबोभेजिटेबिलिस लकेसिस, नक्स सलफर, चाइपरोगेने-फेरम, अथवा शूआ । तमाखू पीनेसे कोकूलस इपिका,नक्स,पलसेटिला,भूखकी,भूख कम लगनेसे कलकेरिया,चार्‍ ना,ज्यादा और बे वक्त भूंख लगना चाहना, सीना । जी मिचलाना, इपिका एन्टिम, क्रुडकी, नक्समोमिका, जलसीमीमिम आरसिनिक, मुहँ में पानीआना, आइमोनिया, लाइकोपोडियम, नक्समोमिका, सुबह के वक्त मुह में खट्टा या कड़वा स्वाद, पेट में दर्द और भारीपन, मुंह से पानी आना खास कर शराबियों को, दस्त कड़ा दस्त आने की हाजत बराबर बनी रहे और पाखाना साफ न होवे । जो शराब पीते हैं, अपरिमित भोजन करते हैं और ज्यादा बैठे बैठे काम करते हैं उनके लिये खासकर फायदा देती है ।

पलसाटिला—चरबी और तेल की चीज खाने से बद्‌हजमी, जीभ सफेद, या पीला रंग मैली, सुबह के वक्त जबान का जायका बिगड़ा हुआ खाने पर डकार और मुह से पानी आना पेट में दर्द । रात्रिमें पतला दस्त आना मुलायम मिजाजकी औरतों को यह दवा उम्दा है ।

ब्राइओनीया । बहुत श्रम करने के बाद ठंढा पानी पीने से खाने की रुचि न होवे—यहां तक जिस के गन्ध से मिजा-

७ - भरपेट खालेने पर मनुष्य को सख्त परिश्रम नहीं करना चाहिये अथवा बहुत मिहनत कर आने पर जब तक ठंढा न होवे तब तक भोजन करना उचित नहीं है । अकसर देखा जाता है कि आज कल दो चार ग्रास खाने को खाकर स्कूल या कचहरी को चल खड़े होते हैं यह अजीर्ण होजाने का कारण समझना चाहिये हर रोज सुबह उठना, ठंडे पानी से नहाना, मुकर्रर मिहनत करना, और कसरत, खुशी और आराम शरीर की तन्दुरुस्ती के लिये लाजिम है ।

अर्श (बवासीर)

मलद्वार की नसें फूलजाती हैं और सख्त होकर मस्सा पैदा होजाता है । मलद्वार में जो मस्सा भीतर होता है उस को भीतर और बाहर मस्सा होता है उस को बाहर मस्सा कहा जाता है । इन मस्सों से कभी तो खून आने लगता है और कभी नहीं आता है । कभी कभी १ मस्सा होता है और कभी कभी बहुत मस्से होकर गुच्छा सा होजाता है । इन मस्सों में कभी खुजली और कभी चपका कभी जलन और कभी सुई सी चुभना और बहुत प्रकार की तकलीफ मालुम होती है । दस्त के साथ अथवा अपने आप खून बूंद बूंद कर के गिरने लगता है । और कभी कभी बहुत खून गिरने लगता है ।

चिकित्सा—नक्समोमिका, और सलफर, साधारण बवासीर में और कब्जियत के समय से सलफर इस्क्यूलस, नक्समोमिका, कौलिनसोनियां, हार्मेमेलिस, । गर्भ अवस्था में की बवासीर में पेंढोज, कौलिनसोनियां नक्समोमिका । खूनी बवासीर में हेमेमिलिस, सलफर [कालेपन के खून की हालत में] इस्क्यूलस, एकोनाइट, पलोज, [ज्यादा खून गिरने की हालत में]

प्रथम - अच्छी तरह चबाकर धीरे धीरे भोजन करना चाहिये खाने की चीज लारके साथ खूब मिल जावे और वे मिला हुआ दांत के द्वारा खूब पिसा नहीं जावे तो सहज में पच नहीं सका। जिस तरहसे जल्दी में कोई काम सुधरता नहीं उसी तरह में खान में भी जल्दी करने से पचने में भी देर लगती है और वह कारण बदहजमी का होता है।

२ - खाने का समय और परिमाण ठीक रखना चाहिये। हर रोज ठीक वक्त पर भूख लगने पर जैसा मुनासिब हो भोजन करना चाहिये।

३- भरपेट खालेना उचित नहीं है। इससे पाकाशय यानी मेदे के रस निकालने में और खाई हुई चीज के साथ मिलने से नुकसान होता है।

४ - जल्द हजम होने वाली और ताकत लाने वाली चीज भोजन करना चाहिये इस विषय में खास नियम बांध देना असम्भव है। जिनको जो चीज फायदा करती हो वही खाना चाहिये अथवा जो नुकसान करती हो वह न खाना चाहिये।

५ - पीने की चीजों में ठण्डा पानी सब से उत्तम है। शराब आदि नशे की चीजें एक दम मना है। इसमें सिवाय नुकसान के फायदा कभी नहीं है। भोजन के समय ज्यादा पानी पीना खराब है ज्यादा पानी पीने से पाक यन्त्र की ताप कम होजाती है। और पाक यन्त्र से जो रस निकलता है वह रस पानी के साथ मिलकर ज्यादा पतला होता है इससे पचने की ताकत घटजाती है। हम लोगों की प्रकृति में इस लिये ज्यादा बरफ खाना अच्छा नहीं।

६ - खाने के वक्त मनकी अवस्था के ऊपर पूरे तौर से परिपाक क्रिया निर्भर रहती है। इस लिये दुःख, गमगीनी, क्रोध, और रंजीदा होकर भोजन करना उचित नहीं है खुश दिल होकर परिवारके लोग थाली में बैठ कर मजे मजे की बातें और हंसी दिल्लगी करते हुये भोजन करना उचित है।

७- भरपेट खालेने पर मनुष्य को सख्त परिश्रम नहीं करना चाहिये अथवा बहुत मिहनत कर आने पर जब तक ठंडा न होले तब तक भोजन करना उचित नहीं है। अकसर देखा जाता है कि आज कल दो चार ग्रास खाने को खाकर स्कूल या कचहरी को चल खड़े होते हैं यह अजीर्ण होजाने का कारण समझना चाहिये हर रोज सुबह उठना, ठंढे पानी से नहाना, मुकर्रर मिहनत करना, और कसरत, खुशी और आराम शरीर की तन्दुरुस्ती के लिये लाजिम है।

अर्श (बवासीर)

मलद्वार की नसें फूलजाती हैं और सख्त होकर मस्सा पैदा होजाता है। मलद्वार में जो मस्सा भीतर होता है उस को भीतर और बाहर मस्सा होता है उस को बाहर मस्सा कहा जाता है। इन मस्सों से कभी तो खून आने लगता है और कभी नहीं आता है। कभी कभी १ मस्सा होता है और कभी कभी बहुत मस्से होकर गुच्छा सा होजाता है। इन मस्सों में कभी खुजली और कभी चपका कभी जलन और कभी सुई सी चुभना और बहुत प्रकार की तकलीफ मालुम होती है। दस्त के साथ अथवा अपने आप खून बूंद बूंद कर के गिरने लगता है। और कभी कभी बहुत खून गिरने लगता है।

चिकित्सा—नक्समोमिका, और सलफर, साधारण बवासीर में और कयाजियत के सबब से सलफर इस्क्यूलस, नक्सभोमिका, कौलिनसोनियां, हार्डेसटिन, । गर्भ अवस्था में की बवासीर में पेओज, कोलिनसोनियां नक्सभोमिका। खूनी बवासीर में हेमेमिलिस, सलफर, [फाकेपन के खून की हालत में] इस्क्यूलस, एकोनाइट, पसोज, [ज्यादा खून गिरने की हालत में]

धाहना [ज्यादा खून गिरने के बाद] बिना खून की बवासीर में। नक्सभोमिका, और सलफर, पारी, पारी से देना चाहिये। बहुत दर्द में, एकोनाइट, जलन और खुजलाहट में-कैपसिकम, आरसिनिक। जिस बवासीर में रस गिरता है और खून नहीं गिरता उस में मारक्यूरियस, पेसक्यूलस, पलसाटिला, मस्सा पकने से मारक्यूरीयस देते हैं।

एकोनाइट—बहुत दर्द और प्रदाह लाल रंग का खून गिरने में या मस्से के थोड़े थोड़े दर्द में भी उपकार करता है।

आरसिनिक—बहुत जलन और कमजोरी शराब पीने से जो बवासीर पैदा होती है।

कोलिनसोनियां—पुरानी बवासीर उस के साथ बहुत कबजियत। अधिक रात्रि में बढ़ जाना और सुबह को कम हो जाना।

हमामिलिस—दर्द और खून गिरना, बहुत खून गिरने से उपकारी है। थोड़े खून गिरने से बहुत कमजोरी।

हाइड्रासटिस—जिस वक्त कबजियत कि मुख्य शिकयत होती है।

नक्सभोमिका—जो लोग हमेशा बैठे रहते हैं। और हमेशा ताकत की चीज खाते हैं उनके लिये उपकारी है खासकर शराबीयों को, कबजियत परंतु बार बार दस्त की हाजत होना और कांच का बाहर निकल आना।

सलफर- पुरानी बवासीर में यह दवाई बहुत उपकारी है विशेषकर कबजियत रहने से।

नक्सभोमिका और सलफर। बवासीर के वास्ते अकसीर दवाई है। १ बूंद सलफर सुबह के वक्त और १ बूंद नक्स वोमिका रात्री में सोने के वक्त इसी तरह १ हफ्ता तक फिर चार पांच दिन बन्द करके फिर शुरू करना चाहिये।

सहकारीउपाय। गोस्त और गरम मसाला लाल मिर्च आदि गर्मचीज खाना निषेध है प्रतिदिन ठंढा पानी व्यवहारकरना नियमित परिश्रम भारी चीज का भोजन त्याग करना चाहिये जिससे मेदासाफ रहे ऐसा खाना खाना चाहिये ऐसे बवासीर वाले को फलफूल भोजन करना चाहिये हर रोज रात्रि में सोने के पहले बवासीर वाले को पाखाने हो आना जरूरी है। स्नान और भोजन का समय ठीक रखना उचित है।

अत्यन्त रजः स्राव यानी औरतों को ज्यादा खून आना

लक्षण— कोई कोई समय संघातिक हो जाया करता है ऋतु समयमें और उसके अलावा जरायु से खून गिरता है। ज्यादा हाथ पैर ठंढे और सफेद चेहरा आंख बैठजाना कान से कम सुनाई देना, और नजर कम हो जाती है और शरीर में मूर्छा आजाती है।

इलाज - ज्यादा ताकतवर स्त्रियों के खून गिरने से बेलाडोना, फेरम, प्लाटीना, सबाइना। कमजोर स्त्रियों के खून गिरने में चाईना, सीकेली। गर्भ अवस्था में, बच्चा पैदा होने के बाद अथवा गर्भ गिरजाने के बाद खून गिरने में बेलाडोना कैमोमिला फेरम प्लाटिना, सबाइना, इपीकाक, अधीर उम्र में माहवारी बन्द होने के वक्त में खून गिरना पल्सटिला

पाहना [ज्यादा खून गिरने के बाद] बिना खून की बवासीर में। नक्सवोमिका, और सलफर, वारी, वारी से देना चाहिये। बहुत दर्द में, एकोनाइट, जलन और खुजलाहट में-कैपसिकम, आर-सिनिक। जिस बवासीर म रस गिरता है और खून नहीं गिरता उस में मारक्यूरियस, ऐसक्यूलस, पलसाटिला, मस्सा पकने से मारक्यूरीयस देते हैं।

एकोनाइट—बहुत दर्द और प्रवाह लाल रंग का खून गिरने में या मस्से के थोड़े थोड़े दर्द में भी उपकार करता है।

आरसिनिक—बहुत जलन और कमजोरी शराब पीने से जो बवासीर पैदा होती है।

कोलिनसौनियां—पुरानी बवासीर उस के साथ बहुत कबजियत। अधिक रात्रि में बढ़ आना और सुबह को कम हो जाना।

हमामिलिस—दर्द और खून गिरना, बहुत खून गिरने से उपकारी है। थोड़े खून गिरने से बहुत कमजोरी।

हाइड्रासटिस—जिस वक्त कबजियत कि मुख्य शिकायत होती है।

नक्सभोमिका—जो लोग हमेशा बैठे रहते हैं। और हमेशा ताकत की चीज खाते हैं उनके लिये उपकारी है खासकर शराबी-यों को, कबजियत परंतु बार बार दस्त की हाजत होना और कांच का बाहर निकल आना।

सलफर- पुरानी बवासीर में यह दवाई बहुत उपकारी है विशेषकर कबजियत रहने से।

जरायु—(अधोद्वारी जिस में गर्भ के समय रहता है) जरायु की कमजोरी होने से खून का गिरना।

आरनिका । खून उजला, लाल पानी, अथवा जमा हुआ ज्यादा मिहनत, गिरजाना, अथवा चोट लगकर बीमारी होने से यह दवाई बहुत उपकारी है।

सहकारी उपाय । सर्व प्रकार मन की चिन्ता और उद्वेग मेहनत, घूमना एकदम मना है। खून आना बंदकरने के लिये पीठ के नीचे तकिया देकर पैर को ऊंचा और सिर को नीचा करके चित लेटना चाहिये रोगी को चुप चाप लेटा रहना चाहिये हिलना भुलना बुराई पैदा करता है। ज्यादा खून आने से ठंढा पानी पीना सर्व शरीर ठंढा रखना, पैर पीठ पर और पेडू पर ठंढाजल प्रयोग करने से विशेष उपकार होता है गरम गरम कोई चीज नहीं खाना चाहिये जिन स्त्रियों के ज्यादा खून गिरता हो उन को थोड़े दिन के लिये स्वामी सहवास का परित्याग करना उचित है। बहुतेरी स्त्रियों को रज स्राव होने के वक्त स्वामी के स्पर्श करने से यह बीमारी पैदा होती है।

अथवा उंगलियों का पकजाना।

लक्षण।—यह बीमारी तकलीफ देनेवाली है उंगलीयों के आगे की तरफ प्रदाह होकर पक जाता है। गरमी, बहुत दर्द, लपक का होना साधारण इसका लक्षण है। उंगली से लेकर हाथ तक में दर्द होजाता है। कभी कभी बीमारी के स्थान से पक कर हड्डी तक पहुंच आती है।

चिकित्सा । चोटलग आने से लेटम, पीब पैदा होने के

छोकेसिस ग्रैडीना **कैल्केरियाकार्ब मुकर्रर** वक्त से पहले ज्यादा मिकदार में खून आना और ज्यादा दिनतक खून आना जारीरहे । खून आने के पहले छाती फूलजावे और छाती, शिर, पेट में दर्द होना,

वेलेडोना । उजला और मुह का लाल रंग होना नाड़ी पूर्ण और जल्द खून में बदबू बच्चा होने के बाद खून गिरना ।

कैमोमिला । काला और जमा हुआ खून बीच बीच में उजला और लाल रंग का पतला गिरना, लाल कभी रहे और कभी न रहे ठंढी हवा लेने की इच्छा होती हो ।

नक्सभोमिका । काला और छिछडेदार खून, खून का आना पहले बन्द हो आवे बाद फिरजारी हो जावे खून आने के ठीक पहले पेट में बाई ठेका सा दर्द वमन की इच्छा शिर में दर्द कब्ज जल्द जल्द पाखाने जाने की इच्छा । सवाईना खून ज्यादा आना आने के पहले बच्चा होने केसमान दर्द बाद थोड़ा सा चलने फिरने में खून का आना ।

सिकेली । दुर्बल और रक्त हीन स्त्रियों के लिये यह दवाई अच्छी है खून काले रंग का और पतला बुढापे में ऋतु बन्द होजाने के समय ज्यादा खून आनेमें यह दवाई इपिकाक के साथ बारी से दी जाती है ।

चायना । खून की कमी, काले रंग का खून जमा हुआ रह रह कर आना ज्यादा खून गिरने से कमजोरी, कान से कम सुना, मूर्छा का आना हाथ पाव ठंढे हो आना मुह और हाथ नीले हो आना, ज्यादा खून गिरने से, सिकेली के साथ, बारी से दिया जाता है ।

फिलोरिकऐसिड । निकम्मी हड्डी अवस्य के अन्दर रहने से यह दवाई देनसे खराब हड्डी निकल जाती है।

रोकनेके उपाय । पेपिन से अगर आराम न हो तो सल्फर देनाचाहिये मारक्यूरियस से अगर आराम न हो तो लकीसिस, देना चाहिये। पीब पैदा होने के पहले, नाइट्रिकएसिड पानी के साथमिला कर उगलीयों में लगाया जावे तो ये बीमारी जड़ से जाती रहती है। कलकेरिया कार्व्व देने से बार बार होना बन्द होजाता है।

सहकारी उपाय । बीमारी पैदा होने से पहले उंगलियों को गर्म पानी में डुबाना चाहिये बजाय नीचे रखने के हाथ को ऊपर की तरफ रखना चाहिये दर्द दूर करने के लिये गर्म पुलटिस बांधना चाहिये जरूरत होतो चीर दिया जावे परन्तु चीरते के वक्त बहुत होशयारी होना चाहिये जिससे उगलियों की छोटी छोटी नस न कट जावे। घाव होने पर,कैलेनडुला लोशन, से धोना चाहिये।

मस्सा ।

यह बीमारी कष्ट देनेवाली नहींहै परन्तु देखने में खराब मालूम देती है यदी खूब सूरत मुंह के ऊपर हुई तो तमाम चेहरे की खूबसूरती बिगाड़ देती है अगर बहुत मस्से होने लगें तो उनको दवाई से दूर करना चाहिये।

इलाजथूजा । इस बीमारीकी उमदा दवाई है मस्से के ऊपर थूजाका मूल अमिश्र अर्क दिन में दोतीन बार लगाना उचित है और साथ साथ थूजा ८ क्रम सेवन करना चाहिये एक हफता अथवा दस दिन में फायदा अवश्य देता है। फायदा ना-

पहले हिपर सलफर सकेलिस, बाद पीप पड़ जाने के, साईले-सिया, सलफर।

साईलेसिया। उङ्गलियों में अधम होने से यह दवाई दी जाती है। बीमारी के शुरू में यह दवाई तीन तीन घंटा बाद देना उचित है। अगर शुरू से ही यह दवाईदी जावे तो बिना पके आराम हो जाता है ऐसा अकसर देखने में आया है। इस के साथ तेज बुखार रहे तो एकोनाइट और सेलोसिया बारी बारी से देना चाहिये।

आरसिनिक। फूले हुये स्थान का रंग काला पन लिये हुए हो और बहुतजलन, व दुरगन्ध युक्त हो तो दिया जाता है काले के ऊपर लाल रंग होनेसे सकेलिस देना चाहिये।

एकोनाईट और बेलाडोना। ज्वर, प्रदाह, बकना आदि लक्षण रहने से इन दोनों दवाईयों में से चाहे एकोनाईट या बेलाडोना देना चाहिये ज्यादा ज्वर, रहने से एकोनाइट और शिरका दर्द आंखलाल अथवा बकना यदि इन में से कोई लक्षण हो तो बेलाडोना देना चाहिये।

बहुत दर्द।— प्रदाह, स्थान का रंग लाल मर्यां लपक होना, प्यासलगना, बेचैनी, आदि लक्षण में यह दोनों दवाई बारी बारी से दी जा सकी है।

मरक्यूरीयस। इस रोग में अक्सर देखा जाताहै कि रात में ज्यादा तकलीफ और धीरे धीरे पीप पैदा होने के लक्षण, में यह दवा मुफीद है।

हिपरसलफर। पीप पड़जाने से यह दवाई अच्छी है।

फिलोरिकएसिड । निकम्मी हड्डी अन्दर के अन्दर रहने से यह दवाई देनसे खराब हड्डी निकल आती है।

रोकनेके उपाय । ग्रेफिस से अगर आराम न हो तो सल्फर देनाचाहिये मारक्यूरियस से अगर आराम न हो तो हकोसिस, देना चाहिये। पाँव पैदा होने के पहले, नाइट्रिकएसिड पानी के साथमिला कर उंगलीयों में लगाया जावे तो ये बीमारी जड़ से जाती रहती है। कलकेरिया कार्ब देन से बार बार होना बन्द होजाता है।

सहकारी उपाय । बीमारी पैदा होने से पहले उंगलियों को गर्म पानी में डुबाना चाहिये बजाय नीचे रखने के हाथ को ऊपर की तरफ रखना चाहिये दर्द दूर करने के लिये गर्म पुलटिस बांधना चाहिये जरूरत होतो चीर दिया जावे परन्तु चीरते के वक्त बहुत होशयारी होना चाहिये जिससे उगलियों की छोटी छोटी नस न कट जावे। घाव होने पर,कैलेनडुला लोशन, से धोना चाहिये।

मस्सा ।

यह बीमारी कष्ट देनेवाली नहींहै परन्तु देखने में खराब मालूम देती है यदि खूब सूरत मुंह के ऊपर हुई तो तमाम चेहरे की खूब सूरती बिगाड़ देती है अगर बहुत मस्से होने लगे तो उनको दवाई से दूर करना चाहिये।

इलाजथूजा । इस बीमारीकी उमदा दवाई है मस्से के ऊपर थूजाका मूल असिल अर्क दिन में दोतीन बार लगा ना उचित है और साथ साथ थूजा द कम सेवन करना चाहिये एक दफता अथवा दस दिन में फायदा अवश्य देता है। फायदा मा-

खून होने से और ज्यादा दिनतक व्यवहार करना चाहिये अगर इस से फायदा न हो तो रसटक्स भी खाना चाहिये और लगाना भी चाहिये बहुत से मस्से होने लगे तो सलफर ३० क्रम १ खुराक तीसरे दिन पीनी चाहिये। एक हफ्ता या दो हफ्ता पीने से फायदा मालूम होता है। मस्सा हमेशा हाथ लगाने से अथवा पकड़ कर खेंचने से जल्दी बढ़जाता है।

आमलोहू यानी पेचिस।

लक्षण।—ये बीमारी बड़ी भयानक और सख्त है। इस तकलीफ की असल पहिचान यह है कि आंतों में प्रदाह और साथ जल्द जल्द आम और लोहू के साथ दस्त आवे पाखाना फिरने के वक्त जोर देना पड़े और मरोड़ ज्यादा होती होवे शुरू हालत में बुखार भी हो आता हो मामूली बीमारी में खालीआंव गिरपड़ता है पर बीमारी सख्त होने से आंव के साथ खून भी आता हो। केवल खून मछली के धोमन के माफिक कभी सड़ी बू के साथ दस्त हुआ करतो है। जब रोग बढ़ता है तो जल्दी जल्दी दस्त आते हैं मरीज दुबला और उठने बैठने की ताकत जाती रहती है, आखिर में भूली भूली बातें कहता है, हुचकी आती है और ठंढा पसीना आता हो माथा हिलता आदि खराब लक्षण दिखाई पड़ते हों यह बीमारी नई अवस्था में पूरी तौर से आराम न होनेपर पुरानी होजाती है। पुरानी होने पर जोर नहीं रहता परन्तु रोगी थक जाता है और मुशकिल से आराम होता है।

चिकित्सा। एकोनाइट बीमारी की पहली हालत में अगर बुखार हो तो देना चाहिये एकोनाइट से फायदा न हो तो कैमोमिला नक्समोमिका, मारक्युरियस, अथवा पलसाटिला देना चाहिये।

कालोसिंथ । करीब करीब हरकिस्म के आंव छोहू में यह दवा दी जाती है। पाखाने में खून मिला हुआ आंव, नाभि के चारों तरफ बरदास्त न होने वाला दर्द, और साथ ही पेट का फूलना अथवा सूजता हो हाथ बीमार न रखन देता हो। व बरदास्त दर्द होने के सबब से रोगी औंधा होकर अथवा पेट के नीचे तकिया लगाकर सो रहना हो।

मारक्यूरियसकर—। खून मिले हुए आमछोहू के वास्ते ये खास दवा है। पाखानेके बाद जोर देवे या पेशाब में तकलीफ होती हो अथवा पेशाब बद हो जाना हो।

– नक्सभोमिका । बार बार थोड़ा दस्त होता हो। दस्त-पतला और उसके साथ खून मिला आता हो दस्त हो आने पर आराम मालुम होता है।

इपिकाक । जी मिचलाना या के होना या जोर से कासना पेट में दर्द दस्त में पहले आंव और फिर खून मिली हुई आव।

सलफर । बहुत ही खराब हालत हो और दूसरी दवा अब काम न देती हो पेट में बहुत दर्द इस कदर हो कि हाथ न दिया जावे।

दस्त हो जाने पर भी बहुत देर तक दस्त की हाजत रहती है बीमारी पुरानी होजाने से बीच बीच में, सलफर, और, नक्सभोमिका देना उपकारी है।

रसटक्स । मच्छीके धोवन का सा दस्त होता है और रात में बढ़जाता हो।

फासफरस । बिना दर्द के आंव या खून गिरता हो पाखाने-की रस्ता खुली रहे।

लूम होने से और ज्यादा दिनतक व्यवहार करना चाहिये- अगर इस से फायदा न हो तो रसटक्स भी खाना चाहिये और लगाना भी चाहिये बहुत से मस्से होने लगे तो सलफर ३० क्रम १ खुराक तीसरे दिन पीनी चाहिये। एक हफ्ता या दो हफ्ता पीने से फायदा मालूम होता है। मस्सा हमेशा हाथ लगाने से अथवा पकड़ कर खेंचने से जल्दी बढ़जाता है।

आमलोहू यानी पेचिस।

लक्षण।——ये बीमारी बड़ी भयानक और सख्त है। इस तकलीफ की असल पहिचान यह है कि आंतों में प्रदाह और घाव जल्द जल्द आम और लोहू के साथ दस्त आवे पाखाना फिरने के वक्त जोर देना पड़े और मरोड़ ज्यादा होती होवे शुरू हालत में बुखार भी हो आता हो मामूली बीमारी में आवीआंव गिरपड़ता है पर बीमारी सख्त होने से आंव के साथ खून भी आता हो। केवल खून मछली के धोवन के माफिक कभी सड़ी बू के साथ दस्त हुआ करती है। जब रोग बढ़ता है तो जल्दी जल्दी दस्त आते हैं मरीज दुबला और उठने बैठने की ताकत जाती रहती है, मसाहर में भूली भूली बातें कहता है, हुचकी आती है और ठंडा पसीना आता हो आया हिलना आदि खराब अवस्था दिखाई पड़ते हों यह बीमारी नई अवस्था में पूरी तौर से आराम न होनेपर पुरानी होजाती हैं। पुरानी होने पर जोर नहीं रहता परन्तु रोगी थक जाता है और मुशकिल से आराम होता है।

चिकित्सा। एकोनाइट बीमारी की पहली हालत में अगर बुखार हो तो देना चाहिये एकोनाइट से फायदा न हो तो कैमोमिला मक्ससौमिका, मारक्यूरियस, अथवा पलसाटिला देना चाहिये।

इलाज - इसके वास्ते, एपिस बहुत उपकारी दवा है। बहुत सूजन और सुई चुभने के सी हालत मालूम देना जलन और खुजावट।

एकोनाइट - इसके साथ तेज बुखार रहने पर देते हैं।

डलकामारा - ठंढ लगकर होने से। बदहजमी अथवा ऋतु बदल होने के वक्त पलसाटिला देते हैं। खाने पीने की बद-परहेजी से अथवा पेट की पीड़ा रहने पर वेनटिम क्रूड उपकारी है।

रसटक्स - काकड़ा अथवा झींगा मच्छी खाने पर गठिया के समान दर्द रहता हो तो रस टकस देते हैं।

आर्टिका - बहुतों की राय में यह अच्छी दवा है खासकर आमवात बैठने पर पेटकी बीमारियों में तथा कै होने की इच्छा रहती हो तो आर्टिका देना चाहिये।

यह बीमारी पुरानी होने से, कलकेरियाकार्ब, और सलफर अच्छी दवाई है अगर रात्रि में खुजली बढ़जावे तो सलफर देना चाहिये।

सहकारी उपाय - ठंढ या सर्दी लगने देना मना है गरम पानी से नहाना खाने के विशेष नियम रखना - बिना पचने वाली चीजों का परहेज रखना चाहिये।

१० उदरामय (पतला दस्त आना)

जल्दी जल्दी ज्यादा मिकदार में पतला और पानी के समान दस्त का आना उसके साथ कै करने की इच्छा या कै होती हो, पेट फूलता हो, पेट में चुभन होती हो बदबूदार डकार आती हो, और चन्द तरह की असाधारण जाहर होती हों, पाखाना पानी पत-

लाइकोपोडियम । पुरानी पेचिस, पेटमें हवा का जमना फराहना मालूम हो कि अभी और दस्त होगा उस हालत में यह दवा देना चाहिये ।

सेवनविधि । नई और शुरू हालत में दवा हर घंटे पर देनाचाहिये हलकी बीमारी में दो तीन घटाबाद दवाई दी जावे। पुराना होने पर दिन में दो बार काफी है ।

सहकारीउपाय । पथ्य के ऊपर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये जल्द पचे और ताकत लावे ऐसी खुराक खाना चाहिये बीमारी की बढी हुई हालत में अरारोट अच्छा पथ्य है अगर पचे तो थोडा थोडा दूध भी दिया जा सका है। कच्चा बेल काट कर पानी में औटाकर वह पानी बीमार को दिया जावे तो आहार और दवा दोनों होती हैं । जरूरत पडने पर गोस्त और मछली का शोरवा भी दे सके हैं पेट के दर्द बंद करनेके लिये पुलटिस बाध दिया-जावे अथवा फुलालेन से गर्म पानी से सेके बीमार को ठंडा पानी और खाना ठंडा कर के देना चाहिये पुरानी पेचिस में कच्चा बेल आग में भरता कर दिया जावे यह बहुत फायदे मन्द है।

आमवात

लक्षण - बदन में लाल रंग के चकत्ते से होजाते हैं । और फूल उठता है उसमें खुजली होती है और जलन होती है । जैसे मेंच की फली लगने से हालत होती है खाने पीने की बदपरहेजी व ठंड लगने से और कभी कभी बुखार के साथ यह बीमारी होती है यह बीमारी पुरानी होने पर बहुत मुशकिल से आराम होती हैं जब तक कि इसका कारण निश्चय न हो तब तक यह आराम नहीं होती ।

होगा और कमजोरी न होने से) मन की चिन्ता से, कैमोमिला (क्रोध,) एगनसिया (रज) ओपियम, भय)

दूसरे लक्षण के होने से, इपीकाक, बेपचा दस्त होने से निकलने से, आरसेनिक, चायना, दस्त में खून आने से मरक्यूरियस, कर करोसीनस, कैपसीकम, इपीकाक, पित्त उदरामय में पोडो फाइलम, चायना, मरक्यूरियस, आयिरिस, पानी पीने के बाद उदरामय आरसेनिक, क्रि रोटन, पोडाफाइलम फोस फरिस भोजन करने के बाद उदरामय में आरसेनिक क्रोटन, चायना।

फोस फरिस। शुरू के वक्त उदरामय में नेट्रम सल्फ, फौसफरिस, पोडोफाईलम सलफर, रात्री के समे उदरामय आर सेनिक, चायना, पोडो फाईलम पलसाटिला वृद्ध मनुष्य के उदरामय मे आरसेनिक मैग्नीज फौसफरिस सिकेली।

बच्चोको। कैमोमिला, इपीकाक, मरक्यूरियस।

दांतनिकलने के समय। कैलक रिया कैमामिला स्त्री का गर्भ अवस्था मे डलकामारा सीपिया कैमामिला चायना न क्स सलफर।

प्रसूतकी हालत मे। एंटिमक्रूड डलकमारा।

दस्तका रंग देखकर। कभी कभी दवाई ठीक करना पड़ता है।

जैसे दस्तके साथ खून जाना। मरक्यूरियस न क्स सलफर।

पीवके साथ दस्त आनेसे। फोस फरिस बर्फैसिस साइलिसि या मरक्यूरियस सलफर।

ता और कभी पानीसा या कभी आम पित्त या खून के साथ अक्सर मामूली उदरामय की तरफ खयाल करके थोडा समझ लेने से यह सख्त और घातक होजाताहै हैजे की बीमारी भी बदल जाती है। शुरू उदरामय की बीमारी खाने और इलाज की बुराइयों से पुरानी हालत को पहुंच जाती है। उससे मरीज का खून आहिस्ते आहिस्ते कमजोर और दुबला होजाता है अपरिमित भोजन या न पचने वाली चीज खानेसे, मैला और खराब पानी पीने से, सर्दी और ठंढ, या ज्यादा गर्मी, जगने वगैरा कारणों से उदरामय की बीमारी हुआ करती है।

दूसरी दूसरी बीमारीयों के लक्षण के साथ उदरामय, बीमारी हुआ करती है जैसे कि यक्ष्मा कास ज्वरातिसार, अतिसार विकारज्वर, आदि बीमारी के साथ उदरामय, बीमारी पैदा होतीहै

चिकित्सा - नई उदरामय की बीमारी में एकोनाइट, आरसिनिक क्यामभिला, डलकामारा पलसेटिला नक्स भोमिका, पडोफाईलम पुराना उदरामय में - कैलकेरिया, प्रेफाइटिस, चायना, फोसफरिस, सलफर, नाइट्रिकएसिड, नपचने वाली चीज खाने से पलसाटिला, एन्टिमक्रुड, नक्सवोमिका, इपिका, सर्दी, या आब हवा बदलने से, कैमफर, (जाडा मालूम देकर उदरामय) एकोनाइट, (पसीना बंद होने से) आइवोनिया, (गरमी के बाद सर्दी से) डलकामारा, (भीगने से) कफोसिन्थ, (पेटमें सुखम होने से)

गरमी के दिनों में जो उदरामय होता है उसमें, चायना, (मामुली उदरामय) भेरेट्रम (हाथ पेर में घाइटे आने से) आयरिस, (के पेट में जलन और सिर में दर्द रहने से) आरसेनिक (बहुत प्यास और कमजारी में) अैसिड फौस फारिक, (दस्त

पेट साद भी को पानी से उदरामय और कबजीयत गर्भवती और बच्चों को उदरामय। मरक्यूरियम खूं के साथ दस्त दस्त के पहले पेट में दर्द पेचिस मे बहुत कराहना अथवा जोर देना रात मे बढजाना ब्रायोनिया गरमी के वखत में बीमारी होने स या बर्फ खाने से अथवा शरीर के बहुत गर्मी होनेपर ठंडा पानी पीने स प्रबौज उदरामय पाखाने की हाजत न रोक सकना। सीना पेट में कीडा अथवा कृमि रहने से और दस्त सफेद रंग का होने से नाक हर वख्त खुजाते रहना सफेद रंग का अथवा मैला पेशाब होना सोते स चिल्ला उठना दांत किट किटाना।

एसिडफौस। बीमारी पुरानी अथवा बिना दर्द के आदि अवस्था में॥ फोसोसिथ दस्त का रंग हल्दी के समान और पतला पेट में बहुत ही बेचैनी के साथ दर्द जैस की पत्थर से पीसाजाता हो थोडे खाने स पेट आना दपीकाक हर रंग के दस्त औ मिच-लाना अथवा कै होजाना और पेट फूलजाना नक्सभोमिका का ज्यादा खाना अथवा मन की बहुत चिन्ता करने से पैदा होना कभी कबजीयत कभी उदरामय सलफर पुराना उदरामय मे सबेरे बिछौना से उठते ही पाखाने की हाजत होना उसके साथ पेट मे मरोड होना और कराहना।

सहकारी उपाय। पेट की बीमारी में पथ्य का बंदोबस्त जरूरी है शुरू हालत में साबू दाना अरारोट बार्ली बिलायती जो का आटा यही पथ्य है आहिस्ते आहिस्ते दूध धूने के पानी का साथ खिलाते है पुरानी हालत में पुराना चावल ताजी मछली का शोरबा तथा मच्छी न खाने वाले को कच्चा केला आलू परवल आदी तरकारी का रसा देना चाहिये पत्ती का साग न खा-ना चाहिये अरहर मटर और चना की दाल खाने से नुकसान हो-ता है अकसर आब हवा बदलने से बहुत फायदा होता है उदरा-मय वाले को दूध का खाना कुपथ्य है।

पित्तके दस्त आने के समय। आर्टरिस ब्रोगमा कै-मोमिला मरक्यूरियस पोडो फाइलम।

पीले रंग के दस्त आने से। इककामार्दा इपीकाक चायना कैमोमिला।

हरे रंग के दस्त आने मे। कैमोमिला मरक्यूरिया सलफर पलसटिला।

अजीर्ण दस्त मे। चायना कैलके रिया।

वे मालूम दस्त होने से। फोस फरस सिकेलीपो-डोफ इलम।

कैमफर। एका एकी नये उदरा मय मे ठंड लगने से कपने से पाक अन्न और आंत मे दर्द होने से हाथ पैर ठंड कैमफर की ५ बूंद सफेद बूरे मे मिलाकर बीस अथवा तीस मिन्ट के अंतर से अग वा हरयेक दस्त के बाद देना चाहिये।

पलसेटिला।—तैल अथवा घी सेवन हुए गुरपाक की ज से जी मिचलाना डकार आना मुह मे कडवा सवाद रहना और रात्री के बखत उदरामय मे यह दवाई देना चाहिये।

चायना। गरमी मे जो उदरामय होता है। उस उदरा-मय मे पतला पिलाई लिये हुए दस्त होना भूख न लगना मल के साथ अजीर्ण चीज का निकलना कमजोरी दर्द न होना प्यास पे-टका फूलना।

ऐन टिम कुड। पानी के समान उदरामय भूकका न लगना दूध के समान सफेद जीभका रंग रहना डकार और के

पुत्र से पर पुत्र तक में पैदा हो जाता है। पिता के दोष से बच्चा सारे बदन में गरमी का घाव लेकर पैदा होता है।

चिकित्सा। पहली अवस्था में मरक्यूरियस सल, बहुत उमदा दवाई है। इसका ६ क्रम साधारण तौर पर दिया जाता है। बीमारी कठिन होजाने से अगर ६ ठे क्रम से कुछ फायदा न हो तो इस दवाई का तीसरा क्रम चूर्णोदिन में २दफे दिया जाता है। अगर इस से भी फायदा न हो तो मरक्यूरियस कोरोसी बस ६ क्रम का देना चाहिये।

- **एसिड नाइट्रिक।** पहले पारा ज्यादा इस्तैमाल कर लिया हो तो। येलेकोगा बद निकलने पर और दर्द होने पर देते हैं आरसिनिक आयोडाइड और सलफर पहली अवस्था में अच्छी दवाई है। जखम की अवस्था खराब होने पर आरसिनिक और पूरा आराम करने के लिये सलफर देना चाहिये।

द्वतीय अवस्था में एसिड नाइट्रिक काली हाईड्रो मरक्यूरियस आरसिनिक औरम उमदा दवाई है।

तृतीय अवस्था में। काली हाइड्रो औरम ऐसिड फौसफरिक, फौस फरस आरसिनिक ऐसिड नाईट्रिक।

काली हाईड्रो। द्वितीय अवस्था विशेष कर तृतीय अवस्था की उमदा दवाई है हड्डियों में दर्द, सूजन, घाव, चर्म रोग आदि अवस्था में जल्दी फायदा करती है नाक से पीप और खून मिला हुआ बदबूदार कफ आता होवे तो देना चाहिये।

औरम। नाक से बदबूदार पीप और खून मिला हुआ कफ आता होवे तो और मुंह और नाक में घाव और गर्मी का जहर पारा इस्तैमाल करने का दोष युक्त बीमारी में देनी चाहिये।

उपदंश अथवा गर्मी या आतशक ।

खराब-औरतो के साथ असत् सहवास करने से पुरुष के लिंग मे एक तरह का जहरीला घाव हो जाता है गर्मी का जहर बदन में बैठकर खून के साथ मिलकर शरीर में कई तरह की बीमारी पैदा करता है । गर्मी की ज्यादा ३ हालत देखने में आती है पहले जिस जगह घाव हो जाता है उस जगह का जहरीला स्थान और उस के आस पास की गाठों में बीमारी रहआती है यही पहली अवस्था है। इस वक्त में बुखार भी रहता है। खून बिगडने से मुंह और भीतरके यंत्र कंठ चमड़ा आदिस्थान पकड़ लेता है यही दूसरी अवस्था है इस अवस्थामें नाना प्रकारके चर्म रोग और हड्डियांके भीतर व जोड़की जगहमें दर्द मालूम होता है बहुत दिनबाद हड्डी मज्जा गुदा में पहुच ने से तीसरी हालत होती है इस अवस्था मे मुंह के भीतर और गले मे घाव और चमड़ा मे घाव हड्डी गोस्त के भीतर आदि अस्थान मे नाना प्रकार की पीड़ा देखी जाती है ।

यह बीमारी बहुत सख्त है पारा से मुलाखिम अथवा कच्चा-पारा खाने से ज्यादातर जीना कठन हो जाता है यह बीमारी साधारन है हर एक मनुष्य को देखने मे आती है जहर असर करने की यानी अशुद्ध भोग करने की तीन दिन बाद ८ दिन के अन्दर लिंग के ऊपर एक लाल दाग अथवा १ फुन्सी दिखाई देती है इस के बाद उस में खुजली चलती है और आस पास के स्थानपर सूजन हो और जलन होने लगती है । धीरे धीरे फुन्सी बढ़कर बड़े गोल घाव की शकल में हो जाती है और उस में से पीब निकलने लगती है। गर्मी का जहर शरीर में घुस जाने से जीवन पर्यन्त दुख आता रहता है जिन्दगी भरमें मनुष्य को कोई न कोई पीड़ा दुख देती रहती है ऐसी कोई बीमारी नहीं है जो गरमी का जहर शरीर म घुसने से पैदा न हो सके। यह जहर पिता से पुत्र

रजस्वला होने लगती है तब दर्द कम हो जाता है यह बीमारी सन्तान पैदा होने की प्रधान विघ्नकारी है।

चिकित्सा। कैमोमिला अगर दर्द बच्चा पैदा होने की तरह होता होवे या काले रंग का छिछड़ा खून का गिरता हो। या बार बार पेशाब करने की हाजत होती होवे या ज्यादा बेचैनी होती होवे।

सिमिसी फ्यूगा। प्रदाह के साथ ऋतु शूल में बहुत फायदा देती है। विशेषकर हाथ पाव में बांयठा और पीठ अथवा रान में दर्द और शिर मे दर्द रहे तो और थोडा जमा हुआ खून अथवा बहुत रक्त गिरता हो फायदा देती है।

नक्समोमिका—गाढे खून का आना, जी मिचलाना, कब्ज रहना, बे शुमार दर्द का होना, कमजोरी, और शिर घूमना, इन मे फायदा देता है।

पलसेटिला—ठहर ठहर कर खून गिरता हो, पेट के भीतर पत्थर दबा हुआ मालूम देता हो, और गर्मी से बढ जाता हो।

काकूलस—काटने का सा दर्द होता होवे काला जमा हुआ खून बूंद बूंद करके गिरता हो और उस के साथ पेट फूलना, जी मिचलाना छाती में दर्द और तकलीफ मालूम देती हो ऋतुशूल के बाद बवासीर उत्पन्न हो जाने से बांयठे आते हों

प्लाटीना—हर एक ऋतु के समय बांयठा और चिल्लाना कुछ काला, कुछ पतला, कुछ जमा हुआ बहुत ज्यादा खून गिरता हो।

- सीपिया—रोग की पुरानी हालत और कमजोर, अवस्था में आधे शिर में दर्द, ऋतु के समय दांत में दर्द, फासियत खून अधिक एव बहु कालतक कभी अल्प और थोडे दिन तक

पिता से प्राप्त उपदन्श । मरक्युरियस, एसिड नाईट्रिक, और सलफर उत्तम है। पारा इस्तैमाल करने की खराबी से एसिड नाईट्रिक उपकारी है गर्मी का दोष मिटाने के लिये हीपर उपकारी है। गर्मी के कारण से हड्डियों में दर्द होतो मरक्यूरियस का ली, आयोडाइड, मिजेरियम। हड्डीमूज जानेसे फिलोरिक एसिड वेसिडफोस, स्टेफीसेग्रिया, साईलीशिया।

हड्डीयों का नाश हो जाने से साईलेसिया कैलकेरिया फौस फरस।

सहकारी उपाय । हरतरहके मन और जिस्म की महनत छोड़ देना तनदुरुस्त और पुष्ट करने वाली चीजें खाना हर तरह की गर्मी से परहेज नशे की चीजें भी बुरी समझना चाहिये बदन और जखम की जगह हमेशा साफ रखना चाहिये गर्मी के मरीज से हर हालत को हमेशा दूर रहना चाहिये पारा भीतर खाना अथवा बाहर लगाना हर तरह से मना है एक जहर दूर करने के लिये दूसरे जहरका इस्तैमाल करना जरूरी नहीं है गर्मी के जहर के साथ पारा मिलने से बहुत नुकसान करता है नीम हकीम अथवा बिना सीखे हुए डाक्टर से इलाज कराना अथवा उसकी दवाखाना बजाय फायदे के नुकसान पहुंचाती है क्योंकि यह लोग जल्दी फायदा पहुंचने के लिये पारा अथवा पारे से बनी हुई दवा इस्तेमाल करते हैं।

ऋतुशूल (मासिक समय की तकलीफ)

लक्षण । यह बहुत तकलीफ देनेवाली बीमारी है मासिक के पहलेसे ही अथवा मासिक के समय पे शुमार दर्द और इसके साथ तकलीफ ज्यादा, कै, की उबकाई या दर्दसर, हुचकी आदि बदतरह की शिकायतें कभी कभी देखने में आती हैं जब

२ हालत—बीमारी की मस्तीर हालत॥ बीमारका सब तरह से कमज़ोर होजाना-आँखें भीतर की तरफ घुस जावे पेशाब का रुक जाना दस्त उल्टी बन्द होजाना अथवा पहली अवस्था से कुछ कम हो जाना। बदन ठंढा या पसीने से बिलकुलतर।

३ हालत—प्रति क्रिया की अवस्था-इससे पहले बताये हुये सब लक्षण होले होले कम होकर बदन गर्म होजाता है यहा तक कि ज्वर हो आता है। इसके बाद बीमार होले होले अच्छा हो जाता है।

चिकित्सा।—कैम्फर-उदरामय, जाडे के साथ पेट में दर्द, आदि हैजा के पहले लक्षण ज़ाहिर होने पर डाक्टर रूबीनिका स्पिरिट कैम्फर सफेद बूरे के साथ [पानी के साथ नहीं] मिलाकर दस पन्द्रह मिनट बाद देना चाहिये मात्रा जवान और पूरी उम्र के आदमी के लिये ५ बूंद बच्चोंके वास्ते १—२ बूंद यह दवाई पांच या सात दफे देने पर अगर दस्त बन्द न होकर चावल के धोवन के समान दस्त होवे तो दूसरी दवा तजवीज करनी चाहिये।

पलसे टिला—तेल अथवा घी की चीज़ खाने से यह बीमारी होवे तो अथवा स्त्री अथवा ठंढे मिजाज के आदमियों को उपकारी है।

नक्सभोमिका—न पचने वाला खाना खाने से अथवा रात्रि जागने से, या शराब पीने से अथवा मनकी चिन्ता बहुत करनेसे यह बीमारी पैदा होजावे तो यह दवा इस्तेमाल करनी चाहिये।

चायना—फलफूल खाने से अगर बीमारी पैदा होवे तो।

एकोनाइट—एक दमसे पतला दस्त आने लगे उसके साथ जाडे से बुखार ठंढ लगकर होने से॥ प्यास का ज्यादा होना बेचै-

सहकारी उपाय—गर्म पानी से सेकने और गर्म पानी पीने से हमेशा उपकार देता है। दर्द के साथ ऋतु होने से पहले सलफर, और कैल्केरिया एक के साथ दूसरी इस्तेमाल करते हैं,

अण्डकोषप्रदाह

लक्षण—साधारण अंड कोष के प्रदाह को (एक कोष वृधि कहते हैं) हर एक अमावस और पूर्ण मासी को एक तरफ का अंडकोष फूल जाता है और उस में दर्द और जलन के साथ बुखार हो आता है।

कारण—खून का चलना फिरना रुक जाना ॥ अथवा प्रमेह रोग के अखीर में ॥ ठंड लगने अथवा चोट लगने से यह बीमारी पैदा होती है।

चिकित्सा—चोट लगकर होने से आरनिका देना चाहिये, प्रमेह के अखीर समय होने से पलसाटिला, मरक्यूरियस सल, इस्तेमाल करना चाहिये, ठंड लगने से—रसटोक्स, बहुत दर्द होने के कारण हेमामेलिस, पलसेटिला, मावस और पूर्णमासी के बढ़ने से केल्केरिया और साईलीशिया, और विषय प्रमेह के रोग की दवाई में देखने से मालूम होगा।

१४। विसूचिका यानी हैजा

लक्षण।——यह बीमारी किसी जहर से, हमेशा पैदा हुआ करती है। इस बीमारी की हमेशा तीन तरह की हालत देखने में आती है।

१ हालत—इस बीमारी की उत्पत्ति या वृद्धि जैसे दस्त, नब्ज का कमजोर होजाना, हाथ पैर में पांयठा का आना पेटमें पांयठे आना रोगी का कमजोर होजाना

कूप्रम आरसिनिक—कूप्रम और आरसिनिक दोनो दवाइयोंके लक्षण रहने से जैसे हाथ पैरम चांयठा आना-पेट के भीतर ज्यादा सहन न करने वाला दर्द और दर्द के साथ चिल्लाना, बहुत कमजोरी, नाड़ी डोरे के समान महीन इस लक्षण में यह दवा देते हैं। ऐसी हालत में कूप्रम और आरसिनिक, बारी बारी से न देकर कूप्रम आरसिनिक देना उपकारी है। इसका ६ नम्बर का चूर्ण व्यवहार होता है।

मरक्यूरियस कर-खून मिले हुये दस्त आने पर देते हैं।

कारवोभेजिटेविलिस नाड़ी न मिलने से चेहरा मुरदे के माफिक और सारा शरीर ठंडा, ऐसी हालत में देते है।

इस बीमारी की शिकायत-और मुख्तासिर इलाज—

कै की इच्छा, अथवा कै होना, या हुचकी आना, इपिकाक डेवेकम, नकसभोमीका, कारवो भेजिटे बिलिस।

वाय आजाने से-ओपीयम, रसटोक्स, स्ट्रेमोनियम, एपिस,।

पेशायबन्द होजाने से-आरसिनिक, सिकेलीना, केन्थरिस टेरीबिंथ।

पेट फूलने से-ओपीयम, नकसयोमीका, कारवो भेजीटेवालिस, पेट मे केचुआ होजाने से, सीना।

यह बीमारी सख्त और मारडालने वाली है। थोड़े से वक्त में जीना दुश्वार होजाता है। यह बीमारी आरम्भ होने से अच्छे डाक्टर या वैद्य को दिखाना चाहिये। इस बीमारी का पूरा हाल लिखना अथवा पूरी तरह से इलाज लिखना इस छोटीसी किताब में असम्भव है।

सेवन विधि - बीमारी की हालत देखकर दस, बीस, तीस,

गी पेट में नामी के नीचे बहुत दर्द, बदन गर्म तेज और पूरी नाडी यह दवाई पहली अवस्था में देनी चाहिये पतन अवस्था में जिस वक्त बदन ठंढा हो। दिल की कमजोरी और नब्ज का न मिलना अगर मिले भी तो इतनी सूक्ष्म जो मालूम न होवे बेचैनी मृत्यु का भय होना और चिन्ता होना आदि लक्षण में यह उपकारी है।

मूल अर्क (यानी मदर टिञ्चर) अथवा प्रथम दशमिक क्रम पानी १ x देना चाहिये।

आरसिनिक-खूब पतला दस्त आना, पाखाने के मुकाम पर जलन, पलंग पर बीमार बेचैन रहता हो, पानी पीने की ख्वाहिश ज्यादा, थोडी थोडी देर में कम पानी पीता हो, पानी पीने के साथ ही कै, कर देता हो बदन ठंडा और पसीने से तर, अगर मरीज के देह के भीतर बेशुमार गर्मी और जलन मालूम देती हो बहुत कम कमजोर नब्ज खोई हुई।

वेराट्रम वेलम-बहुत ज्यादा पतला दस्त, हाथ पांव में बायँठा हो, बहुत ज्यादा पानी पीना और कमजोरी ऐसी हालत में दीजाती है।

रिसीनस-जिस हैजा में कै, ज्यादा होवे उस में ६ क्रम डायल्यूशन देना चाहिये।

इपिकाक-बहुत जी मिचलाने अथवा कै होने से दस्त से कै ज्यादा रहना, और वेचिश की तरह किंखना और हरे रंग का पाखाना पाखाने में आंव का आना ऐसी हालत में देते हैं।

क्यूप्रम-हाथ पैर और छातीका खिंचना-शाग शून्य, नाडी न मालूम देती हो, और जी मिचलाना यह दवाई अकसर वेराट्रम के साथ बारीबारी से दी जाती है।

कूप्रम आरसिनिक—कूप्रम और आरसिनिक दोनों दवाइयोंके लक्षण रहने से जैसे हाथ पैरमें बांयठा आना-पेट के भीतर ज्यादा सहन न करने वाला दर्द और दद के साथ चिल्लाना, बहुत कमजोरी, नाड़ी डोरे के समान महीन इस लक्षण में यह दवा देते हैं। ऐसी हालत में कूप्रम और आरसिनिक, बारी बारी से न देकर कूप्रम आरसिनिक देना उपकारी है। इसका ६ नम्बर का चूर्ण व्यवहार होता है।

मरक्यूरियस कर-खून मिले हुये दस्त आने पर देते हैं।

कारवोभेजिटेबिलिस नाड़ी न मिलने से चेहरा मुरदे के माफिक और सारा शरीर ठंडा, ऐसी हालत में देते है।

इस बीमारी की शिकायत-और मुख्तसिर इलाज—

कै की इच्छा, अथवा कै होना, या हुचकी आना, इपिकाक टेबेकम, नक्समोमीका, कारवो भेजिटे बिलिस।

वाय आजाने से-ओपीयम, रसटोक्स, स्ट्रेमोनियम, एपिस,।

पेशावबंद होजाने से-आरसिनिक, विरोटीमा, केनथरिस टेरीबियं।

पेट फूलने से-ओपीयम, नक्सवोमीका, कारवो भेजिटेबालिस, पेट मे कैसुआ होजाने से, सीना।

यह बीमारी सख्त और मारडालने वाली है। थोड़े से वक्त में जीना दुर्लभ होजाता है। यह बीमारी आरम्भ होने से अच्छे डाक्टर या वैद्य को दिखाना चाहिये। इस बीमारी का पूरा हाल लिखना अथवा पूरी तरह से इलाज लिखना इस छोटीसी किताब में असम्भव है।

सेवन विधि - बीमारी की हालत देखकर दस, बीस, तीस,

मिनट अथवा एक दो घंटा के बाद दवा देना चाहिये रोग के शुरू हालत में हरएक दस्त और कै के बाद देना चाहिये।

सहकारी उपाय - जिस वक्त हैजा चारों तरफ फैल आये उस वक्त नीचे लिखे हुये नियम पालन करना चाहिये।

१ - क्यूप्रम, अथवा वेरेट्रम, १ बूंद पानी में मिलाकर उसकी चौथाई नित्य एक दफे सेवन करना चाहिये।

२ - जल्द पचने वाली चीज खानी चाहिये बे कायदे और बे वक्त खाना, रात में जगना, शराब पीना वगैर मना है।

३ - नदी या तालाब का पानी साफ करके पीना चाहिये। पहले पानी गर्म करके तब कोयला और बालू रेत से साफ करलेना उचित है।

४ - हमेशा खूब साफ रहना चाहिये - कपड़ा बिछावन, और घर खूब साफ रखना मुनासिब है।

५ - मकान में किसीके यह बीमारी हो तो रोगी का पाखाना अथवा पेशाब और कै को किसी दूसरे बरतन में रखकर मकान से बहुत दूर फेंक आना चाहिये और कपड़े बिछावन वगैर को जला डालना चाहिये नदी या तालाब में बीमार के खराब कपड़ा न धोना चाहिये।

६ - जिस घर में रोगी रहा हो उसको अच्छी तरह से साफ और शुद्ध करके काम में लाना चाहिये घर में कारबो लिकसोल्यान छिड़क देना, गंधक जला देना, धाम में राल जलाना और उस घर को कुछ दिनों के वास्ते हर तरफ से खुला रखना चाहिये ताकि साफ हवाकी आमदरफ्त उसमें होती रहे।

१५ - खुजली। (छाजन)

लक्षण - चर्म में प्रदाह, रसका बहना, सूखी पपड़ी जमजाना,

खुजलाहट चलना, विशेष कर रात्रि में बढ़जाना, अकसर लड़कों के पैर में देखी जाती है।

चिकित्सा—रसटाक्स-खुजली से पानी बहे खुजलाने पर जलन, मोटी पपड़ी, बराबर खुजली चलती रहती हो - और खुर खुराता हो।

सलफर—सिर और कान के पीछे, बदबू के साथ फट कर खून आना, वे बरदाश्त खुजलाहट, रहने से यह दवा दीजाती है सुबह और शाम में देना चाहिये।

आरसिनिक-पुरानी बीमारी में खास कर रात दिन जलन रहती हो तो देना चाहिये।

डलकामारा- पानी के समान रस गिरता हो खुजलाने से खून गिरता हो जाड़े और बरसात में बढ़जाता हो।

क्रोटन-के और उदरामय रहने से। मरकियूरियस और हीपर सलफर उमदा दवाई है।

सहकारी उपाय—खुजली की जगह साबुन से खूब धोकर बराबर साफ रखनी चाहिये, साफ करके गर्म तेल लगाना, जितना साफ रक्खा जावेगा उतनी ही जल्दी बिमारी को आराम होगा-ठंड पानी से नहाना और बदन साफ रखना बहुत जरूरी है। बीमार को ज्यादा खुजलाने से रोकना। जखम का रस अच्छी जगह में न लगने पाये इस का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। जहां रस लगता है वहां पर घाव हाजाता है।

१६ कान मे दर्द होना

लक्षण—येह बीमारी सामान्य होन परभी तकलीफ बहुत देती है। अधामक दर्द इतना बढ जाता है कि जिस मे बीमार

धकने लगता है। कान पर दर्द के मारे हाथ नहीं रखा जाता, कान के भीतर नाना प्रकार के अस्वाभाविक शब्द सुनाई देते हैं, कान के सुराख लाल होकर फूलजाना कोई प्रकार के प्रवाह न रहने परभी कान के भीतर बहुत दर्द होता है हमेशा ठंड लग कर और मुंह में मसूड़ा फूल जाने से कान में दर्द होने लगता है--कभी कभी कान के भीतर पानी जाने से अथवा जोर से ठंडी हवा जाने से या किसी चीज से कान खुजाने से और कान के भीतर फोड़ा होने पर दर्द होने लगता है।

चिकित्सा । एकोनाइट–ठंड लगकर नये प्रदाह में—

बिलेडोना–सींक गड़ाने या चीरने कासा दर्द, दर्द के मारे बकना, माथे में खून का जमा होजाना—

मरक्यूरियससल—धबका चलते हो, गर्मी पहुंचने से अथवा बिछौने पर सोये रहने से दर्द बढ़जाता हो कान फूल कर आस पास की गांठें तक फूल जाती हैं। और दर्द कनपटी तक आजाता है और कान से पीप गिरने लगती है।

जलसीमियम–ठहर ठहर कर दर्द होने से।

पलसटिला–बे बरदाश्त दर्द होने से, किसी से कम न होने से, इस दवा के इस्तेमाल से तमाज्जुबकासा फल होता है और ठंड लगने से अथवा एका एक पसीना बंद होजाने से कानमें दर्द होता हो। और कान के भीतर सुई चुभाने का सा दर्द होता हो सँझमी ज्यादा रहती हो।

कैमोमिला—कान के दर्द की उमदा दवाई है। कान का फूलना, ज्यादा दर्द का होना, प्रदाह होना कान से ज्यादा पीप आना, अथवा बहरापन, बच्चों के कान में ज्यादा दर्द होने से अत्यन्त उपकारी है ऊपर लिखी हुई दवाओं से प्रदाह बंद होने पर पलसाटिला देने से विशेष उपकार करता है।

सहकारी उपाय—फलालैन अथवा गेहूं की भुसी की पोटली बना कर गरम गरम सेंक देना चाहिये । पुलटिस से बहुत आराम मालूम देता है—ठंडी हवा कान के भीतर न जाने पाये इस लिये कान का छेद रुई से बंद कर देना चाहिये ।

कान में बेचैनी होने पर बिना समझे हर एक दवाई देना उचित नहीं है । इस से दर्द बंद होने के बजाय बढ़ जाता है । जरूरत होय तो सरसों का गर्म तेल कान में गेरा जा सका है

१७ । कान का बहना

इलाज—साधारण तौर पर कान से पीप गिरने पर पलसाटिला उम्दा दवाई है। खसरा (*measles*) होने के बाद कान में दर्द हो तो पलसाटिला दिया जाता है।

कैलकेरिया और सलफर,—बीमारी बहुत दिन की होने में और रोगी की प्रकृति कमजोर होने पर यह दोनों दवाई दी जाती हैं।

कैलकेरिया नित्य प्रति दो दफे कर के १ हफ्ता तक तक देनी चाहिये । चार दिन बाद सलफर रोज एक दफे और चार दिन तक देना चाहिये ।

मरक्यूरियस—कान में घाव, दुरगन्ध, पीप, गाढ़े अथवा खून के साथ मिली हुई, कान के आस पास की गांठों में सूजन और दर्द, और माता निकलने के बाद कान बहता हो तो यह दिया जाता है ।

हीपर सलफर—पारा इस्तेमाल करने के सबब से कान बहता हो तो यह उपकारी है ।

आरसेनिक—जलन के साथ पीप का बहना जहां पीप लग वहां पर घाव हो जाना और जो हमेशा बीमार रहते हैं ।

सहकारी उपाय—कान को हमेशा साफ रखना कान से पीप

निकलते समय बाहर न लगे उस का खयाल रखना, क्योंकि पीप का दूसरी जगह लगने से घाव का होना सम्भव है। हुशियारी के साथ कान में पिचकारी देनी चाहिये क्योंकि अक्सर पिचकारी देने के दोष से बीमारी आराम नहीं होने पाती। पांच औंस पानी में एक ड्राम कार्बोलिक एसिड और १ ड्राम ग्लेसरीन मिला कर कान में पिचकारी देनी चाहिये बीमारी पुरानी होने से बदन की तन्दुरुस्ती के तरफ पूरा खयाल रखना चाहिये। दुर्बल के लिये कोडलीवर औयल पिलाना बहुत उपकारी है।

१८। पीलिया

लक्षण—इस को पाडु रोग अर्थात् पीलिया कहते हैं इस बीमारी में आंख अथवा मुंह और शरीर के सब स्थान पीले हो जाते हैं। कपड़े में पसीना लगने से पीलेपन के दाग पड़ जाते हैं। बच्चों को यह बीमारी होने से कब्जियत, अकसर उद्‌गामय मुँह का स्वाद कड़वा, मिट्टी के समान काला दस्त, थोड़ा थोड़ा गाढ़ा लाल रंग का पेशाब, कपड़े में पेशाब लगने से पीले रंग के दाग हो जाना कभी कभी उस के साथ बुखार का रहना सारे बदन में खुजली आदि लक्षण रहते हैं।

पथरी होकर पेशाब बन्द हो जाने से बहुत दर्द रहता हो। औरठहर ठहर कर बहुत तकलीफ देने वाला दर्द, के, हुचकी आदि लक्षण—मिलकर बीमार को बहुत कमजोर कर देते हैं।

कारण—अगर पित्त अच्छी तरह से पैदा न होवे अथवा पैदा होवे तो न निकलने से खून में मिलकर सारे शरीर में फैल जाता हो। पथरी पैदा होने के पीछे पित्त निकलना बंद हो जावे तो-जिगर की क्रिया अच्छी तरह से न होने पर अथवा

जल वायु और खाना पीना बदपरहेजी से और शराब आदि पीने-से यह बीमारी पैदा होती है।

चिकित्सा—मरक्यूरियस-जिगरकी क्रिया ठीक न होने के कारण पीलिया होने से यह दवाई अच्छी है। ऐकोनाइट देने पर ज्वर और प्रदाह आराम होने के बाद मरक्यूरियस देना चाहिये दिन भर में तीन चार खुराक देना जरूरी है।

चायना—जो मनुष्य ऐलोपैथिक दवाई के साथ पारा ज्यादा खा चुका हो उन के लिये और कमजोरी और पित्त के साथ उदरामय रहने से यह दवाइ ज्यादा फायदा करती है।

कैमोमिला - बच्चों के तोई देना चाहिये।

नक्स भोमिका - कबजियत जिगर के ऊपर दबाने से दर्द शराब पीना ज्यादा भोजन करना रात को ज्यादा देर तक जगना आदि कारण से पीलिया होने पर यह दवाई दीजाती है। मरक्यू-रीयस के पीछे यह दवाई व्यवहार करने से अच्छा फल देखा गया है।

चैलीडोनीयम- पीलिया उसके साथ जिगर और दहने कंधे पर दर्द, मुंह का स्वाद कडुआ, गाढ़ा लाल रंग की पेशाब का होना इन अवस्था में यह दवा व्यवहार होती है।

सहकारी उपाय - हलकी और जल्द पचने वाली चीज खाने को देनी चाहिये - मांस और मछली खाना ठीक नहीं है जिगर के ऊपर दर्द रहने से रोज दो तीन दफे गर्म पानी में फलालैन भि-गोकर सेक देने से ज्यादा फायदा करती है। जिगर की क्रिया बिगड़ जाने से रोग पैदा हो अथवा रोग पुराना पड़जावे तो प्रति दिन नियम से टहलना, कसरत करना, हलका खाना, और जल वायु का बदलना बहुत जरूरी है।

१९-खांसी

लक्षण - फेफड़े से होकर आवाज के साथ हवा बाहर जाती है उसी को खांसी कहते हैं। खांसी खास कोई बीमारी नहीं है बल्कि किसी बीमारी का लक्षण है। किसी बीमारी के सबब फेफड़ा और श्वास नली में कफ जमने से उसको बाहर निकालना खांसी का काम है। यह अकसर किसी कठिन बीमारी का पूर्व लक्षण है। इस लिये खांसी पर खास नजर रखकर इलाज करना चाहिये।

खांसी दो तरह की होती है। बलगम आने से गीली और बलगम न आने से सूखी कहलाती है।

१ म सूखी खांसी

चिकित्सा- ऐकोनाइट-सूखी खांसी, अथवा गीली खांसी उसके साथ बेचैनी, मुह लाल, दर्दसर प्यास, गलेके भीतर खुशकी, और जलन, पेशाब थोड़ा, खांसी के साथ बुखार रहने से उपकारी, खास करके यह दवाई पहली हालत में देते हैं।

बेलेडोना - सूखी व रोक रुक कर करने वाली खांसी गले में सुर सुरी देकर खांसी का आना जैसे गले के भीतर गर्द पड़ा हो, दर्दसर, मुहलाल रंग और गर्म गाधि में खून जम गया हो, रात में यह जाये मरीज सोने से जग उठता हो।

आरसेनिक-सुबह को पलंग से उठ कर खांसी, सीने, और पेट में दर्द, बलगम के साथ जमा हुआ खून आना।

ब्राईयोनियां-इस से सूखी खांसी तर होती है खांसी के वक्त ऐसे मालूम होकि छाती और सिर फटा जाता है और सुई चुभाने का सा दर्द तर खांसी बलगम सफेद या पीलापन या खून मिला हुआ।

नक्सवोमीका—सूखी खांसी गले में कफ का जम जाना और किसी तरह से न गिरना खांसी के वक्त में पाक अंश मे दर्द सिर में दर्द और सिर फटा जाता हो।

सुबह के वक्त और खाने के बाद खांसी का बढ़ आना और कबजियत रहना।

फॉसफरस—गला खस खस कर के वे रोक सूखी खांसी, ओर से, बोलने से, हसने से, और गाने से खांसी का बढ़ना। बलगम फेनसा, और खसदार, नमकीन, बदबू के साथ खून मिला हुआ।

शाम के वक्त सूखी खांसी में सलफर, हपिर सलफर, सीपिया, येसिड फोस।

प्रात कालमैसूखीखांसी—पेल्सेटीला, ऐनटिमकूडं, आरसिनिक,।

रात के वक्त सूखीखासी—पलसाटिला, नक्सवोमीका, कैमोमिला, केलकेरिया, मरक्यूरियस, बेलेडौना,।

तरखांसी।

चिकित्सा—ऐनटी मोनियम टट—गले मे घड़ घड़ाहट की आवाज होना, छाती कफ से भरा हुआ, भोजन के बाद खांसते खांसते के होजाना, बच्चों के दांत निकलने के वक्त की खांसी और बूढ़ो की पुरानी खासी—

इपीकाक—सांस रुकने और तकलीफ देने वाली खांसी के वक्त मालूम देना कि कफ भरा हुआ है। परन्तु निकलता नहीं बच्चा का खांसते खांसते सांस बंद होकर नीलापन होजावे जीमिचलाना और कै, का होना।

मरक्यूरियस सल—पुरानी तरखांसी, रात्री और चौमासे में बढ़जाती है गले से लेकर छाती तक जलन और दर्द का होना सरदी के सबब से सिर दूखना, जुकाम, उदरामय और बुखार

कफ निमकीन और सड़ा हुआ और लाल रंग और पतला।

आरसिनिक—बार बार पानी का पीना घेंचनी, हांपना और सांस लेने में तकलीफ का होना विशेष कर उचाई चढ़ने पर। कफ का थोड़ा आना लेकिन गिरने में ज्यादा कष्ट का होना

सलफर—हरे रंग का मीठा कफ, चर्म रोग, छाती में कफ के सबब से घड़ घड़ की आवाज होना और सुबह के वक्त खांसी का बढ़ जाना, कमजोरी और बुड्ढे आदमी के लिये उपकारी है। खांसी किसी से आराम न होती होवे और छाती पर बोझ सा मालूम होवे। दिन में तर अथवा खांसी कफ का रंग सफेद या पीला परन्तु रात्री में सूखी खांसी

पलसिटला—तर खांसी शाम के वक्त बढ़जाना दिन मे तर खांसी परन्तु रात्री मे सूखी।

३—स्वर भंग के साथ खांसी।

चिकित्सा—मरक्युरियस सौल। थोड़े सरदी के कारण खांसी और स्वर भंग

फोस फरस—बीमारी सख्त होने पर, ज्यादा खांसी अथवा स्वरभंग के साथ छाती में दर्द।

स्पनजिया—स्वर भंग और उस के साथ खांसी और सरदी, मरक्युरियस से उपकार न होने से यह दिया जाता है।

हीफर सलफर—स्वर भंग के साथ तर खांसी की उत्तम दवाई है। ओर के साथ डेली की डेली कफ आना, ठंड लगने से बढ़जाना, और पुरानी बदहजमी के साथ खांसी।

बदहजमी के साथ खांसी—नक्सवोमीका कारबोवेजीटेबिलिस, ब्राइयोनिया।

बच्चों की खांसी—कैमोमिला पलसाटिला, एनटिमटार्ट,।

के के साथ खासी—इपीकाक एनटिमटार्ट, ड्रोसेरा,।

छाती में दर्द के साथ खासी—ब्राइयोनियां, सलफर फोसफरिस।

खून के साथ खांसी—इपीकाक, आरनिका, फोसफरस, सलफर,।

पुरानी खांसी—लाई कोपोडियम, कैलीकार्ब स्पंजिया, सिक्वोडोना, सलफर, फोस फरस।

सहकारी उपाय—अकसर बीमार कोशिश कर के खासी रोक सके हैं, इस लिये जहा तक होसके ऐसी कोशिश करना उचित है।

जिन लोगों को सदा सरदी और खासी होती है उन लोगों को रोज ठंडे-पानी से छाती पीठ, गला, धोना अच्छा है। साफ जगह में रहना मुनासिब कसरत, साफ हवा, लेना चाहिये। गर्द और बदबू की जगह से परहेज करना लाजिम है- सूखी खासी में मुंह में सदा मिश्री रखना अच्छा है। गले में सुर सुराहट कर बराबर खांसी आवे तो सेकना बुरा नहीं है। अगर खांसी न आराम होवे तो सीनेका इम्तहान अच्छे डाक्टर से करा कर राय लेना मुनासिब है।

४-हूपिंग खासी

लक्षण- हूपिंग खांसी संक्रामक और फैलने वाली बीमारी है अकसर बच्चों के होती है। तनदुरुस्त बच्चे को जितनी तकलीफ

नहीं होती परन्तु रोगीले और कमजोर बच्चों को ज्यादा तकलीफ देती है और कभी कभी जान लेने वाली भी होजाती। पहले थोड़ी सरदी स्वरभंग और खांसी होती है। यह खांसी ठहर ठहर के होती है।

कभी कभी खासी इतने जोर से उठती है कि बच्चे का मुंह लाल और नीला होजाता है और ऐसा मालूम होता है कि दमबंद होजायगा और एक तरह की आवाज हुप करके होती है इसी से इसको हूपिंग खांसी कहते हैं। दो तीन घंटा बाद खांसी उठती है और रात को बढ़ जाती है।

चिकित्सा-इपीकाक रोग की पहली हालत में। सूखी खांसी जैसे कि दमबंद होजाना मालूम पड़े। ज्यादा कफ गिरता हो। दो तीन घंटा बाद दवा देना चाहिये।

ड्रोसेरा - ज्यादा आवाज से खांसी, स्वरभंग, बारबार खांसी, पसीना आना, खाई हुई चीज की कै होजाना और कफका आना हरएक खांसी के बाद एक २ खुराक देना चाहिये।

कूप्रम- साघातिक प्रकार अथवा जान लेने वाली हूपिंग खांसी। आयटा मौजूद रहेगा, और सब शरीर कड़ा, मुंह का बदरंग होजाता है इस हालत में गले में कफकी घड़ घड़ की आवाज हो तो कूप्रम, के साथ ऐन्टिमटार्ट, बारी बारीसे देना चाहिये।

सीना - पेट में कीड़ा रहने के साथ हूपिंग खांसी।

कालीबाईक्रमीकम - कफ गोंद जैसा कड़ा, बहुत और गले में लगा रहना इसी लिये कै होजावे तो देना चाहिये।

बिओडीना - रात में खांसी का बढ़जाना, गले में दर्द माथे में खून जम जाना, नाक से खून गिरना, साधारण हूपिंग खांसी में एकोनाइट के बाद, बिलोडोना, उपकारी है।

सहकारी उपाय - जल्दी पचने वाला और ताकत देने वाला पथ्य मुनासिब मिकदार में देना चाहिये। इसके विपरीत करने से खांसी बढ़जाती है। इस लिये साबूदाना अथवा बारली का पानी अच्छा है। थोड़ी थोड़ी मिश्री खाने को देना भी उपकारी है। जिससे बच्चा खुशी और चैन में रहे वह करना चाहिये॥ क्रोध अथवा और कोई कारण से उत्तेजित होने से खांसी बढ़जाती है। सरसों का तेल गर्म करके मालिश करना और गला मिजोये रखना उपकारी है। जरूरत होवे तो छाती और गले में गर्म पानी से सेक देना भी मुनासिब होता है।

५ - घुगरी खांसी

लक्षण - यह खांसी बच्चों को होती है और बच्चे को मारडालने वाली है पहले थोड़ी सर्दी मालूम देती है उसके साथ बुखार स्वर भंगता आदि लक्षण रहते हैं। ऐसी स्वर भंगता सुनने से घुंगराली खांसी का लक्षण है दो तीन घंटा रात्रि जाने के बाद बीमारी बढ़जाती है। और खांसी भी जोर करती है। बच्चा अपना माथा तकिये के पीछे की तरफ लटका देता है। सांस लेने में तकलीफ होती है। और अच्छी तरह से सांस नहीं लेसकता इस से मुंह लाल रंग का होजाता है। दो चार दिन के बाद बीमारी सख्त होजाती है और कमजोरी, सांस बंद अथवा कोल्डस आदि के सबब से मरभी जाता है।

चिकित्सा - पहले हालत में एकोनाईट, के साथ पारीस स्पंजिया दिया जाता है।

बढ़ने की हालत में - कालीबाईक्रम, स्पंजिया बेलाडोना हीपर सल्फर।

नहीं होती परन्तु रोगीले और कमजोर बच्चों को ज्यादा तकलीफ देती है और कभी कभी जान लेने वाली भी होजाती। पहले थोड़ी सरदी स्वरभंग और खासी होती है। यह खांसी ठहर ठहर के होती है।

कभी कभी खासी इतने जोर से उठती है कि बच्चे का मुह लाल और नीला होजाता है और ऐसा मालूम होता है कि दमबंद होजायगा और एक तरह की आवाज हुप करके होती है इसी से इसको हूपिंग खासी कहते हैं। दो तीन घंटा बाद खासी उठतीहै और रात को बढ़ जाती है।

चिकित्सा-इपीकाक रोग की पहली हालत में। सूखी खांसी जैसे कि दमबंद होजाना मालूम पड़े। ज्यादा कफ गिरता हो। दो तीन घंटा बाद दवा देना चाहिये।

ड्रोसेरा - ज्यादा आवाज से खासी, स्वरभंग, बारबार खांसी, पसीना आना, खाई हुई चीज की कै होजाना और कफका आना हरएक खासी के बाद एक २ खुराक देना चाहिये।

कूप्रम- साघातिक प्रकार अथवा जान लेने वाली हूपिंग खासी। खांपटा मौजूद रहना, और सब शरीर कड़ा, मुंह का लालरंग होजाता है इस हालत में गले में कफकी घड़ घड़ की आवाज हो तो कूप्रम, के साथ येन्टिमटार्ट, बारी बारीसे देना चाहिये।

सीना - पेट में कीड़ा रहने के साथ हूपिंग खासी।

कालीबाईक्रमीकम - कफ गोंद जैसा कड़ा, बहुत और गले में लगा रहना इसी लिये कै होजावे तो देना चाहिये।

विल्कोटीना - रात में खांसी का बढ़जाना, गले में दर्द माथे में खून जम आना, नाक से खून गिरना, साधारन हूपिंग खासी में ब्रोमाइड के बाद, विल्कोटीना, उपकारी है।

सहकारी उपाय - जल्दी पचने वाला और ताकत देने वाला पथ्य मुनासिब मिकदार में देना चाहिये। इसके विपरीत करने से खांसी बढ़जाती है। इस लिये साबूदाना अथवा बारली का पानी अच्छा है। थोड़ी थोड़ी मिश्री खाने को देना भी उपकारी है। जिससे बच्चा खुशी और सेहत म रहे वह करना चाहिये॥ क्रोध अथवा और कोई कारण से उत्तेजितहोने से खांसी बढ़जाती है। सरसों का तेल गर्म करके मालिश करना और गला भिजोये रखना उपकारी है। जरूरत होवे तो छाती और गले में गर्म पानी से सेक देना भी मुनासिब होता है।

५ - घुगरी खांसी

लक्षण - यह खांसी बच्चों को होती है और बच्चे को मारडालने वाली है पहले थोड़ी सर्दी मालूम देती है उसके साथ बुखार स्वर भगता आदि लक्षण रहते हैं। ऐसी स्वर भगता सुनने से घुगराली खांसी का लक्षण है जो तीन घटा रात्रि जाने के बाद धीमा धीमा बढ़जाती है। और खांसी भी जोर करती है। बच्चा अपना माथा तकिये के पीछे की तरफ पटका देता है। सांस लेने में तकलीफ होती है। और अच्छी तरह से सास नहीं लेसकता इस से मुंह लाल रंग का होजाता है। दो चार दिन के बाद बीमारी सख्त होजाती है और कमजोरी, सास बंद अथवा बांयटे आदि के सबब से मरजी आता है।

चिकित्सा - पहले हालत में एकोनाईट, के साथ परीस स्पंजिया दिया जाता है।

बढ़ने की हालत में - कालीबाईक्रम,, स्पंजिया येन्टिमटार्ट हीपर सलफर।

स्वरभग के साथ खांसी - हीपरसलफर, फोसफरस, कारबो तेजी टेबिलिस, सलफर।

हीपर सलफर - गले के भीतर कफ जम आना, सांस बंद होने का डर होना।

कार्बोवाई कोसीकम-कफ, गोंद के समान लसदार और कड़ा होने से यह दवाई हीपर सलफर से अच्छी है।

इपजिया—दिन रात घन घन करके खांसीका आना और सांस लेने में तकलीफ होना,

ऐनटिमटार्ट—गले में कफ घड घड करता हो परन्तु निकल न सका हो—ठंडा और खाक रंग का मुह कमजोरी और ठंडा पसीना।

सेवनविधि।—बीमारी सख्त होने से दस पन्द्रह मिनट बाद और ज्यादा सख्त न होने पर दो तीन घंटा बाद दवा देनी चाहिये

सहकारी उपाय।—जिस से रोगी को गुस्सा पैदा हो ऐसा काम न करना चाहिये—गले में फलालेन बांध कर सेक देना अच्छा है। बदन गर्म रखना अच्छा है। बीमारी के घटने की हालत में पानी एक मात्रपथ्य है। कभी कभी साबूदाना और बार्ली का पानी देना उचित है। एका एक कमजोरी हो जाने से पथ्य के ऊपर ध्यान रखना चाहिये। बच्चा अगर छाती का दूध पिये तो उस की माता का परहेज रखना भी जरूरी है

२०।—केचुआ अथवा पेट में कीड़ा पैदा।

लक्षण।—भूख न लगना अथवा बहुत भूख लगना, और बार बार पेशाब लगना, पेशाब मैले रंग का मुह और आंख

रक्तहीन मालूम देती हो। नाक की फुनक और गुदा में खुजावट। सोते में दांत किट किटाना और चिल्लाना

चिकित्सा ।—कैलकेरिया कार्ब—पुरानी बीमारी और शरीर में कमज़ोरी इस से बार बार कैंचुए पड़ना बंद हो जाता है।

सीना—कृमि अथवा कीड़े की अच्छी दवाई है—मुह से पानी आना जी मिचलाना पेट में काटने का सा दर्द—नाक और गुदा द्वार का खुजलाना, और सफेद रंग का मैला पेशाब होना आदि लक्षण में यह दवा देना उचित है

इग्नेशिया—गुदा द्वार में बहुत खुजावट, स्नायविक उत्तेजना मूर्छा इन लक्षणों में देना चाहिये।

टियुक्रियम—गुदा द्वार में बहुत खुजावट और छोटा छोटा कीड़ा,

मरक्युरियस-कीड़े के कारण से उदरामय, पेट में दर्द, पाखाने के जाने के वक्त ज़ोर देना, कीड़े के कारण नाक से खून गिरना ।

सलफर—और और दवाई इस्तेमाल करने के बाद यह दवाई दी जाती है जैसे कैलकेरिया बार बार कीड़ा पैदा करना बंद कर देता है वही गुण सलफर में भी है।

सहकारी उपाय ।—निमक और पानी की पिचकारी देना अच्छा है।

सब तरह की मीठी चीज़, और सड़ी चीज़, देर में पचने वाली चीज़, खाना मना है। अनार की जड़ का छीलका पानी में औटाकर पीने से कीड़ा मरजाते हैं।

स्वरभंग के साथ खांसी - हीपरसलफर, फोसफरस, कारबो वेजी केबिलिस, सलफर।

हीपर सलफर - गले के भीतर कफ जम जाना, सांस बन्द होने का डर होना।

कालीबाई कोमीकम-कफ, गोंद के समान लसदार और कड़ा होने से यह दवाई हीपर सलफर से अच्छी है।

स्पजिया—दिन रात घन घन करके खांसीका आना और सांस लेने में तकलीफ होना,

एनटिमटार्ट—गले में कफ घड़ घड़ करता हो परन्तु निकल न सकता हो—ठंडा और लाल रंग का मुंह कमजोरी और ठंडा पसीना।

सेवनविधि।—बीमारी सख्त होने से दस पन्द्रह मिनट बाद और ज्यादा सख्त न होने पर दो तीन घंटा बाद दवा देनी चाहिये

सहकारी उपाय।—जिस से रोगी को गुस्सा पैदा हो ऐसा काम न करना चाहिये—गले में फलालैन बांध कर सेक देना अच्छा है। बदन गर्म रखना अच्छा है। बीमारी के बढने की हालत में पानी एक मात्रपथ्य है। कभी कभी साबूदाना और बार्ली का पानी देना उचित है। एका एक कमजोरी हो जाने से पथ्य के ऊपर ध्यान रखना चाहिये। बच्चा अगर छाती का दूध पिये तो उस को माता का परहेज रखना भी जरूरी है

२०।—केचुआ अथवा पेट में कीड़ा पैदा।

लक्षण।—भूख न लगना अथवा बहुत भूख लगना, और बार बार पेशाब लगना, पेशाब मैले रंग का मुंह और आख

कौलिनसोनिया—अगर पुरानी बवासीर हो तो देना चाहिये ।

हाईड्रेसटिस—बहुत उमदा दवा है ये मिलाया अर्क अथवा पहला डायल्यूशन इस्तेमाल करते हैं ।

पोडोफाईलम—सख्त सूखा और कड़ा दस्त आने पर कुछभी न उतरे और पेट में दर्द होता हो ।

पुरानी बीमारी

पुरानी बीमारी में—नक्सवोमिका और सलफर हफ्ता में दो दफे नक्सवोमिका और दो दफे सलफर बारी से देना चाहिये ।

हाईड्रेसटिस एक उमदा दवा है । इस दवासे फायदा न होवे तो कैलकेरिया कार्ब, और ग्रेफाइटिस देते हैं ।

सहकारी उपाय - कभी जुलाब न ले - मामूली कब्ज हो तो हरगिज जुलाब लेना उचित नहीं है । आज कल देखा जाता है कि कोई हफ्ते में और कोई महीने में दो दफे जुलाब लेलिया करते हैं । यदि कोई चाहे कि इससे शिकायत दूर होजावे सो ऐसा नहीं है बल्कि तकलीफ बढ़जाती है ।

इस तकलीफ में पानी एक दवा है बड़े सवेरे ठंडा पानी पीना और ठंडे पानी से नहाना उपकारी है । पेट में सुद्दा अथवा गांठ पड़जावे या बहुत दिनों से कब्ज के सबब से तकलीफ होवे तो साबुन को गर्म पानी में मिलाकर पिचकारी देते हैं हर रोज मुकर्रर वक्त पर पाखाना जाना और पाखाने फिरने की हाजत होने से इस काम को तमाम करना, ठीक वक्त पर टहलना, और कसरत वगैर मामूली बातों पर ध्यान देना उचित है ।

पथ्यके बारे में भी खूब ध्यान रखना चाहिये । दूध शरबत

२१ ।—कब्ज़ियत

नियम के विरुद्ध खाना, सुस्ती, अकेले में रहना, और बार बार जुलाब लेने से जिगर की क्रिया बन्द हो जाती है और आंत की कमजोरी से यह बीमारी पैदा होती है दवाई से आंत के पट्ठों में ताकत पहुंचाने से और तेज करके असली हालत में आने से यह बीमारी जाती रहती है।

चिकित्सा ।—नक्स वोमिका—नई पुरानी हर तरह की शिकायत में फायदा करती है और बार बार पाखाने जाने की हाजत होती हो परन्तु दस्त खुल के न आने से।

ज्यादा शराब, अथवा धूम्रपान करने के कारण से बीमारी होने से ये दवा फायदा करती है।

गर्भ वती स्त्रियों को कबजियत में नक्सवोमिका, ओपीयम, सीपिया, ।

प्रसव की अवस्था में ब्राइयोनिया, प्लाटीना, ।

सवारी में घूमने से कबजियत में—प्लाटीना, पेलोमीना, ।

पाखाना की हाजत बिलकुल न होने पर-नकसवोमिका ओपीयम।

मल बहुत कड़ा होने पर लकीसिस, पिलवम, सीपिया, सलफर, प्लमम ।

बकरी के समान मेंगनी सा दस्त होने पर, सहलेसिया, लकीसिस, ।

ब्राइओनिया,—हाजत न होती हो, दर्दसर, जिगर के ऊपर दर्द, पाखाना सूखा सख्त । -

ओपीयम—आंत के मल निकालने की ताकत जाती रहे। बूढ़ों के लिये खास कर मुफीद है।

सहकारी उपाय—गर्म पानी से फलालैन के जरिये सेक करना, गर्म तेल से पेट पर मालिस करना, पेर पर लड़के को पेट के बल सुला कर उस की पीठ आहिस्ता आहिस्ता सह लाना चाहिये।

३–ग्रन्थी स्फिनू—अथवा गांठ फूलना।

लक्षण—कितनेही कारण से बदन के हर ऐक जगह की गाठ फूल जाती हैं, दर्द, सूजन, कड़ापन, लालरंग, और जलन वगैरा आदि लक्षण दिखाई देती,—ठंड लग कर अथवा और कोई कारण से गला गर्दन, बगल, रंग, वगैरह में गाठ उठते देखा गया है।

चिकित्सा—बेलोडोना–जलन के साथ सूजन, गर्मी और सरक

कैलकेरिया–गला, गर्दन, बगल पेडु आदि स्थान की गांठ सूज कर सख्त होजाने से और मास कर उस के साथ कान का बहना, ऊंचा सुनना, आदि लक्षण में यह दवाई देना, अच्छा है। ये अकसर सलफर के बाद दिया जाता है।

मरक्यूरियस–गर्मी की बीमारी के सबब होने से उपकारी है।

रसटोक्स–सामान्य गांठ की सूजन में अच्छा है।

सलफर–पारे के खाने से, गर्म की बीमारी, कंठमाला, आदि कारण से गांठ फूल जावे तो अथवा कड़ी होजावे या पकजावे तो दिया जाता है।

हीपर सल्फ—गांठ फूल कर पकजावे या पीप पड़जावे तो इसे देना फायदे मन्द होगा।

खसरा बुखार के बाद गाठ फूलजावे तो–मरक्यूरियस आयो- डाइड और कैलकेरियफास, आइयो पोटियम देना चाहिये।

वगैरः पीने की चीजआधिक काम में लासकते हैं। मास खाना अच्छा नहीं। पक्का फल जैसे पपीता आम, शरीफा वगैरा उपकारी है। भूसी मिले हुवे आटे की रोटी, दही, छाछ आदि कब्ज में फायदे मन्द है।

२—लड़कों का रोना।

बच्चे अकसर खूब ज़ोर से चिल्ला कर रोते हैं। जब बच्चे रोवे तो भूख से रोते हैं वह दूध पिलाने सेही चुप होंगे यह बात नहीं है। और जब किसी तकलीफ से बच्चे रोवें तो उन को दूध पिला कर बन्द करने की कोशिश फिजूल है।

जब लड़के रोये तब समझना चाहिये कि इस को जरूर कुछ तकलीफ है इसलिये बिमारी निश्चय कर लेना उचित है।

बेचैनी के साथ रोने से पेट की तरफ पैर उठा कर रोने से पेट में दर्द मुंह मे उगली देकर रोने से दातो मे दर्द दांत निकलने की तकलीफ और खांसते वक्त रोवे तो सीने में दर्द समझना चाहिये।

चिकित्सा—बिलोहीना-कोई बाहर का कारण नहीं देखने से यह दवा दीजाती है।

बेकोनाइट—बुखार रहने से बदन गर्म और नाड़ी तज और प्यास।

कैमोमिला—बराबर पेट की तरफ पैर उठाकर रोवे, या पेट फूलता हो, पेट मे दर्द, या दस्त पतला आता हो।

कैम्फर—कैमोमिला देने से कुछ फायदा दिखाई न देता होतो और ऐसी समझ में आवे कि बच्चे के बहुत दर्द है उस वक्त थोड़ी साफ चीनी में मिला कर थोड़ा थोड़ा खिला देना चाहिये।

नाईयोनिया—रोने के साथ कब्ज रहने से।

मरक्यूरियस आयड - पहुत दिन तक ठहरने वाला गलगंड और दवाई देने से भी बढ़ता हो। सेवन की तरकीब, स्पंजिया के समान

कैलकेरिया-कंठमाला रोग की यह अच्छी दवा है। गलगंड की शुरूआत होते ही दवा करनी चाहिये नहीं तो बढ़ जाने से फिर आराम नहीं होता है।

२५ गले में घाव ।

लक्षण - गले के भीतर सूजन लाल रंग निगलने में और श्वास लेने में तकलीफ और कभी कभी बुखार रहता है। मामूली तरह पर बिमारी हो तो जल्द आराम होजाता है। अगर सख्त बीमारी होवे तो गले में घाव होकर श्वास की नली तक पहुंचता है। उस हालत में श्वांस रुकजाता है और नाक से पानी निकलती है - सरदी, जोर से बोलना, गाने से, लेकचर देने से, पारा खाने से या गर्मी होने से गले में घाव होता है।

चिकित्सा- बिलेडोना - गले के भीतर लालवर्ण निगलने में तकलीफ होती हो।

मरक्यूरियस - अगर ऐसा मालूम देता हो कि गले में कुछ अटका हुआ है। और रात में तकलीफ बढ़जाती हो। और कभी कभी अधिकतर बहती हो।

लेकेसिस - गला सुरसुराता हो जिससे जल्दी जल्दी खांसी आती हो और मालूम होता हो कि श्वास बंद होगया है। गले में दर्द और जलन होती हो।

आरसिनिक - ज्यादा कमजोरी रहने में और गले के भीतर मालूम देता हो कि सड़ गया है तो इसे देना चाहिये।

ऐकोनाइट - गले के भीतर खुश्की, और गर्मी, आवाज का

नई गाठ फूलने से—फिलोर्डोना, रसटॉक्स, हीपर सल फर, सैलीसिया,।

पुरानी गाठ फूलने मे—आयोडियम, मरक्युरियसआयोडाइड, काली आयोडाइड, कैलकेरिया, सलफर।

सहकारी उपाय दर्द की जगह को फलालेन आदि कपडे मे ढाके रहना - सरदी अथवा पानी से बचाव रखना चाहिये दर्द की जगह पर चूना लगाना उपकारी है। फलालेन गर्म पानी मे भिगोकर सेक देना भी उपकारी है।

२४ गलगड

कठ के ऊपर गाठ निकल कर फूल जाती है। गाठ बढने से श्वास नली पर दबाव पडता है जिससे श्वास रुकने लगती है कोई कोई कहते हैं कि बनिस्बत पुरुष के औरतों को ज्यादा होती है विशेष कर ज्यादा मेहनत करने वालों को यह रोग होता है गलगड स्थान और आब हवा की खराबी से होता है।

चिकित्सा - स्पजिया - अकसर यह दवा फायदे मन्द होती है। सुबह स्याम दोनों दफे ६ दिन तक खिलाकर १ हफ्ते तक बंद रखना चाहिये उसको फिर शुरू करके ६ दिन बाद बंद करदे।

थ्यूजा - जो गर्म फूल आया करती हैं और उसमें दर्द भी हो तो यह देना चाहिये।

आयोडीन - स्पंजिया से फायदा न होने पर यह दवा उमदा है गलगंड कडा अथवा असाध्य होने से और कोई विशेष लक्षण न रहने से यह देना चाहिये।

मरक्यूरियस भायर - बहुत दिन तक ठहरने वाला गलगण्ड और दवाई देने से भी बढ़ता हो। सेवन की तरकीब, स्पञ्जिया के समान

कैलकेरिया-कंठमाला रोग की यह अच्छी दवा है। गलगंड की सुरूआत होते ही दवा करनी चाहिये नहीं तो बढ़ जाने से फिर आराम नहीं होता है।

२५ गले में घाव ।

लक्षण - गले के भीतर सूजन लाल रंग निगलने में और श्वास लेने में तकलीफ और कभी कभी बुखार रहता है। मामूली तरह पर बिमारी हो तो जल्द आराम होजाता है। अगर सख्त बिमारी होवे तो गले में घाव होकर श्वास की नली तक पहुँचता है। उस हालत में श्वांस रुकजाता है और नाक से वात निकलती है - सरदी, जोर से बोलना, गाने से, लेकचर देने से, पारा खाने से या गर्मी होने से गले में घाव होता है।

चिकित्सा- बिलेडोना - गले के भीतर खाबन्धा निगलने में तकलीफ होती हो।

मरक्यूरियस - अगर ऐसा मालूम देता हो कि गले में कुछ अटका हुआ है। और घाव में तकलीफ बढ़जाती हो। और कभी कभी अधिकतार बहती हो।

हेकेसिस - गला सुरसुराता हो जिससे जल्दी जल्दी खांसी आती हो और मालूम होता हो कि श्वास बन्द होगया है। गले में दर्द और जलन होती हो।

आरसेनिक - ज्यादा कमजोरी रहने से और गले के भीतर मालूम देता हो कि सड़ गया है तो इसे देना चाहिये।

फेकोमाइट - गले के भीतर खुश्की, और गर्मी, आवाज का

बैठ जाना, और उसके साथ बुखार रहने से—अगर सर्दी के सबब से हो तो पहली अवस्था म यह दवाई देनी चाहिये।

बैराइटाकार्ब - बिलोडोना या मरक्यूरियस, से कोई फायदा न दीखे तो अथवा टैंटुओं के दोनों तरफ प्रदाह होने से दिया जाता है।

सहकारी उपाय - एक कपड़े के छोटे टुकड़े को ठंडे पानी में भिगोकर निचोड़कर गले के चारों तरफ लपेट देवें और उसके ऊपर दो तीन, तै, फलालैन लपेट देने से रात के वक्त इस तरकीब के करने से गले का दर्द बहुत जल्द जाता रहता है। बेरिस्टर व्याख्यान देने वाले, व्यवसाय और गाने वाले जिनको स्वर यन्त्र के ऊपर जोर देने का काम पड़ता है उन्हें डाढ़ी रखना चाहिये।

२६ — गर्भ अवस्था की पीड़ा

गर्भ की हालत में कुछ बातें देखने में आती है। इसी लिये उनके इलाज अलग लिखे जाते हैं गर्भ के समय की जो तकलीफ है उन सबों के इलाज में होशयारी रखना जरूरी है जिन शिकायतों में किसी तरह की बुराई की उम्मेद न हो उनका इलाज करना जरूरी नहीं है।

१ वमन।

मुंह में पानी आना जी मिचलाना अथवा कै, दोनों गर्भावस्था की शुरू हालत के खास लक्षण हैं। अकसर यह सुबह या भोजन के बाद अथवा भोजन से पहले होती है।

चिकित्सा।—इपीकाक, हर वक्त जी मिचलाना, पित्त अथवा कफ के साथ वमन होना।

नक्सवोमिका—एक उम्दा दवाई है।

मुह में ज्यादा पानी आने से मरक्यूरियस देना चाहिये।

पलसेटिला—शाम और रात्री के समय के होने पर उम्दा दवाई है।

सहकारी उपाय।—सुबह बिछौने से उठते ही गरम दूध पीने से उपकार होता है।

२।—कबजियत

गर्भ अवस्था की पूरी हालत में यह लक्षण बहुत होता है इसे तकलीफ समझनी ठीक नहीं है। परन्तु जब कब्ज के सबब कोई दूसरी तकलीफ जैसे अरुचि अनींद्रा तथा अजीर्ण होवे तो दवा का इस्तेमाल करना जरूरी है।

चिकित्सा।—नक्सभोमिका—उम्दा दवाई है। इस से कोई फल न होने में ब्राइयोनियां देना चाहिये। अगर और दवाओं से फायदा न पहुंचे तो सीपिया देते हैं। किसी किस्म का जुलाब देना मना है। दूध पका हुआ मीठा फल, ठंडा पानी पीना और ठंडे पानी से नहाना अच्छा है।

३।—उदरामय—पेट की बीमारी

गर्भ की अवस्था में उदरामय होना बहुत खराब है इस से बहुत कमजोर होकर गर्भ नष्ट हो सकता है।

चिकित्सा।—कैमोमिला उम्दा दवाई है।

पलसेटिला—कैमोमिला के बाद देते हैं खास कर पाखाना हरे रंग का होवे और पतला, पाखाना फिरने के पहले पेट में दर्द होवे।

सलफर अगर और किसी दवा से फायदा न होवे तो इस देते हैं।

छाती में जलन होने से चायना देते हैं। और खाने की बदपरेहजी होने से पल्सेटिल्ला देते हैं।

जीभ का स्वाद खट्टा और कड़वा होवे तो नक्स वोमीका अथवा चायना के साथ बारी से देना चाहिये खाने की तरफ ज्यादा खयाल रखना चाहिये जिस से बीमारी जल्दीदूर होजावे उस पर ध्यान रखना चाहिये।

४—गर्भपात यानी हमल गिरना।

गर्भस्राव होना बहुत संघातिक है इस से खाली बच्चे कीही जान नहीं जाती बरन्‌ औरत की जिन्दगी भी खतरे में पड़जाती है। एक दफे गर्भ गिरने से दूसरी दफे फिर उसी वक्त पर गर्भ गिरने का डर रहता है।

लक्षण। मासिक अथवा रजस्वला धर्म होने के पहले जैसी तबियत बिगड़ जाती है गर्भ गिरने के पहले भी एसी ही हालत होती है उस के बाद बे-बरदास्त दर्द, थोड़ा अथवा ज्यादा खून गिरना उस के बाद पानी निकलने के साथ सवा यानी बच्चा निकल आता है। कई तरह के बाहरवी सबब से जैसे कि चोट लगना अथवा पैर फिसलना बहुत भारी चीज उठाना रंज और तकलीफ आदि कारण से गर्भ गिर जाता है।

चिकित्सा। सिकेली—ज्यादा प्रसव का दर्द उस के साथ काले रंग का जमा हुआ खून गिरना पूरे वक्त के हमल गिरने में ज्यादा मुफीद है।

सबाइना—गर्भ स्राव, ज्यादा उज्वल लाल रंग के खून का गिरना जरायू में गर्मी और दर्द, मालूम देता होवे या जिस को तीसरे महिने हमल गिर जाता हो उन को उपकारी है।

एकोनाइट—नब्ज़ पूरी और तेज खून तेज करने वाले लक्षण मोजूद रहें तो यह या इस के साथ दूसरी दवाई पारी से देनी चाहिये गर्भ गिरने का डर या मरजाने का डर होवे तो यह उपकारी है।

सानिका-गिरना, चोट लगना ज्यादा, मिहनत, आदि कारण से गर्भ गिरने का डर हो तो दूसरी दवाई के साथ यह दवा देने से आश्चर्य फल मिलता है। हमल गिरने के पहले जिस वक्त तबियत कुछ खराब हो उस समय यह दवा देने से गर्भ गिरने का डर नहीं रहता है।

सहकारी उपाय। मामूली खून देखतेही बीमारको आराम से रहना चाहिये जबतक कुछ भय मिटना जावे उसी तरह से रहना चाहिये। खासकर पैरों कोही स्थिर कर के न रखना चाहिये बल्कि सारे शरीर को स्थिर रखना मुनासिब है। पुरुष के संग भोग, मनकी चिन्ता, ज्यादा मेहनत, खराब चीज खाना, इन बातों से परहेज रखना चाहिये।

रोकने की तदबीर—जिनका एक दफे गर्भ गिर चुका हो उन को फिर गर्भ रहते ही खासकर ठीक उसी वक्त जिस वक्तपहिले गर्भ गिर चुका हो होशियारी से रहना चाहिये पहिले जिस वक्त गर्भ नष्ट हुआ हो उसके दो तीन महीने पहिले से दिन में एक दफे, या दो दफे सीकेली, या सबाईना इस्तेमाल करना चाहिये।

गर्भ पहले दो चार महीने में गिरने स सबाईना, और अखीर वक्त में सीकेली देना चाहिये।

बदन के तनदुरस्त रखने को हर तरह की कोशिस करना जरूरी है।

५ - पैरफूलना।

गर्भ की पूर्ण अवस्था में औरतों के पैर, और रान यहां तक कि स्त्री जनने की इन्द्री तक फूल जाती है।

जरायु के भीतर बच्चे के भारी बोझ पड़ने से शरीर के निचले हिस्से में दौरान खून में बाधा पड़ जाना ही इसका असल कारण है।

चिकित्सा—आर्सेनिक पैर ठन्डे, सूजन का बढ़जाना और कमजोरी, नाड़ी दुर्बल

एपिस—जल्दी २ पैर फूलजाना और पेशाब करने में तकलीफ।

चायना – उदरामय, पेचिस आदि कारण से कम जोरी होने पर।

सलफर - पहिले चर्मरोग की बीमारी हो और गर्भ होने से जाती रहे तो यह उपकारी है।

सहकारी उपाय - बैठने के समय पैर ऊंचे रखने। खड़े रहने से चलना फिरना अच्छा है। रात में सोने से पैर की सूजन उतर जाती हो।

६७।—चक्षु प्रदाह (अथवा आंख दुखना)।

लक्षण। आंख का सफेद हिस्सा लाल हो जाना आंखों में गर्मी और दर्द आंख में रेत गिरने के माफिक दुखना, प्रकाश असह्य, आंख सूखी मालूम होना अथवा आंख से पानी गिरना। इसके साथ साथ कभी कभी बुखार भी रहता है। आंखों में गर्दा धूआ, धूप, शराब ठंडी हवा तेज प्रकाश, लगने से यह बीमारी होती है।

१—नई आँख आने का दर्द

चिकित्सा एकोनाइट—हर किस्म की नई आँख आने की और खासकर जिस वक्त ज्यादा दर्द हो रोशनी देखी न जावे तो इस दवा को देते हैं। नाड़ी अस्थ, बदन का सूखापन, प्यास और ठंड लगकर बीमारी होने से।

आरनिका—किसी प्रकार के चोट लगने के कारण से आंख आवे तो यह दवाई देनी चाहिये।

आर्सेनिक—सर्दी लगकर कमजोर आदमी की आंख आने से आंख में जलन दार कीचड़ अथवा मैल आना आंखों में जलन और गरम मालूम होने से यह उपकारी है।

बिलाडोना—आंखों का लाल रंग ज्यादा तेज सहन न करना आंखों के चारों तरफ और भीतर काटने का सा दर्द मालूम देवे तो देते हैं। यह दवाई कभी कभी एकोनाइट के साथ पारी से देते हैं।

यूफ्रेशिया—ठंड लगकर आंख आना आंख से ज्यादा पानी गिरता हो आंख में रेत पड़ने कासा दर्द होता हो। माथे और नाक की जगह सख्ती लगने कासा दर्द। नाक से पानी गिरना खास लक्षण हैं।

मरक्यूरियस सोल—पहले पानी जिसके बाद कीचड़ और पीप गिरना आंखों के पलक बंद होजाते हों। आंखों में बहुत दर्द और खुजली होना, यह अकसर बिलाडोना के बाद दीया जाता है।

पलसटिल्ला—आंखों में सुई चुभने कासा दर्द बाहर हवा में जाने से आंखों से बहुत पानी गिरना अथवा पलक फूल जाना-

हीपरसलफर—पीव के साथ आंखों में दर्द।

५ - पैरफूलना ।

गर्भ की पूर्ण अवस्था में औरतों के पैर, और रान यहां तक कि स्त्री जनने की इन्द्री तक फूल जाती है ।

जरायू के भीतर बच्चे के द्वारा बोझ पड़ने से शरीर के निचले हिस्से में दौरान खून में बाधा पड़ आना ही इसका असल कारण है ।

चिकित्सा—आर्सेनिक पैर ठन्डे, सूजन का बढ़जाना और कमजोरी, नाड़ी दुर्बल

एपिस—जल्दी २ पैर फूलजाना और पेशाब करने में तकलीफ ।

चायना—उदरामय, पेचिस आदि कारण से कमजोरी होने पर ।

सलफर - पहिले चर्मरोग की बीमारी हो और गर्भ होने से जाती रहे तो यह उपकारी है ।

सहकारी उपाय - बैठने के समय पैर ऊंचे रखने । खड़े रहने से चलना फिरना अच्छा है । रात में सोने से पैर की सूजन उतर जाती हो ।

२७ ।—चक्षु प्रदाह (अथवा आंख दूखना) ।

लक्षण । आंख का सफेद हिस्सा लाल हो जाना आंखों में गर्मी और दर्द आंख में रेत गिरने के माफिक दूखना, प्रकाश असहय, आंख सूखी मालूम होना अथवा आंख से पानी गिरना । इसके साथ साथ कभी कभी बुखार भी रहता है । आंखों में गर्दा, धूआ, धूप, खराब ठन्डी हवा तेज प्रकाश, लगने से यह बीमारी होती है ।

कीड़े रहते हैं उन्हीं से यह बीमारी पैदा होती है। खुजली होना ही इसका खास लक्षण है। यह कीड़ा अक्सर बदन की नरम जगह में पैदा होता है लड़कों के चूतड़, और रान, पैर व हाथ, में अक्सर होता है छोटी छोटी फुनसी न सारे बदन में घाव होजाते हैं। इसी को पक्का खाज कहते हैं।

चिकित्सा—सलफर—खुजली और पका खाज दोनों बीमारियों की अच्छी दवाई है दिन में दो तीन दफे दिया जाता है। बेशुमार खुजाहट, जैसे चमड़ा फाड़ डालने की इच्छा हो रात के समय खुजली बढ़जावे। खुजाहट के बाद जलन होना आदि सलफर के लक्षण हैं।

इसके सिवाय बगैर पीप, अथवा खून की सूखी खुजली में जब तक कि आराम के लक्षण दिखाई न दें तब तक मरक्यूरियस, और सलफर तीन चार दिन बाद बारी बारी से देना चाहिये अगर इससे फायदा न हो तो आरसेनिक कारबो वेजीटेबिलिस हीपरसल्फ देना चाहिये। पकाखाज में सलफर, और लाइकोपोडियम, बारी से तीन चार दिन बाद देना चाहिये। खाज सूखने की हालत पर आने से कारबोवेजि टेबिलिस, और मरक्यूरियस देना चाहिये। सलफर और, और लाइको पोडियम से कोई फायदा न होवे तो रोज एक खुराक कौसटिकम देना चाहिये। अगर इस से भी फायदा न होवे तो एक दिन बाद एक दिन एक खुराक मरक्यूरियस देना चाहिये।

सहकारी उपाय---गंधक की मरहम लगाने से ज्यादा फायदा होता है। गर्म पानी और साबन से अच्छी तरह धोकर मरहम लगाना चाहिये जो लोग खाज की बीमारी

आरजन्टमनाइट्रीकम—पत्तों का पीप के साथ आखों में दर्द के यह उमदा दवाई है।

सहकारी उपाय—आख को तेज करने वाली चीजों से बचाना चाहिये। और रोगी को पूरी या आधी अंधेरी कोठरी में बंद करके रखना चाहिये। बीच बीच में थोड़े गर्म पानी में अथवा दूध में पानी मिला कर आंख धोना अच्छा है। आंख आने के साथ अगर बुखार रहे तो खाने पीने का परहेज जरूरी है। जब तक आख को पूरी तरह से आराम न होवे तब तक धूप, रोशनी, अथवा गरदा में बाहर निकलना नहीं चाहिये। आखों को रोशनी और गरदा से बचाने के लिये नीले रंग अथवा हरे रंग का चश्मा लगाना चाहिये।

२--पुरातन चक्षु प्रदाह।

लक्षण—अकसर गई आख आने के समय ध्यान न देने अथवा इलाज न कराने से पुरानी हालत में होजाती है। तरुण अवस्था में पूरी तरह आराम न होने पर काम के लिये बाहर आने से, यह बीमारी आराम न होकर पुरानी होजाती है।

चिकित्सा—सलफर पहले काम में लाया जाता है।

केलकेरियाकर्ब—सलफर के बाद दिया जाता है।

हीपर सलफर—यदि पीड़ा के आराम होने में देर लगे तो यह देनी चाहिये सिलीशीया, और मरक्यूरियस, के बाद उमदा दवाई है।

२८--खुजली और पक्काखाज

यह एक तरह का छूत का रोग है। चमड़े के नीचे छोटे छोटे

कीड़े रहते हैं उन्ही से यह बीमारी पैदा होती है। खुजली होना ही इसका खास लक्षण है। यह कीड़ा अकसर बदन की नरम जगह में पैदा होता है बच्चों के चूतड़, और रान, पैर व हाथ, में अकसर होता है छोटी छोटी फुनसी से सारे बदन में घाव होजाते हैं। इसी का पका खाज कहते हैं।

चिकित्सा—सलफर—खुजली और पका खाज दोनों बीमारियों की अच्छी दवाई है दिन में दो तीन दफे दिया जाता है। बे शुमार खुजावट, जैसे चमड़ा फाड़ डालने की इच्छा हो रात के समय खुजली बढ़जावे। खुजावट के बाद जलन होना आदि सलफर के लक्षण हैं।

इसके सिवाय बगैर पीप, अथवा खून की सूखी खुजली में जब तक कि आराम के लक्षण दिखाई न दें तब तक मरक्यूरियस, और सलफर तीन चार दिन बाद बारी बारी से देना चाहिये अगर इससे फायदा न हो तो आरसेनिक कारबो वेजीटेबिलिस हीपरसल्फ देना चाहिये। पकाखाज में सलफर, और लाइकोपोडियम, बारी से तीन चार दिन बाद देना चाहिये। खाज सूखने की हालत पर आने से कारबोवेजि टेबिलिस, और मरक्यूरियस देना चाहिये। सलफर और, और लाइको पोडियम से कोई फायदा न होवे तो रोज एक खुराक कौसटिकम देना चाहिये। अगर इस से भी फायदा न होवे तो एक दिन बाद एक दिन एक खुराक मरक्यूरियस देना चाहिये।

सहकारी उपाय-- गंधक की मरहम लगाने से ज्यादा फायदा होता है। गर्म पानी और साबन से अच्छी तरह धोकर मरहम लगाना चाहिये जो लोग खाज की बीमारी

में मुब्तिला है उन की धोती अथवा अंगोछा दूसरे को न इस्तेमाल करना चाहिये। बीमारी आराम हो जाने पर भी धोती वगैर धोबी से बिना धुलाये काम में न लेना चाहिये। क्योंकि उन कपड़ों में इस बीमारी के कीड़े रह जाते हैं। और यह कीड़ा फिर शरीर में घुस कर बीमारी पैदा करते हैं।

दवाई लगाने अथवा खाने से साफ सुथरा रहना अच्छी दवाई है। बीमारी की तकलीफ में हर एक मरहम लगाना उचित नहीं है।

२६ ।— ज्वर (बुखार)

ज्वर अथवा बुखार की बहुत किस्में हैं। इस के भीतर सर्दी बुखार सामान्य बुखार, हर वक्त बना रहने वाला बुखार सविराम और मेलेरिया ज्वर, सन्निपातिक ज्वर, अतिसार विकार ज्वर प्रधान हैं॥ अखीर लिखे हुए दोनों किस्म के बुखार सख्त और मार डालने वाले हैं। अकसर हर एक बीमारी के साथ बुखार रहता है। अथवा अखीर हालत में बुखार आ जाता है उस समय केवल बुखार का इलाज न करके उस बीमारी का इलाज करना लाजिम है। ज्वर किस को कहते हैं इसे हरएक आदमी जानता है। बुखार के समय शरीर के हर एक हिस्से में अकसर अलग अलग लक्षण दिखाई देते हैं। परन्तु बुखार के जो खास थोड़े लक्षण हैं उनमें से थोड़े नीचे लिखे जाते हैं।

१ ।— शरीर का गर्म रहना बुखार का एक खास लक्षण है। गरमी ताप देखने के लिये तापमान (थरमामेटर) यन्त्र

इस्तेमाल करते हैं। तापमान यन्त्र की ६८ डैसीमल ४ (करीब साढे अट्ठानवे) डिग्री स्वाभाविक उत्ताप होता है। १०१ हो जाने से सामान्य बुखार १०३ होने से मध्यम १०५ अथवा १०६ होने से बहुत तेज बुखार कहलाया जाता है इस यन्त्र द्वारा बुखार की परीक्षा करना बहुत सहज है। जो शख्स नब्ज देखना नहीं जानते उन को यह यन्त्र रखना जरूरी है। तापमान यन्त्र कांच का बनता है इसे हुशियारी से इस्तेमाल न करने से बहुत जल्दी टूट जाता है।

२।—दोयम खून के ठीक न चलने से नब्ज जल्दी २ चलती है। नब्ज का जोर से चलना बुखार का, सब से बड़के एक खास लक्षण हैं ऐसा कभी हो नहीं सका कि नाड़ी जोर से चलती हो और और बुखार न हो नाड़ी बुखार होने से ही तेज चलती है। बहुत थोड़ा बुखार भी नब्ज द्वारा मालूम हो सका है। नब्ज देखना आदत और अभिज्ञता का काम है।

३।—पसीना निकलना बंद-बदन का सूखना, पसीना न आना कबजियत, मुह का सूख जाना, पेशाब का लाल रंग और थोड़ा होना।

४।—श्वास क्रिया का न ठीक होना—तन्दुरुस्त हालतसे ज्यादा श्वांस चलती है।

५।—स्नायु यन्त्र का न ठीक होना। कांपना, थकावट, सिर में दर्द, शरीर में दर्द बेचैनी, बकना, आदि स्नायु विकार के लक्षण हैं।

६।—साधारण लक्षण—खाई हुई चीज का ठीक तौर पर शोषण न होने से शरीर दुबला, कमजोर, मांसपेशी, मेदा, खून आदि सूख जाते हैं बुखार बहुत दिन का हो जाने से दा-

२—सामान्य ज्वर ।

ठंड लगकर अथवा भीगी धोती रहने से, पानी में भीगने से, बहुत शारीरिक और मानसिक श्रम खाने के अनियम आदि कारणों से यह बुखार होजाता है। पहले जाडा अथवा कंप देकर बुखार आता है। चमड़ा सूखा और गरम, शरीर में दर्द, प्यास, माथे में दर्द, नाडी तेज, और जल्द जल्द श्वांस, भूक कम, थोडा पेसाब आदि लक्षण मौजूद होते हैं इस बुखार के साथ अगर भीतर के कोई यंत्र का प्रदाह न रहे तो जल्दी आराम होजाता है।

चिकित्सा— ऐकोनाइट बहुत उमदा दवाई है। इसका १क्रम एक एक बूंद दो तीन घंटा बाद देने से पसीना निकलकर शरीर की गरमी कम होजाती है और बुखार जाता रहता है।

विलोडौना—बकना बेहोशी आंख की पुतली का बढ जाना सिर में दर्द रहना यह ऐकोनाइट,के साथ बारीसे दियाजाता है।

ब्राइयोनियां—माथे में दर्द खासी श्वांस लेने और निकालने में तकलीफ, जीभ के ऊपर पीलापन मैला, कब्ज, शरीर में दर्द, पानी पीने के बाद पित्त और कै होना बहुत प्यास,मुंह लाल रंग का होना।

आरसनीकम—बुखार का हद तक बना रहना,प्यास न लगना छोटी नसों की कमजोरी, नाडी मुलायम, आदि लक्षण में यह दिया जाता है।

पेट की शिकायत रहने से नक्सभोमीका, इपीकाक, पलस-टिला, देना चाहिये।

पित्त का लक्षण ज्यादा रहने से—ऐकोनाइट ब्राइयोनियां नक्सभोमिका देना चाहिये।

पीड़ाका जोर रहने से सिफ्यूटा सीना, मरक्यूरियस, स्पाइजिलिया देना चाहिये।

बदहजमी में बुखार आवे तो - इपीकाक, पलसटिल्ला, ऐन्टीमोनियम, नक्सवोमीका, सलफर देना चाहिये।

सहकारी उपाय - बीमार का मकान बिना आदमी, ठंडा, हवादार, बिसतर साफ, रोगी की इच्छा के माफिक, बिछौना की चादर हमेशा बदलकर पानी में धो डालनी चाहिये प्यास मिटाने के लिये बार बार ठंडा पानी अथवा बरफ मिला हुआ पानी थोडा थोडा करके देना चाहिये। पथ्य, साबूदाना बारली, अरारोट, बुखार आराम होने के बाद दूसरा पथ्य तजवीज करना चाहिये।

३ - अविराम ज्वर।

बुखार हर वक्त बना रहे अथवा सुबह को बदन की ताप कुछ कम हो फिर शाम को बुखार चढ़ आवे तो उसको अविराम ज्वर अथवा स्वल्पविराम ज्वर (Remittent Fever) कहते हैं। पहले जाड़ा देकर फिर शरीर की गरमी बढ़जाना - शरीर में जलन, प्यास, बदन सूखा, कब्ज, कै, पेट में दर्द, सिर में दर्द आदि लक्षण होते हैं बीमारी सख्त नहो तो दो एक हफ्ते के अन्दर आराम होजाता है। कभी २ यह बुखार मारने वाली हालत पर पहुंच जाता है। सहज में आराम न हो कर अगर पीड़ा बहुत बढ़जावे तो शरीर में गरमाई चढ़ जाती है और ज्वर धीरे धीरे बढ़ कर १०५ अथवा १०६ तक हो जाता है। रोगी कमजोर होजाता है और नाड़ी धीमा और जल्द २ चलती है और बकना आदि लक्षण दिखाई देते हैं बालकों की

अविराम ज्वर में अकसर यह हालत देखने मे आती है।

चिकित्सा—ऐकोनाइट उमदा दवाई है सरदी के सबब से बुखार शरीर में दर्द आदि लक्षण में यह उपकारी है।

चिलोडोना—[माथे का लक्षण] जैसे सिर मे दर्द बकना मुह, का लालरंग, नींद न आना, प्यास बेचैनी, आदि रहने से यह दवाई देनी चाहिये।

वेरेट्रम विरिडि—कपाल मे बहुत दर्द और कै, करने की इच्छा, और कमजोरी,।

जलसीमीनम—अविराम ज्वर की एक उमदा दवाई है विशेष कर जहा स्नायु विकार के लक्षण रहैं।

सहकारी उपाय—अविराम ज्वर में देखो

४—सन्निपात और अतिसार विकृत ज्वर॥

डॉक्टरी मत के अनुसार सन्निपात विकार अथवा मस्तिष्क विकार ज्वर को टाईफस फीवर कहते हैं। और अतिसारविकृत अथवा आंत्रिकत विकार ज्वर को टाईफोइड फीवर कहते हैं।

अविराम ज्वर धीरे धीरे आराम न होकर, पाच, छै, सात, अथवा नवे दिन के भीतर बीमार के शरीर में एक प्रकारकी फुन्सी निकलने से अथवा धीरे धीरे बकना आदि मस्तिष्क लक्षण होने से ऊपर लिखे बुखार का सन्देह होता है। मस्तिष्क के बुखार मे अकसर अतिसार नहीं रहता। आंतृक बुखार में अतिसार रहता है। इस लिये इन दोनो बुखारों का फरक निश्चय करना बहुत मुशकिल है। यह दोनो बीमारी बहुत सांघातिक हैं, इस लिये इन–के इलाज का बोझ अच्छे डाक्टर को देना चाहिये।

१। — सविराम ज्वर— (बुखार का छोड़ २ कर आना।)
यह बुखार हम लोगों के देश में ज्यादातर देखा जाता है। मैलेरिया जहर के साथ मिल कर औरभी भयानक होजाता है। आज कल मैलरिया का हरजगह में प्रभाव देखा जाता है। इसके ऊपर कुईनैन, का बेमुनासिब व्यवहार से और भी दूना नुकसान होयता है॥ यह बुखार छोड़ २ कर होता है। इस में तीन अवस्था अलग २ देखी जाती है। प्रथम— ठंड अथवा जाड़े की अवस्था —दूसरे गर्मी की अवस्था तीसरे पसीना की अवस्था पहिले कपकपी अथवा जाड़ा देकर बुखार आता है इसके साथ साथ माथे में दर्द, प्यास, पदेन में दर्द आदि रहता है। आध घंटा से लेकर तीन चार घंटा बाद गरमी की अवस्था शुरू होती है इस अवस्था में चमड़ा का चमड़ा खुश्क बहुत गरमी प्यास, नाड़ी पूरन और जल्द, बेचैनी आदि रहती है। इस के कई घंटे के बाद पसीना की अवस्था आजाती है पसीना आने से बीमार को आराम मालूम देता है। और और कष्ट दूर हो जाते हैं। दुबारा बुखार आने के समय तक रोगी आराम में रहता है, इसको विराम समय कहते हैं

यह बुखार तीन तरह का होता है—(१) रोज बुखार यानी २४ घंटे के बाद बुखारका आना (२) एक दिन बाद बुखार अथवा ४८ घंटा के बाद बुखार आना ॥ (३) दो दिन नागा देकर यानी ७२ घंटा के बाद बुखार आना, इस बुखार के साथ यह अवस्था रहते हैं—भूक कम होना, खून का कम हो जाना, तिल्ली और जिगर का बढ़ जाना, शरीर में शोथ (सूजन) कब्ज, उदरामय तथा मुंह में घाव होजाते हैं।

चिचिरसा—चायना—बुखार आने के पहले जी मिचलान सिर में दर्द, भूक न लगना,—जाड़े के पहिले और गर्म अवस्था में प्यास, हर दफे पानी पीने के बाद जाड़ा मालूम देना नींद के समय अथवा कपड़ा से बदन ढांकने पर बहुत पसीना आजाना बुखार उतरने के वक्त बहुत कमजोरी कान में भीं, भीं, की आवाज होना सिर घूमना, खांसने में अथवा अगाड़ी झुकने से तिल्ली और जिगर में दर्द मालूम होना। जाड़ा ज्यादा देर तक रहना पसीना ज्यादा आना भूक न लगना, और पानी अच्छा न लगना। मलेरिया फैली हुई जगह में यह दवाई ज्यादा फायदे मद है। कुनैन इस बीमारी की उमदा दवा है परन्तु ब मुनासिब इस्तेमाल से खराब नतीजा पैदा करती है।

आरसिनिक -पुराना जाड़े का बुखार जिस वक्त तीनों हालत साफ साफ जाहर न देती हों, जलन के साथ गरमी, तबियत न भरने वाली प्यास, बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना, पानी पीने के बाद कै होना ज्यादा कमजोरी, पसीना अकसर न रहना तिल्ली और जिगर में दर्द, पाकशय में दर्द, मुंह का रंग पीला, और सूजन, दिन में १ बजे से दो बजे के भीतर अथवा रात में बारह बजे से दो बजे के भीतर बुखार, आता है, कुइनेन बे मुनासिब के इस्तेमाल से बुखार, पारी बुखार, दो दिन नागा से बुखार, तीन दिन नागा से बुखार अथवा दो तीन दफे दिन रात में बुखार आने से यह दवा फायदा करती है।

नक्सवोमीका - अकसर रात में अथवा सुबह के वक्त बुखार आना, पेटकी हालत खराब होजाना, कब्ज, जीभ सफेद

अथवा पीलापन, जाड़ा बहुत तेज और देर तक रहने वाला, बदन में गरमी ज्यादा और गरमी रहने पर भी बीमार की तबियत मोढने को चाहती हो जाड़े के वक्त सिर में दर्द, बुखार के समय सिरमें दर्द, सिर घूमना, मुंह लाल रंग, छाती में दर्द, और कै होना।

इपीकाक - जाड़ा कम, परन्तु गरमी ज्यादा, जमाई अथवा बदन टूटकर और मुंह में पानी आकर बुखार का आना, बाहर से गरमी पहुंचाने से जाड़े का बढजाना, जाड़े के वक्त प्यास न रहना अथवा गरमी के वक्त में प्यास रहना। ज्यादा कै की इच्छा अथवा कै, होना, विराम अवस्था में पेट में गड़बड़ रहना, कुइनैन के बेमुनासिब इस्तेमाल से पैदा हुए ज्वर में यह दवा बहुत फायदेमन्द है।

पल्सटिला - ३ बजे शाम से ५ बजे तक बुखार आना, एक ही वक्त में जाड़ा और गरमी, बगैर प्यास शून्य बुखार, अथवा गरमी की अवस्था में सामान्य प्यास, मुंह का स्वाद बिगड़ जाना, जीभ का रंग मैला, उदरामय, बुखार के लक्षण हर वक्त बदलना, दो दिन का बुखार कभी ठीक नहीं होता।

विरेट्रम - बुखार के समय ज्यादा दस्त, बीमार की कमजोरी जाड़ा ज्यादा देर तक ठहरता हो ज्यादा और देर तक ठहरने वाला पसीना, जाड़ा अथवा गरमी की अवस्था में प्यास, एक दफे में ज्यादा पानी पीना।

ब्राइयोनिया - जाड़े का ज्यादा देर तक ठहरना, हर एक अवस्था में प्यास सूखी खासी, और छाती में सुई चुभने जैसा दर्द वैसा ही दर्द जिगर और तिल्ली में, पाखाना सख्त, और कब्ज।

सहकारी उपाय - अच्छी आब हवा की जगह जाकर

रहना चाहिये इससे बहुत जल्द फायदा होता है। मैलेरिया फैले हुये स्थान में बहुत सुबह और शाम को ज्यादा हवा में टहलना ठीक नहीं है। बनिस्बत नीचे के घर से दूसरी मन्जिल के मकान में सोना अच्छा है। ज्यादा महनत, विषम नियम भोजन, रात्री का जागना आदि त्याग करना उचित है।

पथ्य - नई हालत में साबू दाना पानी में बना कर और ऐसे ही बारली आदि हलका पथ्य बुखार न रहने के वक्त देना चाहिये। बुखार के समय कुछ खाने को नहीं देना चाहिये। पुरानी अवस्था में पेट की कोई शिकायत न रहने पर सुबह के वक्त में पुराने गेहूं की हलकी पतली रोटी, दूध, कद्दू के साग का रसा, और शाम के वक्त दूध साबूदाना दिया जासक्ता है। रात्री के समय भोजन निषेध है यानी जो कुछ खाना हो श्याम से पहले खालेना चाहिये। मावस और पूनो में होश्यारी से रहना चाहिये। दूध पानी अथवा मावस पूनो में एक वक्त खाकर रहना चाहिये।

मुंहमें घाव, जिल्द का पीलापन, तापतिल्ली में ज्यादा दर्द, उदरामय, पेचिस, आदि लक्षण जाहिर होने पर बीमारी सख्त जानना चाहिये, पेटकी गड़ बड़ रहने से पथ्य की बाबत विशेष सावधानता का रखना उचित है। खास भोजन के बाबत ज्यादा ख्याल न रखने से बुखार बार बार लौट कर आता है।

३०।—दद्रू (दाद)

यह बीमारी छूत की है। रोग की जगह के हर एक रूआं के छेद के नीचे एक तरह का कीड़ा पैदा होता है और यह जगह खुजलाती है और जलन व रस टपकता है। अक्सर असाध्य हो जाता है परन्तु पहली अवस्था में दवाई देना चा-

रहिये जिस से खून का बिगड़ना सुधर कर कीड़ा पैदा न होने पावे इसी कारण दवाई दी जाती है।

चिकित्सा—फेरमफोरिया फार्म उमदा दवाई है।

सीपिया—पहले इस्तेमाल करने से बीमारी नहीं बढ़ती औरतों को ज्यादा तर फायदा करती है।

कास्टिकम—गर्दन की तरफ का दाद, बहुत खुजावट, विशेष कर शाम के वक्त, पुरानी बीमारी में देते हैं।

मरक्यूरियस-बांह में दाद होने से विशेष उपकारी है। दाद पकजाता है और आस पास की जगह में लपक होती है।

सलफर—बीमारी असाध्य होने से और बे बरदाश्त खुजली व जलन रहने से दिया जाता है।

सहकारी उपाय—हमेशा साफ रहना चाहिये।

कारबोलिक-सायन व्यवहार करना चाहिये। ऐसे बीमार का धोती अंगोछा आदि दूसरे का काम में न लाना चाहिये। गोआपावडर, पैसेटिक पेमिड, टिंचर आयोडीन, आदि दवाई बाहर लगाने से अकसर फायदा होता देखा गया है परन्तु जड़ से आराम नहीं होता इधर उधर की दवाइ बाहर नहीं लगानी चाहिये।

३१।—दांतों में दर्द

यह बीमारी बहुत आम और तकलीफ देने वाली है दांत का दर्द कभी कभी एक दांत में और कभी कभी कई दांतों में होता है और इस के सबब से मुंह, कान, गला, और सिर तक में दर्द होता है। दांत हिलने से, सर्दी लगने से कीड़ा

रहना चाहिये इससे बहुत अल्प फायदा होता है। मेलेरिया फैले हुये स्थान में बहुत सुबह और शाम को ज्यादा हवा में ठहरना ठीक नहीं है। बनिस्बत नीचे के घर से दूसरी मन्जिल के मकान में सोना अच्छा है। ज्यादा महनत, बिना नियम भोजन, रात्री का जागना आदि त्याग करना उचित है।

पथ्य - नई हालत में साबू दाना पानी में बना कर और पसे ही बारली आदि हलका पथ्य बुखार न रहने के वक्त देना चाहिये। बुखार के समय कुछ खाने को नहीं देना चाहिये। पुरानी अवस्था में पेट की कोई शिकायत न रहने पर सुबह के वक्त में पुराने गेहू की हलकी पतली रोटी, दूध, आलू के साग का रसा, और शाम के वक्त दूध साबूदाना दिया जासका है। रात्री के समय भोजन निषेध है यानी जो कुछ खाना हो श्याम से पहले खालेना चाहिये। आवस और धूपों में होशयारी से रहना चाहिये। दूध पानी अथवा आवस धूपों में एक वक्त खाकर रहना चाहिये।

मुहमें घाव, जिल्द का पीलापन, तापतिल्ली में ज्यादा दर्द, उदरामय, पेचिस, आदि लक्षण जाहिर होने पर बीमारी सख्त जानना चाहिये, पेटकी गड़ बड़ रहने से पथ्य की बाबत विशेष सावधानता का रखना उचित है। खान भोजन के बाबत ज्यादा बचाव न रखने से बुखार बार बार लौट कर आता है।

२०।—दद्रू (दाद)

यह बीमारी छूत की है। रोग की जगह के हर एक चर्मा के छेद के नीचे एक तरह का कीड़ा पैदा होता है और यह जगह खुजलाती है और जखम व रस टपकता है। अक्सर असाध्य हो जाता है परन्तु पहली अवस्था में दवाई देना चा-

देने सोने से अथवा ठंड लगने से बढ जावे। सहराने से गरमी पहुंचने से आराम मालूम देता हो। दांत हिलता हो और लम्बा मालुम देता हो दर्द कान तक पहुंचता हो, बेचैनी रहती हो, बीमारी आराम होकर फिर लौट कर न आवे इस से थोडे दिन दवा का इस्तेमाल रखना जरूरी है।

स्टाफीसेग्रिया—दन्तक्षय दांतकाला होजाना भोजन अथवा ठंडा पानी पीने से, मसूडे में दर्द कीडे से खाये हुये गड्ढ के दांत में दर्द,।

सिकोडोना—दांत में डंक मारने का अथवा लपक से दर्द होना बहुत से दांतों में येक दम दर्द होना, इसलिये कौन से दांतो में दर्द है ठीक मालूम न होना, दर्द डोलता फिरता हो। ठंड और गरमी दोनो से बढजाता हो, माथे में खून का अधिक होना सिर में दर्द।

ब्राइयोनिया—गरमी से दर्द का बढना और ठंडे पानी से थोडी देर को आराम मालूम देता हो। बाहर हवा में घूमने से दर्द में कुछ कमी मालूम हो। जिस तरफ दर्द हो उस तरफ लेटने से दर्द कम मालूम हो।

नक्सवोमिका—चपका मारने का सा दर्द खाने के बाद डाढ मे दर्द, सास लेने से और गरमी पहुचाने से आराम मालूम देता हो, परन्तु मनकी चिन्ता करने से बढ जाता हो।

टंड लगकर दांत में दर्द होने से एकोनाइट चिकाडोना, कैमोमिला, मरक्यूरियस देना चाहिये।

'डाढ में कीडा लगने से दर्द—क्रियोजोट, स्टेफीसग्रिया, मारक्युरियस,।

बदहजमी से दर्द—ब्राइयोनिया, नक्सवामिका, पलसटिला।

लगने से कभी कभी पचने की ताकत में खराबी आने से दांत में दर्द हो जाता है।

चिकित्सा—एकोनाइट-सर्दी लगने से दांत में दर्द दांत में धधका, बुखार मालूम देना ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देना ज्यादा बेचैनी,

क्रयोजोट—कीड़े लगने के सबब से दांत में दर्द हो तो यह अच्छी दवाई है इसी हालत में मरक्यूरियस, फायदे मन्द है यह कीड़ा लगने के दर्द को ही फायदा नहीं करती बल्कि कीड़ा लगना रोक देती है।

कैमोमिला—ठंडी हवा लगकर अथवा पसीना बंद होकर दर्द होने से फायदा करती है। बहुत दर्द रात में बिछौना पर लेटने से बढ़ता हो गरम खाना खाने से तकलीफ, मसूड़े और गाल फूलें, कभी कभी सिर के एक तरफ दर्द, बच्चों के दांत निकलने के वक्त विशेष कर उस के साथ उदरामय रहने से बहुत उपकारी है।

मरक्यूरियस सल—दांत में कीड़ा लगने से मुंह के एक तरफ कान, व गांठ, और कनपटी तक इकबारगी दर्द होता हो अथवा दर्द के साथ लार टपकती हो ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देना खाने से तथा रात के वक्त बढ़ जाना गर्भ की अवस्था में दांत में दर्द हो तो फायदा करता है

पलसटिला—मुंह में कोई चीज देने से दर्द और शाम के वक्त और रात में गरमी से बढ़ जाये दांत के दर्द के साथ कान में दर्द, और माथे में दर्द, खुली जगह पर आने से दर्द कम हो जाय, और गरम कोठरी में बढ़ जावे

आरसेनिक—दर्द की जगह में हाथ रखने से दर्द की त-

र्फ सोने से अथवा ठंड लगने से बढ़ जाये। सहराने से गरमी पहुंचने से आराम मालूम देता हो। दांत हिलता हो और लम्बा मालूम देता हो दर्द कान तक पहुंचता हो, बेचैनी रहती हो, बीमारी आराम होकर फिर लौट कर न आवे इस से थोड़े दिन दवा का इस्तेमाल रखना जरूरी है।

स्टाफीसेग्रिया-दफ्तअन दांतकाला होजाना भोजन अथवा ठंडा पानी पीने से, मसूड़े में दर्द कीड़े से खाये हुये गढ़े के दांत में दर्द।

चिल्लोडोना-दांत में डंक मारने का अथवा लपक से दर्द होना बहुत से दांतों में ऐक दम दर्द होना, इसलिये कौन से दांतों में दर्द है ठीक मालूम न होना, दर्द डोलता फिरता हो। ठंड और गरमी दोनों से बढ़ जाता हो, माथे में खून का अधिक होना सिर में दर्द।

ब्राइयौनिया-गरमी से दर्द का बढ़ना और ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देता हो। बाहर हवा में घूमने से दर्द म कुछ कमी मालूम हो। जिस तरफ दर्द हो उस तरफ लेटने से दर्द कम मालूम हो।

नक्सवोमिका-लपका मारने का सा दर्द खाने के बाद बाढ़ मे दर्द, सांस लेने से और गरमी पहुचाने से आराम मालूम देता हो, परन्तु मनकी चिन्ता करने से बढ़ जाता हो।

ठंड लगकर दांत में दर्द होने से एकोनाइट चिल्लोडोना, कैमोमिला, मरक्यूरियस देना चाहिये।

दाढ़ में कीड़ा लगने से दर्द-क्रियोजोट, स्टेफीसग्रिया, मारक्युरियस,।

बदहजमी से दर्द--ब्राइयौनिया, नक्सवोमिका, पल्सटिला।

स्नायविक दर्द में-चिलोडोमा, कैमोमिला, नक्सवोमीका आरसिनिक, ।

गर्भ अवस्था म-सीपीया मरक्यूरियस, ।

सहकारी उपाय—प्रति दिन सुबह को और खाने पीने के बाद दांत अच्छी तरह से ठंडे पानी से धोने चाहिये । जिन लोगों के दांत से खून गिरता हो उन को दातून करना उपकारी है। बहुत गरम या बर्फ के समान ठंडी चीज दांतों से लगाना खराब है बहुतेरे आदमियों का यह ख्याल है कि तमाखू या चुरट के इस्तेमाल से मसूड़ा कड़ा होता है परंतु यह ख्याल गलत है। तमाखू पीने या चुरट से उलटा नुकसान होता है। प्रतिदिन रात्रि के सोने के वक्त से पेहले मुंह अच्छी तरह से धोकर सोना चाहिये अगर दांत की जड़ जख्मी होजावें तो निकाल डालना चाहिये। निकालने के पहले दवाई से इलाज कर इस को बचाने की कोशिस करना चाहिये ।

३२।—दन्तो उद्गम दांत निकलना।

लक्षण—दांत निकलना यद्यपि स्वाभाविक क्रिया है। तथापि समय २ पर बहुत तकलीफ होती है। यहां तक कि कमजोरी, और दुबले बच्चों के लिये बाज वक्त सांघातिक होजाती है और इस के साथ खांसी, उदरामय, बेचैनी, अनिद्रा, आक्षेप, मुंह से लार गिरना, आदि हर एक प्रकार की शिकायत होती है।

पाक अन्न अकसर बिगड़ जाता है । इस लिये कै, भूख का कम होना, उदरामय, अथवा कबजियत और इस से मूर्छा घायटा आदि लक्षण कभी कभी देखे जाते हैं इस बिमारी की मामूली दवाई केमामिला है, मुआफिक दरजे से यह दिन में तीन चार दफे दिया जाता है।

कब्जीयत ।

इलाज—ब्राइयोनिया । रुक्ष सूखा मल और पाखाने आने में तकलीफ । भोजन करने के बाद कै, का होना ।

नक्सवोमीका - बार बार, पाखाने की हाजत होती हो परंतु दस्त न होता हो । आंत की क्रिया कम होजाना, पाखाने के वक्त हाजत न हो भूक का न लगना, और बच्चा हरवक्त रोता रहता हो ।

ओपियम - इकाइक बहुत कब्ज का होजाना - आंतकी क्रिया मंद वेग शून्य ।

२ ।—बायटा और मूर्छा

[बच्चों का बांयटा और मूर्छा का बयान देखो]

३ ।—उदरामय, यानी पेट चलना ।

चिकित्सा - कैमोमिला उमदा दवाई है । पतला हरेपन वद्‌बू-लिये हुये दस्त, बच्चा हर वक्त रोता हो मक्खी ज्वरीर, सोते सोते चमक उठना, जागने से उसको हरवक्त गोदी में लेकर घूमना पड़ता हो । कै, में खट्टा दूध आता हो, अनिद्रा,

इपीकाक - बहुत ज्यादा खाकर उदरामय और उसके साथ कै, दस्त झाग के समतुल्य । हर तरह के रंग अथवा घास के से रंग का दस्त होना ।

मरक्यूरियस—सब मुंह से बहुत लार गिरना, दस्त के वक्त बहुत जोर देना पेचिस जीव, गला, व मसूड़े में घाव, पट में, कहारपन और फूल आना आदि मरक्यूरियस का लक्षण है ।

पलसटिला - यह हजमी के सबब से उदरामय, भूक न लगना, रात्री में दस्त ज्यादा होना।

पोडोफाईलम - जो दांत निकल चुका है वह फिर फिर करता हो। उदरामय हरे अथवा सादा रंग का पाखाना अजीर्ण मल, बहुत भूख परन्तु खाने के साथ दस्त होजाता हो।

४ - ज्वर

चिकित्सा - ऐकोनाइट - सब से पहले यह देना चाहिये विशेष कर के बेचैनी, प्यास, मसूड़ा फूलना और उसमें दर्द और प्रदाह, सिर गरम आदि लक्षण रहने से।

कैमोमिला - एकोनाइट के बाद जिस समय बच्चा हमेशा दिक रहता हो और गोदी में लेकर टहलना पड़ता हो।

जैलसीमियम - अनिद्रा, चिल्लाकर रोना करवट लेना।

ब्रायोनिया - बदन में दर्द - खांसी खास लेने में। तकलीफ कबजीयत, जो चीज खाता हो उसी को कै कर देता हो।

बेलेडोना - माथे से ज्यादा खून आजाना उसके साथ मुंह और आंख का लाल रंग, हाथ पैर में कांपना और अधखुली आंखें से सोना, ऊधमी बच्चा।

बुखार की हालत में बहुत कम मिकदार में खाना चाहिये दूध बंद करके थोड़ा थोड़ा बारली का पानी देना चाहिये।

अनिद्रा और बेचैनी

चिकित्सा - पिसोडीया-सोने की तबियत चाहती हो परंतु नींद न आती हो। चमककर और रोकर जग उठता हो।

ऐकोनाइट बुखार रहने से।

कैमोमिला - पेट की शिकायत—पेट फूलना अथवा खाने का नियम ठीक न रहने से। कभी कभी कौफिया, व ओपियम से, फायदा होता है। और कोई शिकायत न रहने से कौफिया अनिद्रा की उमदा दवाई है।

सहकारी उपाय - बच्चों को निद्रा आने के समय अंधेरे घर में चुप चाप सुलाकर माथे पर हाथ हौले हौले ठोकना अथवा कहानी या वारता करना इन सब बातों के करने से बच्चा जल्दी सोता है।

६ - देरी से दांत निकलना

चिकित्सा- कैलकेरियाकर्ब - देर से दांत निकलना, उदरा-मय, और सफेद रंग का पाखाना, शरीर का सूख जाना, और दुबलापन, सोने के वक्त शरीर की अपेक्षा सिर में विशेष पसीना होना, और पेट बड़ा होजाना, गरदन की गाठ फूल जाना।

साइलीशिया - कीड़ों की शिकायत रहनी, लारज्यादा गिरना, बच्चा मसूड़े में हाथ देकर खींचता हो रात के समय थोड़ा थोड़ा बुखार मात्रा हो माथा गरम होता हो शाम के वक्त माथे से बहुत मिकदार में खट्टा बदबूदार पसीना निकलता हो।

सहकारी उपाय - अकसर थोड़ी कारवाई में जैसे कि कड़ी चीज चबाने के लिये देने से उपकार मिलता है। दांत निकलने में बहुत तकलीफ हो तो चक्कू से थोड़ासा मसूड़े में चीरा लगाने से बहुत जल्दी दांत निकलकर सब तकलीफ रफे होजाती है।

३३ - दूध उलट देना।

बच्चों को यह बीमारी बड़ी तकलीफ देने वाली और कमजोर कर देनी वाली है। खाई हुई चीज बच्चा उलट देता है कभी पित्त भी निकल आते हैं और साथ साथ पेट चलने लगता है।

चिकित्सा—पल्सटिला—पाक यन्त्र की कमजोरी अथव न पचने वाला खाना खाने से कै और पेट चलना वगैर

इथूजा—जमा हुआ दूध अथवा जैसे दूध पिया हो वैसे ही गिरा देना—दूध गेर कर सो जाना, जैसे जागे वैसे ही छाती दूध का पीना, दूध बिलकुल बरदाश्त नहीं होता हो

कैमोमिला—उमदा दवाई है १ बूंद दिन भर में तीन चार दफे देना चाहिये।

इपीका—खाने को तबियत न करना कफ के साथ कै, होना। छाती का दूध हजम न होना पीने के साथ गेर देना।

रयिम—कैमोमिला से फायदा न होने पर इसे देते हैं दस्त और कै, में खटाई की वास आना इस का खास लक्षण है।

नक्सवोमिका—खाना खाने को तबियत न करना हरे पित्त की कै, और कबजियत

सहकारी उपाय—खाने की चीज परख कर और मिकदार कम करके देना चाहिये। गाय का दूध बरदाश्त न हो तो उस में पानी मिलाकर देना अथवा गधी का दूध देना चाहिये। कै के बाद १घंटा या दो घंटों तक कोई चीज खाने का न देना चाहिये बच्चे को

छाती से दूध बहुत नहीं पिलाना चाहिये। और दूध पीने के बाद उस को बहुत हिलाना झुलाना नहीं चाहिये। अगर बरदाश्त होवे तो ठंडे पानी से रोज स्नान करा देना चाहिये।

३४।— धनुष्टंकार

लक्षण—कभी खून बिगड़ जाने से अथवा स्नायविक कारण से, कभी चोट लगने से, यह बीमारी हो जाती है। पैर में कांटा लग जाने से कांच से कट जाने से यहाँ तक कि लड़कियों के कान छेद देने से भी यह बीमारी देखी गई है। मुंह के पट्ठों का कड़ा हो जाना अथवा सुकड़ जाना, गरदन कड़ी हो जाना जायड़ा अटक जाना, कोई चीज खा नहीं सकना मुंह देखने से मालूम हो कि बड़ी तकलीफ है इत्यादि इस के लक्षण हैं बीमारी बढ़नेके साथ सब शरीर के पट्ठे सुकड़ जाते हैं शरीर सामने अथवा पीछे की तरफ धनुष के माफिक टेढ़ा हो जाता है रोगी बेहोस नहीं होता है। परन्तु बांयटा अथवा तकलीफ के सबब से सांस बंद होकर मृत्यु होती है। बांयटे के वक्त में रोगी का चहरा भयानक मालूम देता है।

चिकित्सा—एकोनाइट ठंड लगकर होने से, जाबड़े दोनों तरफ के बंद होजाना, गरदन कड़ा, शरीर पीछे की तरफ टेढ़ा होजाती है, नाड़ी कठिन, पूर्ण, और जल्द मुंह एक दफे गुलाबी और एक दफे रक्त पूर्ण मालूम होता है।

कैमोमिला—अथवा सीना—कीड़े की वजह से देते हैं।

आरनिका—चोट लग कर होने से—बाहर भीतर दोनों तरह इस्तेमाल करना चाहिये

नक्सवोमिका—साँस से तकलीफ हाथ पैर लकड़ी के समान कड़े पाकाशय में बांयटे के समतुल्य दर्द और कब्ज़ियत बांयटे के वक्त पूरा होस रहने से यह दवा अच्छी है। जो लोग नियम के खिलाफ चलते हैं उनके लिये बहुत उपकारी है

सिकूटोना—बहुत बेचैनी सोते वक्त एकदम चिल्लाना अथवा हाथ पैर हिलाना जाबड़े का बंद होना, और किसी तौर से कोई चीज भीतर को निगली न जाती हो बेहोसी के साथ दस्त और पेशाब होना, पानी पीने से बांयटा हो जाता हो और पीठ कड़ी हो जाती हो।

ओपीयम—एक निगाह से देखना आख की पुतली चौड़ी हो गयी हो प्रकाश न मालूम देता हो पेशाब बंद और कब्ज़ियत बांयटा

इगनेसिया—रोगी का मन दुखी रहता हो, हाथ से छूने से अथवा हिलने से रोग बढ़ता हो।

यह बीमारी बहुत सख्त है इस लिये इसका इलाज कोई अच्छे लायक डाक्टर से कराना चाहिये।

सहकारी उपाय - दवाई जल्दी जल्दी देना चाहिये। मेरु दंड (गोल हड्डी जो गरदन से नितंब तक) उनके ऊपर बरफ लगाने से फायदा होता है। रोगी को इकेली कोठरी में जिस ओर आदमी न हो रखना चाहिये और बीमार को किसी तरह दिक न करना चाहिये। मामूल्य उत्तेजित होने से, बायटा आता है, रोगी का चुप चाप सोते रहना।

३५ - नाक से खून गिरना ।

अकसर ये सामान्य बीमारी है। मामूली हालत में इलाज कराने की जरूरत नहीं है, बहुत जिकदार में खून गिरना, अथवा बहुत देर ठहरने वाली अथवा बार बार खून गिरने से और इसके साथ शरीर की कमजोरी होने से इलाज करना चाहिये। यद्यपि ये बीमारी सामान्य है तथापि किस वक्त खून गिरना बंद करना चाहिये और किस वक्त न चाहिये इसका निश्चय करना बहुत विचार और होशयारी का काम है।

१ - माथे में खून ज्यादा जमा होने से

चिकित्सा - ऐकोनाइट—बहुत गरमी चढ़ने से, अधिक खून वाली धातु, बुखार, नाड़ी पूर्ण, और जल्द। खून गिरने के वक्त पंद्रह बीस मिनट बाद दवाई देनी चाहिये।

बिलेडोना - मुंह का लाल रंग, माथे में ज्यादा खून जमना, कभी कभी ऐकोनाइट और बिलेडोना बारी से दिया जाता है।

सहकारी उपाय - मुंह को ठंडे पानी में डुबाये रखना नाक में ठंडे पानी की पिचकारी देना, माथा गला और पीठ पर बरफ लगाना, सिर ऊंचा रखना, बमनर खून गिरने से माथे में खून जमे हुए को आराम होता है। हुशयारी से इलाज करना चाहिये। (सिर घूमना और सिर में ज्यादा खून आने का बयान देखो) ।

२ - चोट लगने से ।

चिकित्सा आरनिका - ज्यादा शरीर की महनत करने से अथवा चोट लगने से, देना चाहिये।

रसटक्स - शरीर की महनत से, आरनिकाके बाद अथव कोई भारी चीज उठाने से होवे तो यह दिया जाता है। सि मीधा करने से और रात में बढ़जाना।

सहकारी उपाय - माथे में खून जियादा आने पर खून क ध्यान देखो। इसके अलावा ३० या ४० बूंद आरनिका पावभ पानी म मिलाकर यह पानी नाक में देना चाहिये।

३।—मासिक वद होजाने से

मासिक बद होजाने से औरतों को कभी कभी नाक से खू गिरन लगता है।

चिकित्सा - इस बीमारी में पलसटिला, सीपीया और योमिया उमदा दवाई हैं। मासिक बद होजाना देखो।

४ - कमजोरी से

खून कम होजाने पर कभी कभी नाक से खून गिरता है। इसी लिये पुरानी तिल्ली वाले रोगी का अखीर अवस्था में नाक से खून गिरने लगता है। खून की बदली अवस्था को सुधार देना ही इलाज का मतलब है।

चिकित्सा - चायना—इससे बहुत फायदा होता है। बार बार बहुत देर तक खून गिरना, कान के भीतर भों भों की आवाज सुनाई देना, मुंह की हालत खून न रहने वाली दिखाई देना, । " सीकेली " चायना से फायदा न होने के बाद इसे देते हैं।

कारबोवेजीटेबिलिस - बार बार खून गिरना, हमेशा दो पहर के पहले अथवा दस्त के लिये जोर दंग पर खून गिरता हो।

हेमेतविस - बच्चों के खून गिरना। खास कर बूंद बूंद काले रंग का।

फेरम - बदन में खून कम होने पर नाक से खून गिरना।

सहकारी उपाय - ताकत पैदा करने वाला खाना खाना चाहिये और तेज करने वाला खाना छोड़ देना चाहिये। मसलन [शराब गरम मसाला चरस आदि] हमेशा साफ हवा बदलना अच्छा है।

५ - कीड़े के सबब से खून गिरना।

चिकित्सा - सीना अथवा मरक्यूरियस सोल, देना चाहिये।

(कीड़े का बयान देखो)

६ - बार बार खून गिरना।

चिकित्सा - फेसकेरियाकार्ब, और सलफर से फायदा पहुंचता है सप्ताह में दो तीन दफे देना चाहिये।

सहकारी उपाय—जिन की नाक से हमेशा खून गिरता हो उन को नियम से भोजन और मिहनत करना चाहिये। और हर एक तरह की उत्तेजक चीज छोड़ देना और रोज ठंडे पानी से नहाना चाहिये शराब आदि तेज करने वाली खाने पीने की चीज और ज्यादा मिहनत करना छोड़ देना चाहिये।

३६।—पक्षाघात (लकवा)

लक्षण—मस्तिष्क अथवा मेरु दण्ड की बीमारी अथवा चोट वगैरः से मालूम करने की ताकत और चलने

फिरने की ताकत जाने रहने को पक्षाघात कहते हैं । इस बीमारी में कभी आधा शरीर रहना अथवा जाना, कभी शरीर के ऊपर का हिस्सा कभी नीचे का हिस्सा (कमर से पैर तक) कभी मुह का एक हिस्सा रह जाना देखा जाता है इस बीमारी में जो स्थान रह जाता है उस स्थान को मांस पेशी, ढीला, सूखा, सुकड़ जाना अथवा कोई चीज के चुभाने से या चुटके लेने से मालूम न देना और ताकत जाती रहती हो

चिकित्सा एकोनाइट—ठंड लगकर अथवा खून ज्यादा होने पर हाथ पैर अथवा और कोई खास जगह सुन्न होजाने की उमदा है दवाई शरीर के एक तरफ के रह जाने से दिया जाता है ।

फोसफरस मेरु दंड अथवा मस्तिष्क की कमजोरी से रह जाना बहुत स्त्री से संग करना अथवा क्षय करने वाली बीमारी से उत्पन्न बीमारी की यह अच्छी दवा है

नक्सवोमिका—बहुत नशे की चीज इस्तेमाल करने से स्त्री से संगत करने से अथवा बहुत मन की चिन्ता के कारण से बीमारी, उस के साथ भूख का कम लगना के करने की इच्छा कब्जियत रहने से यह उमदा दवाई है मुह का और हाथ पैर का एक हिस्सा रहना ।

रसटक्स—गठिया मे अंग का रह जाना, दाहिने तरफ का रह जाना और मूत्र द्वार व मलद्वार का रह जाना,

ओपीयम—आंख के पलक जीभ, हाथ पैर का रह जाना कब्जियत, पेशाब बन्द बेहोसी, निद्रा आखें अध खुली ।

अल्युमिनियम—बच्चों के शरीर रह जाना बच्चा न चल फिर सका हो, आंखों के पलक रह जाना,

इगनेसिया—ज्यादा मन की चिन्ता बीमार के पास रात्री में जगने से बीमारी, बीमार का मन बहुत दुखी

मुह के रह जाने में बरेटाकार्ब, कौसटिकम, बिलडोना, सारे बदन के रह जाने में। रसटक्स, फोसफरस, बरेटाकार्ब (बुड्ढे को) कैकूलस, अलासिमीनियम।

जीभ का रह जाना—कौसटीकम, कौकूलस, ल्लकेसिस, अैलसीमिनियम

शरीर के ऊपर का हिस्सा रह जाने में—नक्सवोमिका मारमिका (बांया अंग) सलफर, कौसटीकम, रसटक्स।

नीचे के शरीर का रह जाना,—कौकूलस, नक्सवोमिका, फौसफरस, प्लबम

मूत्राधार रह जाना—बिलडोना, लकेसिस, लाइकोपोडियम, ओपियम अलासिमीनियम,

सहकारी उपाय—(१) बिजली का तेज देना इस विषय में अच्छे डाक्टर की मदद और सलाह लेना अच्छा है

(२) हर रोज ठंडे पानी से नाहना, पीठ, माथा, और रेढ़ दंड में ठंडे पानी की धार देने से बहुत फायदा होता है।

(३) नहाने के बाद सारा बदन विशेष कर जो हिस्सा रह गया हो वह ज़ोर से रगड़ना चाहिये।

(४) रोज नियम से कसरत और हाथ पैर का चलाना बहुत ही जरूरी है।

३७। खसरा (Chiken pox)

लक्षण यह छूत की बीमारी है परन्तु मारने वाली

नहीं है इस में भी माता के समान दाने निकलते हैं । परन्तु गिन्ती में उस से बहुत कम होते हैं। और थोड़े दिन में आराम हो जाता है पहले दस्त का बुखार होकर उस के २४ घंटे के बाद गोल दानां निकल आता है चार या पांच दिन में मिट जाता है घड़े माता के समान इस के दाने के भीतर गड्ढा अथवा बद्दू नहीं होती है जैसे बड़ी माता बनघोर से निकलती है वैसी ही छीदी होती है। परन्तु छोटी वैसी नहीं होती

छोटी माता का दाना मच्छड़ के काटने के समान लाल रंग का होता है उस में धीरे धीरे पानी पड़ आता है और आखिर को छाला सा होजाता है इस का दाना पहले पीठ पर निकलता है।

चिकित्सा रस्टकस—उमदा दवाई है

ऐकोनाइट-बुखार तेज रहने से।

बिलोडै़ना—गले में दर्द, चकना सिर में दर्द रहने पर इस दवा का इस्तेमाल करना चाहिये।

मरक्यूरियस-बहुत खुजली और खुजली पकने से।

पलसटिला-अथवा रोसटिमटार्ट अगर दानानिकल ने में देरी हो अथवा पित की शिकायत पेट की बीमारी रहे तो देना चाहिये पेशाब मे तकलीफ रहे तो कैनथरिस-या मरक्यूरिस देना चाहिये।

सहकारी उपाय—जब तक बुखार है तब तक रोगी को जन शून्य और हवादार ठंडी कोठरी मे रहना चाहिये थोड़े गरम पानी में कपड़ा भिगो कर बदन पोंछ दिया जा सकता है। पथ्य पहले हलका और पीछे ताकत वाली चीज देना

चाहिये। शरीर में तेल लगाने से थोड़ी बहुत सुजावट जाती रहती है। बच्चा ज्यादा न सुजावे इस की हुश्यारी रखनी चाहिये।

३८—पांडुरोग

(पीलिया का बयान देखो)

३६।—पेट का दर्द

(बच्चों का रोना देखो)

४०।—पेट फूलना ।

लक्षण—बदहज़मी का यह एक विकार है पेट फूलना कहने से पेट में भारीपन, बदहज़मी की डकार और हवा निकलना, जी मिचलाना, और भूख का न लगना, पेट फूलना कहने से इतनी शिकायत समझी जाती हैं।

चिकित्सा—कारबोवेजीटेबिलिस बहुत कम मिकदार में खाने से भी पेट फूल आता है। और पेट में आवाज़ होती है खट्टी और बदबूदार डकार आती है बदबूदार वायु उतरता है। पेट फूलने के साथ उदरामय होने से यह दवाई अच्छी है।

चायना-बहुत पेट फूलना, कच्चा अथवा न पचने वाला गाढ़ा खाने से पेट फूलना, भोजन के बाद कड़वी डकार, खाने पर भी आराम न मालूम हो और पेट में दर्द।

लाइकोपोडियम—पेट फूलना परन्तु उदरामय का न रहना,

पेट में हमेशा आवाज होना वायु रुकजाने से पेट में हर एक प्रकार का दर्द होना।

नकसवोमिका - पेट में बहुत हवा, खाने के बाद पेट आना, कबजियत, बारबार हाजत होती हो परन्तु दस्त न होता हो।

पलसाटिल्ला - उमदा दवाई है विशेष कर न पचने वाली चीज और घी अथवा तेल का पका हुआ सामान खाने से। पेट के फूलने से और रात्री के वक्त दर्द होना।

इगनेसिया—कबजीयत के साथ पेट फूलना।

सहकारी उपाय—बदहजमी के बयान में देखो।

४१ - प्रमेह (सुजाक)

इस बीमारी का प्रधान लक्षण स्त्री अथवा पुरुष के इन्द्री में प्रदाह और उससे पीप निकलना यह बीमारी छूत की है और हमेशा खराब सगत से होती है। पहले मूत्र नली में भीतर खुजा घट इसके बाद जलन और प्रदाह और इसके साथ बुखार भी रहता है। पहले जलके समान पीछे सफेद अथवा पीला पीप निकलता है।

प्रमेह के होने के बाद जो जो शिकायत पैदा होती हैं यह बहुत तकलीफ देने वाली हैं और बहुत मुशकिल से आराम होता हैं अचानक बन्द होजाने से दोनों अण्डकोष फूल आते हैं उसमें प्रदाह और फोड़े होजाते हैं। पुराने प्रमेह में कभी कभी मूत्र नली बंद होजाती है इससे रोगी पेशाब नहीं करसका है प्रमेह के बाद आंख में प्रदाह, गठिया, आदि रोग भी होजाते हैं। प्रमेह होने के बा कभी कभी इन्द्री और इन्द्री का चमड़ा फूलकर सुद

के ऊपर चक्कर सा बन आता है उससे ज्यादा तकलीफ होती है कभी इन्द्री कड़ी होकर टेढ़ी पड़जाती है रात को सोते वक्त यह शिकायत अकसर होती है।

चिकित्सा - ऐफोनाइट - पहली हालत पर जब प्रदाह के लक्षण रहें और पेशाब करने में जलन और तकलीफ होती हो तो देते हैं।

कैनाबिससटाइवा—मूत्र नली में दर्द, खाजरश, फूलना, पीप का निकलना और पेशाब करने में तकलीफ।

कैन्थारिस—स्त्री संग की इच्छा होती है और इन्द्री सख्त हो जाती है, बार बार पेशाब करने की इच्छा, पेशाब में जलन, पीले रंग की पीप और खून गिरता हो।

मरक्यूरियस सल-पीप पतला जल के समान याद गाढ़ा, पीला रंग अथवा खून मिला हुआ। इन्द्री का चमड़ा फूल आकर मुंह पर चक्करसा हो आने पर यह दवा बहुत फायदे मन्द है।

हीपर सल्फर—मरक्यूरियस के बाद दिया जाता है, सादे रंग की पीप और जलन कम हो जाने पर यह दिया जाता है।

पलसेटिला—मूत्र की नली बन्द हो जाने से, पतली धार से पेशाब आना पीप निकलना बन्द हो जाने से, और अंड-कोष प्रदाह शुरू हो जाने से यह फायदा करती है।

कैपसीकम—गाढी पीले रंग की पीप निकलना, पेशाब निकलने के मुंह पर बहुत जलन और गरमी मालूम देना।

सहकारी उपाय - सेवा करने वाले मसलन शराब वगैर

पेट में हमेशा आवाज होना वायु रुकजाने से पेट में हर एक प्रकार का दर्द होना।

नक्सवोमिका - पेट में बहुत दर्द; खाने के बाद बढ़ जाना, कब्जियत, बारबार हाजत होती हो परन्तु दस्त न होता हो।

पलसाटिल्ला - उमदा दवाई है विशेष कर न पचने वाली चीज और घी अथवा तेल का पका हुआ सामान खाने से। पेट के फूलने से और रात्री के वक्त दर्द होना।

हगनेसिया—कब्जीयत के साथ पेट फूलना।

सहकारी उपाय—बदहजमी के बयान में देखो।

४१ - प्रमेह (सुजाक)

इस बीमारी का प्रमाण लक्षण स्त्री अथवा पुरुष के इन्द्री में प्रदाह और उससे पीप निकलना यह बीमारी छूत की है और हमेशां खराब सगत से होती है। पहले मूत्र नली में भीतर खुजा घट इसके बाद जलन और प्रदाह और इसके साथ बुखार भी रहता है। पहले दूधके समान पीछे सफेद अथवा पीला पीप निकलता है।

प्रमेह के होने के बाद जो जो शिकायत पैदा होती हैं वह बहुत तकलीफ देने वाली हैं और बहुत मुश्किल से आराम होता हैं अचानक बंद होजाने से दोनों अंडकोष फूल जाते हैं उसमें प्रदाह और फोड़े होजाते हैं। पुराने प्रमेह में कभी कभी मूत्र नली बद होजाती है इससे रोगी पेशाब नहीं करसकता है प्रमेह के बाद आंख में प्रदाह, गठिया आदि रोग भी होजाते हैं। प्रमेह होने के बा कभी कभी इन्द्री और इन्द्री का चमड़ा फूलकर मुद

के ऊपर चक्कर सा बन जाता है उससे ज्यादा तकलीफ होती है कभी इन्द्री कड़ी होकर टेढ़ी पड़जाती है रात को सोते वक्त यह शिकायत अकसर होती है।

चिकित्सा - एकोनाइट - पहली हालत पर जब प्रदाह के बदला रहे और पेशाब करने में जलन और तकलीफ होती हो तो देते हैं।

कैनाबिससटाइवा—मूत्र नली में दर्द, लालरंग, फूलना, पीप का निकलना और पेशाब करने में तकलीफ।

कैन्थारिस—स्त्री संग की इच्छा होती है और इन्द्री सख्त हो जाती है, बार बार पेशाब करने की इच्छा, पेशाब में जलन, पीले रंग की पीप और खून गिरता हो।

मरक्यूरियस सल—पीप पतला जल के समान बाद गाढ़ा, पीला रंग अथवा खून मिली हुआ। इन्द्री का चमड़ा फूल जाकर मुंह पर चक्करसा हो जाने पर यह दवा बहुत फायदे मन्द है।

हीपर सलफर—मरक्यूरियस के बाद दिया जाता है, सादे रंग की पीप और जलन कम हो जाने पर यह दिया जाता है।

पलसेटिला—मूत्र की नली बन्द हो जाने से, पतली धार से पेशाब आना पीप निकलना बन्द हो जाने से, और अंड-कोष प्रदाह शुरू हो जाने से यह फायदा करती है।

कैपसीकम—गाढ़ी पीले रंग की पीप निकलना, पेशाब निकलने के मुंह पर बहुत जलन और गरमी मालूम देगा।

सहकारी उपाय - तेज करने वाले मसाला शराब और

की मुग़ालियत है। बीमारी की बढ़ती हालत में ज्यादा मेहनत और घूमना नुकसान देता है।

चलने की जरूरत हो तो लगोंटा अथवा जांगिया बांध लेना जरूरी है। बीमारी की जगह हमेशा साबुन से धोकर साफ रखनी चाहिये। रोज सुबह को स्नान और मिश्री का सरबत पीना और शरीर सदा ठंडा रखना चाहिये।

प्रमेह पीडा के पीछे की शिकायत।

१ - पुराने प्रमेह में।

यह रोग अकसर विशेष कर अच्छा इलाज न होने पर पु होजाता है। पुराना प्रमेह अकसर असाध्य होजाता है। नीचे कुछ दवाई लिखी जाती है।

चिकित्सा ।—सीपिया, नेट्रम म्यूरीयेटिकम, नाइट्रिक-एसिड सलफर, थूजा उमदा दवाई हैं।

२ - इन्द्री का सख्त होना और टेढा होजाना।

प्रमेह के बाद कभी कभी इन्द्री नीचे की तरफ अथवा आस पास में टेढा होजाती और इस वक्त में बहुत कड़ी और फूल जाती है, भीतर बहुत दर्द मालूम देता है।

चिकित्सा - इन्द्री के ऊपर टिंचरआयोडीन थोड़ा पानी में मिलाकर लगाने से अकसर फायदा होता है।

पीप गाढा पीले रंग का निकलता हो और इन्द्रिय टेढी होजाने में कैपसीकम, इस अवस्था के साथ पेशाब में तकलीफ अथवा खून के साथ पेशाब आने में कैन्थरिस। मोह दस्तायम पद होजाने से पलसटिला फायदे मन्द है।

३ खून का पेशाब।

चिकित्सा - मर्कोसाइट—तेज प्रदाह ज्वर, प्यास, इन्द्री का सख्त होना और बहुत गरम मालूम देने से।

आरसेंटमनाइट्रिकम - उमदा दवाई है। पेशाब में तकलीफ, खून का पेशाब, पीप निकलना, अथवा खून के साथ पेशाब होने से कैनथारिस उपकारी है। अण्डकोष प्रदाह रहने से पलसटिला।

४—इन्द्री के मुंह पर खाल का चक्कर पड़जाने से

लक्षण - इन्द्री के अगले हिस्से का चमड़ा जिसे घूंगट भी कहते हैं बहुत ही फूल जाता है और उसमें प्रदाह होकर इन्द्री का मुंह बंद होजाता है इस लिये उससे पीप नहीं निकलने पाती और घूंगट भी खुलता मुड़ता नहीं है।

चिकित्सा——अगले हिस्स के चमड़े में बहुत सूजन और उसमें जखम, और काटने वाला दर्द, लाल रंग और फटने से, मरक्यूरियस। चमड़ा और इन्द्री के माथे में बहुत सूजन रहने स रसटाक्स अथवा एपिस। सलफर इस बीमारी की अच्छी दवाई हैं।

पहले दवाई देकर देखना चाहिये इससे फायदा न होवे तो अस्त्र चिकित्सा अर्थात् औजार से काम लेना चाहिये।

५ - अण्डकोष का फूल जाना।

चिकित्सा - पलसटिला, मरक्यूरियस, औरम, हैमिटिस आदि उमदा दवाई हैं। इस हालत में लंगोटा बांधना अच्छा है।

६ - गठिया।

प्रमेह होने के कारण गठिया होने से फसीमेटिस, पलसेटिला सारसा, थ्यूजा, सलफर देना चाहिये।

४२।—प्रसव

जिन की जिन्दगी जिस कदर स्वाभाविक होती है उ की जिसमी कारखाई उतनी ही सहज होती है और स्वाभा विक तरह से पूरी हुआ करती है। जैसे जगली और अ सभ्य लोग प्रसव यानी लड़का जनने को एक मामूली बात समझते हैं, उन लोगों की स्त्रियों के राह में पहाड़ पर अथ वा गली कूचों में बच्चा जन पडता है। विपरीत इस के र ईस और सुखिया लोगों के नजदीक लड़का जनना एक बड़ा भारी काम है। क्योंकि स्त्रियों की कभी कभी जान जाने की नौबत पहुंच जाती है। जब तक खास तकलीफ देने वाली हालत पैदा न हो जावे उस वक्त तक दवाई देना मुनासिब नहीं है।

चिकित्सा—जलसिमीनियम—जरायु अथवा बच्चे दानी, का कड़ा मुंह रहने से इस दवाई से नरम होती है।

दर्द कभी तरफ पीठ के तरफ अथवा छाती का तरफ जाता हो।

कैमोमिला—ये बरदास्त दर्द खास कर जो लोग निहायत नाजुक हों। रोगी का चिल्लाना दोनों पैर में दर्द बच्चे दानी का मुंह कड़ा।

पलसटिला-दर्द ठहर ठहर कर होता हो और प्रसव देरी से हो, दर्द कभी ज्यादा कभी कम, दर्द धीरे धीरे कम होता जाता हो और कमर में ज्यादा दर्द। जरायू की ताकत कम होने से यह दवाई ज्यादा फायदा करती है।

सिफेली—कमजोर स्त्री, दर्द कम मालूम देता हो कि थोड़ी देर में रुक जावेगा।

विरेट्रोम—दर्द ज्यादा, स्वाभाविक परन्तु जरायू का मुंह कड़ा, किसी तरह से खुलता न हो, मुंह का लाल रंग, सिर में दर्द, और हाथ में थायठा, दर्द अचानक होता हो, और अचानक चला जाता हो। प्रकाश और आवाज का न सहना,।

सहकारी उपाय—नावाकिफ दाई के हाथ में प्रसव यानी जनाने का काम न देना चाहिये। अकसर मूर्ख दाई के दोष से जच्चा को बहुत तकलीफ होती है। जिस घर में जापा हो उस घर को बहुत साफ और सूखा रखना चाहिये। किसी तरह का शोर जच्चा के पास न होना चाहिये। रोगी और रोगी के घर वालों को धीरज धरना चाहिये। पेट के ऊपर तेल और पानी मिलाकर मालिस करने से फायदा होता है। बच्चा होने के रास्ते के आस पास की जगह गिरी के तेल से गीला रखना बहुत जरूरी है। प्रसव के बाद दो एक खुराक आरानिका देने से चदम का दर्द और पेट का दर्द (जो कि बच्चा होने के कारण होता है) इस से बन्द हो जाता है। प्रसव हम लोगों के देश में जैसा खराब है वैसा दुनिया के भीतर कोई सभ्य देश में नहीं है। एक तो जापे का घर अंधेरा, छोटा, जमीन सीलदार और खराब होता है, इस के ऊपर जापे का घर बहुतसी औरतों में भर जाने से उस की हवा जहर के समान हो जाती है। इसी लिये तुरन्त पैदा हुआ बच्चा इस यमपुरी के समान घर में रह कर बीमार पड़ जाता है और इसी लिये हम लोगों के देश में बच्चा की मृत्यु संख्या जापे के घर में इतनी ज्यादा देखी जाती है।

११—प्रसव होने के पीछे का दर्द

यह दर्द बहुत तरह से स्वाभाविक है। गर्भ अवस्था में जरायु बहुत बढ जाती है। प्रसव के बाद वह जरायू फेर छोटी होने लगती है, उसी सबब से पेट में दर्द होता है। जिन स्त्रियों के अधिक सन्तान हुई है उन के यह दर्द ज्यादा होता है।

चिकित्सा—आरनिका—सारे शरीर में खिंचावट का दर्द, मूत्राधार के ऊपर भारीपन और पेशाब का रुकना मालूम होता है। प्रसव होने के वक्त और प्रसव होने के बाद एक एक खुराक देना चाहिये, इस से प्रसव की तकलीफ दूर हो जाती है।

सिकेलीना -अचानक दर्द होता हो और अचानक बंद होजाता हो।। ऐसा मालूम होता हो कि जरायू आदि प्रसव द्वार से निकल जावेगी, गरम मैल निकलना और पेट में खिंचावट का दर्द होता हो।

कौलोफाइलम - पेट के नीचे के हिस्सा में ठहर ठहर के दर्द, ज्यादा ठहरने वाले प्रसव के दर्द में तकलीफ पाने के बाद यह दवा उपकारी है।

कैमोमिला - वे बरदास्त दर्द और बीमार साफ हवा चाहती हो और बहने वाली चीज गाढी और काले रंग की और बहुत बेचैनी रहती हो।

अवसीमीसम - बहुत तकलीफ, बहुत ठहरने वाला दर्द और नींद न आती हो।

नक्सवोमीका—पेट में डंक मारने को सा दर्द, जरायू का

जोर से सिमटने का दर्द और उसके साथ दस्त की सी हाजत मालूम होना।

सिकेली — जरायू का बहुत जोर से सिमटना, दुबली और पतली स्त्री, अथवा जिन स्त्रियों के ज्यादा सन्तान हो चुकी हो उन स्त्रियों को फायदा मन्द है।

२।—प्रसव के बाद खूंन गिरना।

स्वाभाविक प्रसव में जियादा खूंन नहीं गिरता है। बच्चा पैदा होने के थोड़ी ही देर बाद खूंन गिरता है।

चिकित्सा।—बिलेडोना—गरम, ज्यादा, साफ लाल रंग का खून गिरना, मालूम देता हो कि पेशाब के साथ जरायु आदि निकल पड़ेगा, प्रसव के बाद दर्द के साथ बीच बीच में ज्यादा खूंन गिरना। उत्तेजन के लक्षण जैसे मुंह और आंख का लाल रंग, धमनी आदि नस के जोर से फड़कना, नाड़ी जल्द और पूर्ण, जरायु के ऊपर दबाने से जी मिचलाना, पीठ में दर्द, बदबूदार खूंन का गिरना।

कैमामिला—काले रंग का गाढ़ा गाढ़ा खून, ठहर ठहर के एक एक दफे लाल रंग का खून गिरना, उस के साथ दोनों पैर में चीरने का सा दर्द और जरायु के भीतर प्रसव के समान दर्द, जी मिचलाना बहोस होजाना, बीमार ठंडी हवा चाहती हो। अनुभव शक्ती का ज्यादा बढ़ जाना,

फैरम—ज्यादा खूंन गिरना, खूंन कुछ पतला और काला और जमा हुआ, कमजोर शरीर, सिर में दर्द, और सिर का घूमना, कब्जियत।

प्लाटीना—ज्यादा काला और गाढ़ा (परन्तु जमा हुआ

नहीं) खून गिरना। मालूम देता हो जिससे शरीर चारों तरफ से बढ़ जाता है।

सबाइना—ज्यादा खून गिरना, खास कर खून, का साफ, लाल रंग, कभी कभी थोड़ा काला रंग, थोड़ हिलने से खून का ज्यादा गिरना, प्रसव के बाद ही बिना दर्द के खून गिरना। मोटी स्त्री और जिन के मासिक के वक्त बहुत खून गिरता हो उनके लिये बहुत उपकारी है।

इपीकाक—प्रसव के बाद, नार गिरने के पीछे बच्चा गिरने के बाद खून गिरना, और नाभी के पास चीरने दर्द-सांस लेने के वक्त हांपती हो। जी मिचलाना, कै, कै के बाद ज्यादा खून गिरना (ज्यादा खून गिर बयान देखो)।

३।—नार का न गिरना

कभी कभी बच्चा पैदा होने के बाद नार गिरने में देरी होती है। नार को कभी जोर से खींचना नहीं चाहिये। इस से ज्यादा खून गिरने के सबब से स्त्री मरभी जा सकी है।

चिकित्सा—बिलडोना—मुंह का लाल रंग और दोनों आंख खून से भरी हुई, गरम ज्यादा खून गिरना, जरायु के मुंह का सुकड़ना।

इपीकाक-सदा जी मिचलाना, नाभि के चारों तरफ चीरने का सा दर्द, खून का गिरना और नार का न गिरना।

पलसेटिला-जरायु के सुकड़ने की ताकत न रहना, मथना बायठे के समान सुकड़ने के कारण नार का अटक रहना, ठहर ठहर के खून गिरना, और बेचैनी।

सैपाइना–नार गटक रहने पर भी बहुत दर्द उस के साथ पतला और जमा हुआ खून गिरना।

४।–प्रसव के समय अथवा प्रसव के बाद आक्षेप।
यह बीमारी बड़ी सांघातिक है। प्रसव के समय यह बीमारी होने से जच्चा और बच्चा दोनों के प्राण नष्ट होने की सम्भावना रहती है। प्रसव के बाद आक्षेप होना भी बड़ा भयानक है।

चिकित्सा–बिलेडौना–थोड़ा लाल रंग का मुंह, हाथ पांव में बायठा, जीभ की दांई तरफ का मारा जाना (पक्षाघात,) बोलने की ताकत और निगलने की ताकत जाती रहना। हर एक दर्द के वक्त बायटे आजाना, बायटे बाद सा जाना और बेहोश हो जाना।

कुपम–बायटे क साथ कै, हर एक बायटे के समय पीठ का धनुष आकार हो जाना, मुंह फाड़ के रहना,।

हायोसीयमस–प्रसव क बाद बायठा, चिल्लाना, छाती में तकलीफ मालूम होना, बेहोशी हो जाना, मुंह का नीला रंग हो जाना, शरीर क सब पट्ठों का धड़कना, बकना, हर एक बायटे के समय हाथ पैर का टेढ़ा हो जाना, सारे शरीर का बिछौने से ऊंचा होकर उठना।

ओपीयम—डर लगने क सबब स बीमारी का होना। नींद का आना, गले स जड़ घड़ क साथ श्वांस का चलना, शरीर के ऊपर पसीना हो जाना, मुंह का लाल रंग, गरम और सूजन आदि रहना।

स्ट्रैमोनियम—बेहोशी, शरीर का सुन्न हो जाना, डर मालूम होना, हंसना, गाना, भागने की कोशिश करना, बगाह

धार चीज देखने से घायटा जाना, तोतला होना अथवा बोलने की ताकत जाती रहना।

५।—लोकिया यानी प्रसव के बाद मैलका गिरना॥

प्रसव के बाद थोड़े दिन तक एक प्रकार का मैल गिरता है। पहले उस का लाल रंग होता है, फिर धीरे धीरे स-फेद होकर बंद हो जाता है। अचानक इस का गिरना बंद हो जाने से—नाना प्रकार की बीमारी हो जाती है।

चिकित्सा—एकोनाइट-घर के भीतर इधर उधर चलने फिरने से मैल का गिरना, लाल रंग का बहुत मैल गिरना। कम उमर की स्त्री और रक्त प्रधान स्त्रियों के लिये यह उपयोगी है।

पलसटिला— साधारण बीमारी में, विशेष कर कम स्राव होने से, और छाती का दूध अचानक बन्द होजाने से उप-कारी है। अचानक स्राव बन्द होजाने के कारण विना प्यास का बुखार।

कैलकेरिया— दूध के समान सादा लोकिया, बहुत दिन ठहर ने वाली। रक्तहीन ढीले शरीर की स्त्रियों के लिये यह उपयोगी है।

सिकेली—काले रक्त की बदबूदार स्राव निकलना। पतली और दुबली स्त्रियों के लिये यह उपकारी है।

कैमोमिला—लोकिया बन्द होजाना और उसके बाद बदरा-मन, पेट में और दांतो में दर्द।

माईपोमिया— ओकिया बन्द होने के साथ सिर में दर्द होजाना, और गर्म खाव रक्त का थोड़ा थोड़ा स्राव निकलने से उपकारी है। इसके साथ वेकोमाईट, अथवा विरेडोना पारी से दिया जाता है।

६। — प्रसव के बाद पेशाब का बन्द होजाना।

प्रसव के बाद कभी २ पेशाब बन्द होजाता है। इससे जच्चा को बहुत तकलीफ होती है।

चिकित्सा - बिलेडोना - बारबार पेशाब की हाजत होना बूंद बूंद करके पेशाब आना, लेकिन पेशाब करते वक्त तकलीफ न होना और मूत्र धार में चपका मारने वाला दर्द।

आरनिका - तकलीफ होकर प्रसव के बाद अथवा प्रसव के समय जोर अथवा चोट लगकर पेशाब बंद होजाना। कमर में चोट लगने वाला दर्द। मालूम होना।

केनथरिस - पेशाब की बहुत हाजत, पेशाब के रास्ते में जलन के साथ काटने वाला दर्द, पेशाब का बंद होजाना अथवा बूंद बूंद करके गिरना।

हायोसायमस - मूत्रधार के पक्षाघात में।

नक्सवमेमिका - जलन और चीरने वाला दर्द, पेशाब की हाजत होने पर भी पेशाब न होना, पेशाब बंद होजाना, और इसके साथ बारबार पाखाने की हाजत होना।

ओपियम - पेशाब और दस्त बिलकुल बंद, किसी की हाजत न होना।

७—प्रसव के बाद कबजियत।

प्रसव के बाद कब्ज होना, कुछ गैर वाजिब नहीं है। तीन चार दिन बराबर दस्त साफ न होने पर पेट में दर्द और

सिर भारी आदि हालतें जाहिर होती हैं तो आर्सेनिया देना चाहिये। इसके बाद जरूरत होवे तो नक्सवोमिका; और सलफर बारी से दिया जाता है।

८ - उदरामय।

प्रसव के बाद यह बीमारी बहुत आमिक होजाती है, इस लिये यह बिमारी ज्ञान के साथ इसका इलाज ध्यान देकर करना चाहिये।

चिकित्सा—पलसेटिला -रात को बुरा होता हो अथवा तेल की चीज खाने से उदरामय होने पर यह उपकारी है।

चायना—बहुत कमजोरी रहने से।

सहकारी उपाय—प्रसव के बाद सोवर म रहने के समय खाने पीने की बद परहेजी से यह बीमारी होजाती है। अधिक घी मसाला आदि न पचने वाली चीज खाने को देने की पुरानी रिवाज जब तक बंद न होगी तब तक यह बिमारी बंद होना मुशकिल है, मछली खाने वाली औरतों के लिये मछली का शोरवा, भात, जरूरत के माफिक साबूदाना, और दूध उमदा खाने की चीज है (ज्यादा देखने की जरूरत होतो उदरामय का बयान देखो)।

९ - दूधका बुखार

प्रसव होने के बाद स्तन में दर्द, स्तन कड़ा होजाता है, और उपरांत ज्वर होना है। बुखार के बाद स्तन में दूध आजाता है। इसीलिये इसको दूध का बुखार कहते हैं।

चिकित्सा - आइयोनिया-उमदा दवाई है। नाडी जल्द और पूर्ण, सिर में दर्द और प्यास रहने से वेकोनाइट,दिया जाता

है। मकमर पैकोनाइट के साथ विथेडोना केन से भी उपकार होता है।

१० - छाती में दूध का सूख जाना।

दूध कम होने से, दूध होने में देरी होने से, अथवा दूध सूख जाने से नीचे लिखी हुई दवाई देनी चाहिये।

चिकित्सा - पलसेटिला - दूध पैदा होने में देर होने से अथवा अचानक दूध सूख जाने से यह उमदा दवाई है।

कैलकेरिया — स्तन की पूर्णता और वृद्धि होने पर भी दूध कम होता हो। पलसटिला के बाद यह दवाई दीजाती है।

कैमोमिला - स्तन कड़ा, और दबाने से दर्द, मालूम होता हो, गुस्सा के सबब से दूध का सूख जाना॥

इगनेसिया - (रज के सबब), धक्का मारा — (ठठाकर)

११। — स्तन में बहुत दूध होना —

स्तन में बहुत दूध होने से तकलीफ होती है॥ यह तकलीफ रफै करने के लिये कोशिश करनी चाहिये।

चिकित्सा — ब्रायोनिया - स्तन में इतना दूध जम जावे कि जिससे स्तन फूल जावे और चपका भारी दर्द होता हो।

कैलकरिया - बहुत ज्यादा दूध का पैदा होना और बराबर बहता रहना।

चाइना - ज्यादा दूध निकल आने के सबब से कम जोरी हो जाना।

१२ - बच्चा की होशयारी रखना।

प्रसव के बाद बच्चा की होशयारी करना जरूरी है। प्रसव पं

दर्द के समय सबका ध्यान जच्चा के ऊपर रहता है। और प्रसव के बाद बच्चा के ऊपर ध्यान रहता है। प्रसव होने के बाद बच्चा का नाल तीन चार अंगुल लम्बा रखकर इसके दोनों तरफ गांठ लगाकर बीच में बड़ी होशयारी से नाल काट दिया जावे। इसके लिये तेज कैंची होनी जरूरी है।

नाल काटने के बाद बच्चे के नारियल का तेल लगाकर थोड़े गरम पानी से स्नान कराने के बाद साफ बिछौना पर सुला देना चाहियेबच्चे का कपड़ा साफ होना चाहिये। साफ धुला हुआ कपड़ा गरीब के घर में भी मिल सकता है। साफ धुला हुआ कपड़ा नारियल के तेल में भिगो कर नाभी के चारों तरफ लपेट देना चाहिये अगर बच्चा सोता हो तो जगाकर किसी को दिखाना नहीं चाहिये।

जब तक वह अपनी खुशी से नरोवे या न जागे तब तक उसको अच्छी तरह से सोने देना चाहिये अगर बच्चा बहुत देर तक सोता रहे तो यह ख्याल करके न जगाना चाहिये कि इसको सोये हुए देर हुई है। बनिस्बत खाने के बच्चे को सोना बहुत जरूरी है। जागने पर जब तक मा के स्तन में दूध न हो तो गायका ताजी दूध गरम करके पिलाना चाहिये।

बच्चा के इस्तेमाल किये हुए मैले कपड़ा प्रति दिन साबुन से धोकर अथवा और कोई उपाय से साफ करके सुखा लेना चाहिये खाना, बिछौना, हवा, मकान, आदि हर एक तरह से साफ सुथरा होना बच्चे के जीवन का मूल है इसमें किसी बात का फरक आने से बच्चा जल्दी बीमार पड़ सकता है।

प्रति दिन कम से कम एकबार नाभि का कपड़ा बदल देना चाहिये। दीपक के ऊपर उंगली गरम करके बच्चे की नाभी को सेक देना हम लोगों के देश में खराब रिवाज है। क्योंकि सेकने से कुछ फायदा हो या न हो लेकिन दिये का काजल लगने से

एक तरह का मैल इकट्ठा होजाता है। ऐसा करने से नाभि पक कर बच्चे को बड़ा दुःख देती है। प्रथम तो यह जानना चाहिये कि नाभि में सेकने की कोई जरूरत ही नहीं है।

तेल में कपड़ा भिगोकर नाभि पर रखने से वह अपने आप ही सूखकर गिरपड़ता है। गिर पड़ने के बाद सिवाय नारियलका तेल लगाने के सेकने की कोई जरूरत नहीं है।

दूसरे - अगर सेक देने की ही जरूरत होतो ऐसी तरह से सेकें कि नाभि के ऊपर स्याही और मैल न पड़े।

बच्चे के आहार का परिमाण और समय ठीक रहना चाहिये जब बच्चा रोवे तो भूख के लिये रोता है ऐसा ख्याल करना गलत है अर्थात रोने से ही बच्चे को दूध पान कराना नहीं चाहिये। दूध पिलाना हो अथवा स्तन पान कराना हो तो ठीक समय पर होना चाहिये। खाने के दोष से बच्चों को उदरामय अथवा दूध उखड देने की बीमारी होजाया करती है खाने के ऊपर ही दृष्टी रखना बदहजमी की खास दवाई है।

हम लोगों के देश में आपे के घर में बच्चे का प्रधान रोग ऊपरी हवा का लगजाना (यानी भूत प्रेत लगजाना) ऊपरी हवा का रोग और कुछ नहीं है बच्चों को धनुष्टकार रोग है।

मैले घर में रहना खराब हवा का लेना, खाने का दोष नामी में पीप पड जाना आदि यही रोग के कारण हैं। हम लोगों के देश में जचा के घर में यह सब दोष देखने में आते हैं। इसी लिय हम लोगों के देश में ऊपरली हवा की बीमारी इतनी सुनी जाती हैं।

विलायत आदि सभ्य देश में यह बीमारी बहुत कम देखने में आती हैं। और बच्चों की अकाल मृत्यु भी बहुत कम होती है एसा ख्याल कर कि ऊपरली हवा लग

गई है स्याने को बुलाकर इलाज कराते हैं यह बिल्कुल भूल है। जापे का घर और उस के साथ भूत प्रेत आदि का जो खयाल हम लोगो में हैं यह भी बिल्कुल गलत है। यह सब गलत बातें हमारे देस की औरतों के जी में से जितनी जल्दी निकल जाय उतना ही अच्छा है। ऊपरली हवा के के रोग के शुरू होने से पहल ही बच्चा रोने लगता है इस के बाद जावड़ा बन्द हो जाना ही खास लक्षण है। बच्चा मुंह फाड़ कर रो नहीं सका और नाका स्तन पान अथवा दूध पान नहीं कर सका है। धीरे धीरे बांयटा आ जाता है। और थोड़ी थोड़ी देर में ऐसा होता है बच्चा हाथ पांव सख्त करलेता है और मुंह जोर से बन्द करके एक प्रकार शब्द करने लगता है। तमाम शरीर कड़ा हो जाता है। मुंह से झाग निकलने लगते हैं। इसी प्रकार का बायठा थोड़ी देर रह कर बंद हो जाता है। बंद हो जाने के बाद बच्चा थोड़ी देर आराम से रहता है। इसी तरह बहुत देरी से कभी कभी तीन चार दिन के बाद इसी तरह रोग के साथ ल-ड़ाई करते करते बच्चे का प्राण निकलजाता है। यह बीमारी जैसी कष्ट साध्य है देखने में भी वैसी ही बुरी मालूम होती है। यह बीमारी पूरी तरह से जाहिर होने के बाद आराम होना मुश्किल है। जब कि बीमारी शुरू हो वैसेही समझली जावे और अच्छी तरह से दवाई कीजावे तो आराम होना समव है। बिलाडाना, सिक्यूटा, नक्सवोमिका, ओपियम हाइयोसामस, आदि दवाई लक्षणों के अनुसार देना चाहिये।

४४ ।—तापतिल्ली

तापतिल्ली कहने स ही यह मतलब समझा आता है कि

तापतिल्ली बढ़ गई है तापतिल्ली हो गई है इसका मतलब यह नहीं है कि पहले तापतिल्ली नहीं थी॥ और गिल्टियों की तरह शरीर में यह भी एक स्वाभाविक गिल्टी है पुराने ज्वर मैलेरिया ज्वर इत्यादि ज्वरों में तापतिल्ली बड़ा भयानक रूप धारण करती है, यहां तक कि करीब करीब पेट के सब स्थानों पर अधिकार कर लेती है। तापतिल्ली के बढ़ने के साथ ही और बहुत तरह की शिकायतें उपस्थित हो जाती हैं, सबब इस का यह है कि तापतिल्ली बढ़ने से खून दूषित हो जाता है॥ अक्सर ज्वर होने की वजह से तापतिल्ली बढ़ती है, इसी सबब से अक्सर तापतिल्ली के साथ ज्वर बना रहता है॥ नीचे लिखी हुई दवाइयों में जिस दवाई के लक्षण के साथ बुखारके लक्षण मिलते हों उस दवाई का ३० क्रम देना चाहिये। दवाई सुबह और शाम एक एक मात्रा सात दिन तक देकर पांच सात दिन बद कर देना चाहिये। इसी तरह से बीच बीच में बन्द करके दवाइयां इस्तेमाल करनी चाहियें।

चिकित्सा—तापतिल्ली बढ़ने पर आरसेनिक—कार्बोवेजिटेबिलिस—सीआनोथस, मायोरिकस सेरुग मिडरे, सलफर—और मर्क्युरियस आयोड—बहुत फायदे मन्द है।

तापतिल्ली के दर्द में—सीयानोथस—चायना—एलुसेटिका उपयोगी है।

तापतिल्ली और पुराने उदरामय में—चायना—इगनेसिया एपलसटिका—रसटक्स—और सलफर उपयोगी है। यदि ज्वर न रहे और तापतिल्ली बढ़ जाय और कड़ी होजाय तो सि

किसी बीमारी में प्लेग का सन्देह होने से योग्य चिकित्सक से इलाज कराना चाहिये।

प्लेग से बचने के उपाय - चारों तरफ प्लेग होने से नीचे लिखे नियम पालन करना चाहिये।

(१) हमेशा साफ कपड़े पहनने चाहियें, घर में अथवा घर के पास कोई तरह का मैला इकट्ठा न होने देना चाहिये, रहने के घर में हवा की आमदरफ्त का पूरा पूरा प्रबंध होना चाहिये, और एक घर में बहुत से आदमियों को कभी न रहना चाहिये, प्लेग के रोगी अथवा उसके कपड़े या उसके बिछोने इत्यादि का स्पर्श बिलकुल वर्जित है, नीचे के घर की अपेक्षा ऊपर के घर में रहना अच्छा है सुबह व शाम तमाम घर में राल गंधक इत्यादि सुगंधित वस्तुओं की धूनी देना अच्छा है।

(२) अनियमित और अपरामित भोजन करना, रात्रि जागरन मद्य पान इत्यादि वर्जित हैं।

(३) हर तरह की खट्टी चीज का इस्तेमाल करना फायदे मंद है, इस लिये हर रोज जियादा नीबू का रस डालकर शरबत पीना चाहिये।

(४) जो लोग तेल का कारबार करते हैं उन लोगों में यह रोग कम देखा गया है, इस लिये बहुत से डाक्टरों की राय है कि तमाम शरीर में विशेष कर मुंह और हाथ पैरों में प्रति दिन नियमानुसार अच्छी तरह तेल मलने से यह रोग बिलकुल नहीं होता है।

(५) सन् १८३८ ई० रूसके कोन्स्टेंटीनोपिल शहर में जब प्लेग

भयानक रूप से फैली थी उस समय डाक्टर हैमिंग बर्जरने सब से पहले यह देखा था कि उस शहर के रहने वालोंमें से जिन्होंने इगनेशिया बिन खाया था उसमें से किसी को प्लेग नहीं हुआ, इस के उपरान्त उन्होंने प्लेग रोग में इगनेशिया की परीक्षा करके बहुत सफलता प्राप्त की। इसी समय से डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार ने यह निश्चय किया है कि इगनेशिया बिन हाथ में बांध ने से प्लेग को विशेष कर रोकता है। डाक्टर सरकार के मत से प्लेग रोग के आरम्भ में इगनेशिया ३० क्रम देने से बहुत फायदा होता है।

(६) प्लेग रोग रोकने वाली एक और दवाई ब्यूबानीनम असदा दवाई है। १२ व ३० क्रम की रोज मात्रा सेवन करने से अक्सर प्लेग को रोकता है।

(७) घर में अगर किसी को प्लेग होतो रोगी को घर के एक तरफ एक निर्जन कमरे में रखना चाहिये, और हवा की आमद का पूरा पूरा बन्दोबस्त करना चाहिये, रोगी के मलमूत्र इत्यादि को किसी बर्तन में लेकर अलग दूर फेंकना चाहिये। और रोगी के कपड़े बिछोना भी अलग जला देना चाहिये।

(८) रोगी के व्यवहार किये हुए घर को अच्छी तरह से साफ और शुद्ध करके काम में लाना चाहिये। घर में कारबोलिक एसिड छिड़कना चाहिये, गंधक आदि की धूनी देकर कुछ दिन तक उस घर के सब दरवाजे, खिड़की खोलकर साफ हवाको आने जाने दें।

४६ बहरापन।

लक्षण - बहरापन कई तरह से उत्पन्न होजाता है, जैसे कान का दर्द, बहुत ठंड लगना, झिल्ली का बढ़जाना, अथवा कान का पुराना दर्द इत्यादि, अचानक कोई जोर का शब्द सुनने से

कान की झिल्ली का बन्द होजाना। कभी २ कान में मैल होने से भी बहरापन होजाता है।

चिकित्सा - दुर्बलता अथवा कोई स्नायविक पीड़ा होने से फॉसफरस देना चाहिये। यह बुड्ढे आदमियों के लिये बहुत फायदे मन्द है।

ठंड लगकर बहरापन होने से एकोनाइट, बैलोडोना, मरक्यूरियस, कैलकेरिया, पलसाटिला देना चाहिये।

बुखार के पीछे बहरापन होने से, पलसाटिला [चेचक के पीछे], फास फरस [विकार के पीछे], साईलेशिया [माथे के दर्द के पीछे], माथे में चोट लगने से आर्निका ॥

कैलकेरिया - बहरापन, कानके भीतर गुन गुनिया सा अथवा गाने बाजा शब्द तरह २ सुनाई देना। कान से पीब का निकलना, कुनेन खाकर ज्वर बन्द करने से रोग की उत्पत्ति होतो। देना चाहिये।

ग्राफाइटिस् - कानके भीतर खुश्की लिये हुए बहरापन होना, अपनी बात या अपने पैर की आवाज की गूंज कान में आती हो, गाड़ी में बैठने से बहरापन कम मालूम होता हो, कान के पीछे घाव होतो यह दवा देनी चाहिये।

पैट्रोलियम - बुड्ढे आदमियों के बहरेपन में यह दवा देनी चाहिये।

फासफोरस - बहरेपन की एक खास औषधि है। कान में किसी जोर के शब्द स सन्नाहट होगया होतो मरक्यूरियस या पलसेटिला देना चाहिये।

मूलेन ऑयल - बहरेपन की एक नई दवा है। हरगोज सुबह और शाम एक २ बूंद कान म डालने से जल्दी आराम होता है।

कोमायाम - कान में मैल होने की वजह से बहरापन होने के लिये यह दवा फायदे मन्द है। जलसीमीनम - थोडी देर के लिये अचानक कम सुनाई देना होजाने पर यह दवाई दनी चाहिये।

सहकारी उपाय — स्नान के पीछे कान में पानी रहना अच्छा नहीं है। सूखे कपडे से पानी पोंछ डालना चाहिये। पत्र कपडा अथवा तिनका कान में डालना बहुत बुरा अभ्यास है। बालकों के कान के ऊपर थप्पड या घूंसा कभी न मारना चाहिये। बचपन में भयकर शब्द सुनने से अक्सर बालक बहरे होजाते हैं।

४७ - उल्टी होना

कारण——अजीर्ण, न पचने वाली चीजों का खाना, मस्तिष्क विकार पाकस्थली में घाव होना, कोष्ट बद्ध, पेट में कीडों का होना, गर्भावस्था तथा गाडी या नाव में बैठने इत्यादि के कारण से उलटी होने लगती है।

मस्तिष्क विकार में उपकार और उलटी का होना बुरा है। गर्भावस्था और मृगी रोग में उलटी असाध्य नहीं होती है। यदि उलटी होने से आराम मालूम होता है, तो यह अशुभ लक्षण नहीं है, लेकिन जो रोग कमती होकर बढजाय तो कठिन जानना चाहिये।

चिकित्सा काफी उलटी होनेसे -आर्सेनिक— चायना — इपीका – गाडी अथवा नाव में बैठने से उलटी होतो काकुलस हायो सायेमस और सलफर देना चाहिये।

गर्भवतीयों को वमन होतो--इपीका–नक्स–क्रियोजोट। कीडों की वजह से उलटी होतो— सीना देना चाहिये। पित्तकी उल्टी अथवा हरी और कफ्वी होतो केमोमिला नक्स देना चाहिये।

नमकीन उलटी होतो पलसटिला देना चाहिये। खट्टी उलटी होतो पलसटिला और सलफर देना चाहिये।

इपीका— साधारण उलटी में, विशेष कर एक दफे में जियादा उलटी होने से और उसके साथ बराबर उबकाई होने से फायदेमन्द है। खाई हुई चीज का उलटी करना, कडवापित्त अथवा गोंद के समान उल्टी होने से और पाकाशय में भारी दर्द होने से।

एटीमोनियम—उबकाई और जियादा भयन्कर उलटी होने से, जीभ मोटी और सफेद रङ्ग की होने से, डकार आने से और भूख न लगने से यह दवाई देनी चाहिये।

आर्सेनिक—पाकस्थली और गले में जलन मालूम होती हो, दस्त आते हों, हाथ पैर ठंडे हों काली २ उलटी हो; पीने, वा खाने के पीछे अक्सर पानी पीने के पीछे उलटी बढती हो, तो यह दवाई देनी चाहिये।

नक्सवोमीका—उल्टी होती हो, मुंह सूखा हुआ, नींद न आना, कब्ज, शराब पीना, जियादा और अनियम से भोजन करना इत्यादि दोषों से उल्टी हो तो यह दवाई देना चाहिये। सूखी के और हिचकियों में भी यह दवा दी जाती है, बच्चों की खाई हुई चीज की उल्टी करदेने से कैमोमिला देते हैं। गाडी वा नाव में बैठने से उल्टी होतो कौकूलस देते हैं।

सहकारी उपाय - बार २ उल्टी होना वा जी मिचलाने से बरफ मुंह में रखना चाहिये, ऐसे समय साबूदाना या हलका भोजन इत्यादि खाना उचित है॥ कभी २ उल्टी बंद करने के लिये सोडा वाटर और आहार के लिये दूध में सोडा वाटर मिलाकर देने से लाभ दायक होता है।

४८ - वसंत (माता या चेचक)

यह छूत की बीमारी है। पहले सर्दी या कपकपी वगैरह बुखार ाता है और बदन का उत्ताप १०४ से लेकर १०६ डिगरी तक जाता है। इसके साथ सब शरीर खासकर पीठ और कमर में होता है। सिर दुखता है, मुह लाल रंग का होजाता है, उबकाई र उल्टी आने लगती हैं, पेट मे दर्द इत्यादि बातें उपस्थित जाती हैं, और शरीर थकना और बेचैनी वगैरह इत्यादि स्नाय क अवस्था भी दीख पड़ते हैं। तीसरे या चौथे रोज छोटे २ दाने रीर में निकलते हैं। यह पहले मुह पर विशेष करके माथे निकलते हैं और दो एक दिन में ही सब शरीर में निकल ते हैं। इस वक्त में बुखार कमती होकर शरीर का उत्ताप करीब ोब स्वाभाविक होजाता है। यह दाने पहले बहुत स्वच्छ लाल के दिखाई देते हैं और तीसरे या चौथे दिन क्रमशः बड़े हो- ते हैं। दानों को दबाने से छर्रे के समान कड़ा पदार्थसा मालूम ा है, फिर इनमें धीरे २ पीब उत्पन्न होती है आठवें, दिन दाने कर फूट जाते हैं, और पीब निकल जाता है, और जो दाने नहीं ते हैं तो योंही सूख जाते हैं। जिसवक्त पीब पड़ती है तो बुखार हुआ दीखता है, पहले ठंड या कपकपी लगती है, पीछे नाड़ी होती है, प्यास बहुत लगती है, जीभ और मुह सूखा सूखा ता है इत्यादि इस बुखार के लक्षण दीखते हैं और उत्ताप ब १०५ डिगरी तक बढ़ जाता है। इस रोग में बहुत बुखार , सख्त कमजोरी, कफ से श्वास आना, खून की दूषित अवस्था, साव, इत्यादि उपस्थित होने से मृत्यु होती है। इसके सिवाय डा, वायु नली, फेंफड़ा को ढकने वाली झिल्ली और आंत : में प्रदाह अतिसार, तरह २ के स्थायी प्रदाह और घाव

बगैर पेशाव की जगह से और मुह से खून गिरना और नाक में घाव इत्यादि शिकायतें इसके साथ २ होती हैं। साथ रहने वाली शिकायतों के कमती जियादा होने से रोग सामान्य अथवा सांघातिक आकार प्राप्त करता है। दाने सूखजाने पर ११वें या १४वें दिन खुरंट उचलजाते हैं और उसके नीचे का दाग ७ या ८ सप्ताह तक रहता है जो खाक उड़जावे तो उनके नीचे दाने के स्थान में छोटा गढ्ढे कासा दाग रहजाता है। यह रोग एकवार होने से और दूसरे बार नहीं दिखाई देता है।

चिकित्सा - पीड़ा के आरम्भ में ज्वर होने के समय - एकोनाइट, बेलेडोना, यैपटीशिया, भैरट्राम - विरिड ॥

दाने फूटने की अवस्था में - येन्टीमनीटार्ट, थुजा, सलफर।

पीव पड़ने की अवस्था में - एन्टीमनीटार्ट, मरक्यूरियससोल, एपीस, हिपेकेसिस ॥ दाग बैठने पर - केम्फर, सलफर, ।

फेंफड़े के प्रदाह इत्यादि शिकायतों की हालत में - फासफरस, एन्टीमनीटार्ट। फेंफड़े में खून जियादा होने पर-एकोनाइट, ब्रायोनिया।

वायुनाली में प्रदाह होने पर - ब्रायोनिया, कार्बोयाई क्रम।

पीठ में ज्यादा दर्द होने पर - रसटक्स।

गिल्टियों में सूजन होने पर -मारक्यूरियस ॥ शोथ, मांसमिल जाने पर और गले के भीतर सूजन होने पर—एपिस। बकने पर बिलेडोना, हायोसायमस, स्टेमोनियम, भैरट्राम विरिड,

एकोनाइट—रोग के आरम्भ में प्रदाह के समय बहुत उत्तम दवा है। सिर में दर्द, बकना इत्यादि रहने पर बेलेडोना के साथ बारी से दिया जाता है।

इन्टीमोनियम टार्ट—यह चेचक की बहुत अच्छी दवा है। दाने अगर देर से निकलें और दबजाई, उल्टी और अनिद्रा या दाने बैठ जाय तो यह दवाई दी जाती है। साम के रस्ते में गले के भीतर और पाकाशय आदि स्थानों में दाने निकलें तो दिया जाता है।

बेलेडोना—एकोनाइट के लक्षण देखिये।

स्ट्रेमोनियम—इन्टीमोनियम के बाद अथवा इस के साथ शरीर से दाने निकलने की हालत म दिया जाता है।

मरक्यूरियस—गले का घाव, लारगिरना, आमाशय अथवा उदरामय, और जीभ फूलने की हालत में दिया जाता है। रोग की अखीरी हालत में जब दाग पड़ने लगते हैं, उस समय यह दवा आवश्यक है। दानेपकने पर और उनकी वजह से बुखार आने पर काम में लानी चाहिये।

वेरीयोलीनम—यह दवाई चेचक को रोकती भी है और आराम भी करती है यह हर हालत में दी जा सकी है।

आर्सेनिक—बहुत कमजोरी, नाड़ी कमजोर, बहुत प्यास शरीर में जलन, और बेचैनी की हालत में यह दवाइ दी जाती है। यह बहुत कठिन और सांघातिक रोग है, इस लिये इस के रोगी के इलाज को अच्छे चिकित्सक के हाथ में देना चाहिये।

सहकारी उपाय—*जिस मकान में रोगी रहे, उस को ठंडा* साफ हवादार और अंधेरा कर के रखना चाहिये। घर की बास मिटाने के लिये कारबोलिक एसिड को (१ औंस कारबोलिक एसिड में ४० औंस पानी मिलाने म कारबोलिक लोशन तयार होता है) घर में छिड़क कर अथवा धूनी दे-

कर दुर्गंध रहित रखना चाहिये घर के भीतर ऐसा बन्दो-बस्त रखना चाहिये कि बीच बीच में साफ हवा आ सके रोगी के शरीर पर बहुत कपडे पहनने की जरूरत नहीं है।

ओढने का कपडा सदा बदल देना चाहिये, प्यास मिटाने के लिये, ठण्डा पानी, निम्बू के रसके साथ मिसरी का शर्बत पीने को दिया जाता है। ज्वर की पहली अवस्था में हलका पथ्य जैसा कि साबूदाना, बारली, अन्त में मास अथवा मछली का शोरवा, नारंगा, बेदाना, आदि पका हुआ अम्ल मधुर फल खाने के लिये दिया जासका है। शीतला के दाग मिटाने के लिये गिलीसिरीन अथवा स्टार्च देकर ढकदेना चाहिये।

रोकने का उपाय—टीका लगाना ही इस का प्रधान उपाय है बच्चे के डाढ दांत निकलने से पहल ही टीका लगा देना उचित है। बीमार होने पर टीका लगाना उचित नहीं है बहुत से आलस्य के कारण टीका देने में देरी कर देते हैं, यह बडा अन्याय है। चेचक पूरे तौर स जब फैलजाय तो वैक्सीनिन या वेरीयोलिम ३० क्रम सप्ताह में १ या दो बार देने से इस के आक्रमण से रक्षा मिलती है।

४६ बद

लक्षण—सुजाक या उपदंश (गर्मी) के दोष से रान की गांठ फूल आती हैं, इसी को बद कहते हैं, गिल्टी फूली हुई लाल रंगत की अकस और वेदना युक्त होकर फटी पड जाती है। क्रमशः इस में राध पड कर यह पक उठती है। इसी स-घय रोज ठंड लगकर बुखार होता है अक्सर करके बद पकती ही है।

चिकित्सा—बेलेडोना–पहली अवस्था में जब बहुत तकलीफ और धपका हो और गाठ लाल रगत की हो, और उस में मवाद होता हो दिया जाता है। मरक्यूरियस आयोड–जब यह बहुत कड़ी हो तब देना चाहिये। हीपरसलफर यह पक उठने पर और पारे का दोष रहने पर। आरसेनिक आयोड जब गाठ कड़ी, बहुत सूजन, और पकने पर आजाता है तब देना चाहिये इस दवाई से यह बैठ भी जाती है हीपर और साइलेशिया घाव होने पर भी दिये जाते हैं सर पड़ जाने के उपक्रम होने पर साइलेशिया १२ क्रम बहुत लाभ पहुंचाता है।

कारबएनीमेलिस—गाठ कड़ी रहने से यह देनी चाहिये।

सहकारी उपाय—यह होने पर शुरू से ही एकान्त स्थान और विश्राम बहुत आवश्यक है, ऐसी अवस्था में थोड़ा घूमना भी बड़ा नुकसान करता है। यह जब बढ़ने लगे तब बराबर गर्म पुलटिस लगाते रहना चाहिये। यह अक्सर ही पकती हैं बैठती नहीं पक उठने पर नश्तर से मवाद निकलवा देना बहुत आवश्यक है। जब तक घाव पूरे तौर से न सूख जाय तब तक चारपाई से न उठना चाहिये। थोड़ासा घाव रहने पर पैदल चलने से ही नाली हो जाती है (सर पड़ जाती है)। नाली होने से रोग बहुत कुछ दुःसाध्य हो जाते हैं।

५० वात (गठिया)

लक्षण—गांठए में दर्द, पीड़ित स्थान बहुत कड़ा और छूने में बहुत दर्द पैदा हो इस के साथ ठंड या कपकपी के साथ बुखार आता हो, शरीर का उत्ताप बहुत ज्यादा हो

जाता है, तकलीफ की जगह में काटने और सुई चुभाने का सा दर्द मालूम होता है, परिपाक यंत्र की खराबी, शरीर के पसीने में खटाई की सी बास, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब इत्यादि बात के लक्षण हैं। मेंह में बहुत भीगने से तथा गीले कपड़े इत्यादि ज्यादा देर तक पहनने से अक्सर ही यह रोग उत्पन्न हो जाता है। बात रोग होने पर हृतपिण्ड की यानी दिल की पीड़ा उत्पन्न हो सकी है, ऐसा होने से रोग सांघातिक हो जाता है, इसलिये बीमारी की हालत में हमेशा दिल (Heart) की परीक्षा करना उचित है।

(१) नई गठिया

चिकित्सा—एकोनाइट—बीमारी की शुरू की अवस्था में दी जाती है, बहुत बुखार चबका मारने की तकलीफ रात में दर्द जियादा होना, जोड़ों पर सूजन, और लाल रंग हो जाना, तकलीफ से रोगी चिल्लावे, रोवे, और बेचैन हो, बहुत प्यास लगे, बहुत डर और मन की चिन्ता होने की हालत में दी जाती है।

बेलेडोना—मस्तिष्क में खून का ज्यादा होना, मुंह और आंखें लाल रंग, तकलीफ की जगह बहुत सूजी हुई और लाल रंग की, नींद का न आना, इत्यादि हालत में दिया जाता है। ब्राइयोनिया—छुरी से काटने या सुई चुभाने का सा दर्द पट्ठों में होना, सूजा हुआ श्याम चमकदार हो, जरा झुकाने से तकलीफ का बहुत बढ़ आना, खफिम दर्द रहने पर भी शरीर बेचैनी के सबब झुकाना पड़ता है। शाम को दर्द का बढ़ना और पेट में गड़बड़ इत्यादि हालत में दिया जाता है।

मरक्युरियससल - जब किसी बड़े जोड़ में दर्द हो बहुत पसीना आने पर, पसीना आने से कुछ आराम न मालुम हो, और रातमें ज़ियादा तकलीफ बढ़ने की हालत में यह दवाई दीजाती है

पलसेटिला - अगर एक जगह से दूसरी जगह तकलीफ जाती हुई मालूम हो, स्त्रियों के लिये यह बहुत उपकारी है यदि मासिक धर्म की कोई गड़बड़ होतो यह दवा दीजाती है। और तकलीफ रात में बढ़ती हो और शरीर उघारने और ठंडा जल पीने से तकलीफ कम होती होतो यह दवाइ दीजाती है।

रसटक्स - अगर तकलीफ की जगह कड़ी होजाय, विश्राम की हालत में आबहवा बदलन में और पहल झुकाने में तकलीफ बढ़े और धीरे धीरे झुकने और सेकने से तकलीफ कम होतो यह दवा देनी चाहिये।

जोड़ में गठिया और सूजन होने से - बेलडोना ब्रायोनिया, कोलचीकम, और लाईका पोडियम देना चाहिये। तकलीफ की जगह टेढ़ी और कड़ी होजाये तो कौस्टीकम, लैकेसिस, सलफ़र, रसटक्स, और सीपिया देना चाहिये। गठिया के साथ पक्षाघातमें चायना, रसटक्स, कौकूलस। गर्मी में कम होने पर - रसटक्स, कौस्टीकम, लाईकोपोडियम, मरक्यूरियस, सलफर देना चाहिये। ठंडी चीज लगाने से आराम होता होतो पलसटिला देना चाहिये।

छाती पीठ इत्यादि जगहों में गठिया होने से आर्निका, मरक्यूरियस, नक्स, और रसटक्स देना चाहिये। अगल बगल के दर्द में रेनाकूलस, तथा, पहुंचे और अंगुलीयों के जोड़ों के दर्द में कौलोफाइलम देना चाहिये। बड़ी हड्डियों के ऊपर लाल मास इत्यादि में दर्द होतो मेजेरियम, और दाहिनी बगल में दर्द होतो लैकेसिस।

शाम के वक्त दर्द बढ़े तो पलसटिला, रसटक्स और आधी-रात के पहले दर्द बढ़े तो आईयोनिया देना चाहिये।

आधीरात के पीछे दर्द बढ़े तो आर्सेनिक, मरक्यूरियस, सलफर, और थूजा दिया जाता है। सबेरे के करीब दर्द बढ़ जावे तो कार्बोकार्य, नक्स, रसटक्स और थूजा दिया जाता है। सर्दी लगने से दर्द बढ़े तो आर्गोनिया, पलसटीला और थूजा दिया जाता है। आतशक, पारे तथा सुजाक के दोष से जो गठिया हो तो वह कुछ दुस्साध्य होती है। क्योंकि शरीर में मिले हुये उस दोष को अलग न किया जाय तब तक गठिया आराम नहीं होती। पारे के दोष से गठिया होतो कारबोवेजीटेबिलिस, चायना, लाइकोपोडियम, सलफर, हीपर, और सेकिस दिया जाता है।

सुजाक के दोष से गठिया होतो क्लेमेटिस, थूजा, लाईकोपोडियम और मरक्यूरियस दिया जाता है।

सहकारी उपाय—बहुत उत्ताप और सूजन और तकलीफ रहे तो गर्म पानी से या गर्म पानी में आर्निका मिलाकर सेंकने से फायदा होता है। पांसूटेल की पोटली से सेकना भी अच्छा है। रसटक्स या आर्निका लीनीमेन्ट की मालिश करने से फायदा देखा गया है। बारली, साबूदाना, अरारोट इत्यादि हलका पथ्य देना चाहिये। इसके बाद धीरे २ पुष्टि कारक पथ्य दिया जाता है। रोगी को थोड़ा आराम होने पर ही टहलना चाहिये। गर्द गठिया के सब लक्षण चलेजांय और बीमारी पुरानी पड़कर सख्त होजाय तो उस जगह को गुनगुने नमक के पानी से धोकर रसटक्स लीनीमेन्ट की मालिश करना उचित है।

(२) पुरानी गठिया

सोथ कड़े पड़ जांय, और फूल जांय, अक्सर घुटनों में दर्द हो, और जोड़ बन्द होजाय और अजनसके और पैर अक्सर सूज जाय।

चिकित्सा—रसटक्स—पीड़ित स्थान कड़े और सुपंख हो जाय, और कुछ देर स्थिर रखने में तकलीफ बढ़े, खिंचावट और चीरने का सा दर्द हो तो देना चाहिये। सल्फर—पुरानी गठिया और शरीर में खुजली चले और तकलीफ में किसी से आराम न हो तो दी जाती है। यदि मा बाप के गठिया हुई हो और उस के कारण सन्तान रोग ग्रस्त हो तो भी यह दवा देनी चाहिये।

कौलोफाइलम—[illegible] हाथों में पीड़ा हो, दर्द घूमता फिरता रहे, छोटे२ जोड़ों में दर्द, उंगली में दर्द, और हाथ की मुट्ठी न लगती हो तो देना चाहिये।

कौस्टिकम—जोड़ न मुड़ता हो, चलने से आराम मिलता, हो ठंडी हवा से दर्द बढ़ता हो और आराम को जी न चाहता हो तथा शाम को दर्द बढ़ता हो हाथ माथे तक नहीं उठाया जाय, नीचे के भाग बहुत दुर्बल और बेबस मालूम हों तो देना चाहिये।

कौल्चिकम—यह बहुत जरूरी दवा है रसटक्स और सल्फर के पीछे दी जाती है हड्डियों के ऊपर के मांस खाल और जोड़ों के भीतर की झिल्ली के ऊपर इस का बहुत असर पड़ता है।

ब्रायोनिया-मरक्यूरियसोल, एलमटिका बहुत जरूरी दवा है
(नई गठिया देखो)

कैल्केरिया—जल में खड़ा रहने से जो गठिया हो।
जोड़ों के भीतर टक्कर की आवाज आती हो दोनों पैरों में बहुत पसीना आता हो और ठंडे रहते हों। (कंठमाला इसे कठमाला भी कहते हैं गले में फुन्सी सी हो जाती है) क

दोष से जो गठिया हो और अमावस्या व पूर्णिमा में दर्द बढ़ता हो तो यह दवाई देनी चाहिये।

कैफोसिस— नीचे के अङ्गों में गठिया, नींद आतेही दर्द शुरू हो, तकलीफ की जगह टेढ़ी होजाय और झुक मुड़ न सके खुश्की हवा और बर्सांती हवा में नींद के पीछे और शाम के वक्त दर्द बढ़े तो यह दवा देनी चाहिये।

पुरानी गठिया में इसके साथ बारी २ से डीपर दिया जाय तो बहुत फायदा करता है।

सहकारी उपाय - गर्म और सूखे मकान में रहना चाहिये सर्दी और ठंडी हवा से बचने के लिये जाड़े और बरसात में फलालेन या और कोई गर्म कपड़ा पहनना चाहिये। आर्निका, व रसटक्स लीनीमेन्ट मालिश करने से तकलीफ कम होती है। असल सरसों का तेल मालिश करने से भी फायदा देखा गया है। भोजन हलका और ताकतवर देना जरूरी है।

५१ - छाती में जलन।

लक्षण—छाती में जलन, अजीर्ण का एक प्रधान लक्षण है। *इससे पेट में लगाकर गले तक जलन होती है और कभी २ उल्टी* भी होजाती है।

चिकित्सा—कैलकेरिया, कार्ब, पुराने अम्ल रोग में इसका देना बहुत अच्छा है। भोजन अच्छी तरह परिपाक न होने से कलेजा भारी और खट्टी २ डकार आना इत्यादि को अम्ल रोग कहते हैं। दिन में २ दफे दवाई खाने से अम्ल रोग ठीक होता है।

नक्सवोमीका - सब तरह की मामूली शिकायतों में दीजाती है। यह सलफर - के साथ बारी बारी से भी व्यवहार में आती है

सलफर; बहुत दिनों की पुरानी पीड़ा होने से नक्समोमिका के साथ बारी २ से दीजाती है।

पल्सेटिला-मद् (दही के भीतर एक तरह का सफेद पदार्थ रहता है) और तेल का पदार्थ खाने से अजीर्ण और छाती में जलन होने पर दीजाती है। मुह में कड़वापन और सड़ा और दुर्गंध रहने पर भी देते हैं। ब्रायोनिया, खाने के बाद, ऐसा मालूम हो कि पेट में पत्थर रक्खा है, कब्जियत, सिर में दर्द, जी मिचलाना और पित्त के दर्द में दीजाती।

सहायकारी—कैलकेरिया - फास - कैमोमिला—चायना आई कोपोडियम और नक्सवामिका दिया जाता है।

अजीर्ण के कारण खाई हुई चीज जो गले तक निकल आती है उसमें ब्रायोनिया, इगनेशिया- सलफर- और कैप्सिकम देते हैं।

सहकारी उपाय- अजीर्ण देखो।

५२ - व्रण

लक्षण--बड़ा होने से फोड़ा और छोटा होने से व्रण कहा जाता है। पहले जलन, लाल रंग, और दर्द के पीछे पीब पैदा होकर मुंह होजाता है, कभी अपने आप फट जाता है, कभी नश्तर से चीरना पड़ता है, खून खराब होने से बच्चों के मुंह और माथे पर अक्सर देखा जाता है।

चिकित्सा - बेलेडोना - फुंसी जब पहले लालरंग की, दर्द के साथ फूल उठे यानी राध पड़ने के पहले से ही यह दवाई नीचे क्रम में दिन में कई दफे देने से निश्चय फायदा होता है।

आर्निका - होट आंख के पलक इत्यादि कोमल स्थानों में फुंसी होजावे और उनमें तेज दर्द रहे तो यह दवाई फायदेमंद

है। हीपर-सलफर—पीब पड़ने के उपरान्त यह दवा देनी चाहिये

मरक्यूरियस - इसको पहले देने से फुन्सी को पकने नहीं देता और पीछे देने से मवाद को निकाल देता है। बगल, गला, रान इत्यादि की गाठों के पकने को यह अत्यन्त लाभ दायक है साईलशिया इसको पुरानी हालत में देना चाहिये।

ज्यादातर, मर पड़जाने पर, हमेशा फोड़ा होते होंतो सल फर देने से खून साफ होजाता है। जो बहुत धीरे २ पकें तो हीपर और जलन, दर्द के साथ फोड़ा हो तो बेलेडोना अथवा मरक्युरि- यस देना चाहिये।

जवानी की उमर में मुह पर फुन्सी होकर मुह अकसर बहुत ही कुरूप होजाता है। कोई २ फुन्सी पकी होजाती है। और उस में दर्द होने से बड़ी तकलीफ होती है। मुह के ऊपर की फुन्सियों को आराम करने के लिये कारबोवेजीटेबिलिस, हीपर, कैलकेरिया, और सलफर अच्छी दवाई है। जवानी की उमर में स्त्री के मत्था भार स फोड़ा फुसी होना कैलकेरिया अच्छी दवाई है।

सहकारी उपाय—पहले फुंसी में जलन हो और दर्द होतो ठंडे पानी की पट्टी बांधनी चाहिये। पकने की हालत होने पर तीसी (यानी अलसी की पुलटिस, बांधनी चाहिये जो अपने आपन फूटे तो नश्तर से चीर देनी चाहिये। जो हमेशा फोड़ा फुन्सी निकलते होंतो साधारण स्वास्थ्य संबंधी नियमों का अच्छी तरह प्रति पालन करना चाहिये।

५३ - दिमाग में खून अधिक होना

लक्षण-मुह की रंगत लाल मुह और गलेकी नस और रगें खून से भरी हुई मालूम होती हों सब शरीरकी रगें फड़कती होंगी द विशेष,

मालूम होती हो शिरमें दर्द, जागने से अथवा सिरनीचा करने से सिर में दर्द की जियादती मालूम होती हो, कान में सन सन की आवाज मालूम होना इत्यादि इस रोग के लक्षण हैं जो बहुत पुष्टिकारक भोजन करते हैं और कभी मिहनत नहीं करते उनको अक्सर यह रोग होता है।

चिकित्सा—एकोनाइट— सिर के दर्द को देखो।

बेलेडोना—सिर के दर्द को देखो। अगर जरा पैर रखने से या थोड़ा चलने से, थोड़ा शब्द सुनने से, अथवा रोशनी देखने से, अथवा सिर नीचा करने से पीड़ा बढ़े तो यह दवा देनी चाहिये।

नक्सवोमीका—अजीर्ण अथवा कब्ज रहने में दी जाती है जो लोग हमेशा घर में बैठ कर काम करते हैं उनके लिये भी उपयोगी है, बाहर की हवा से सवेरे अथवा भोजन करने बाद पीड़ा बढ़े तो यह औषधि देनी चाहिये। ओपीयम, अचानक खून का चढ़ आना सिर का भारीपन कान में सन २ होना शिर के भीतर लपका मालूम होना प्यास, मुंह का सूखापन, अज्ञानता इत्यादि को फायदा करती है। मल बन्द होने के कारण रोग की उत्पत्ति होने से यह दवा बहुत उपयोगी है।

ग्लोनाइन—माथे में खून का आना शिर में दर्द और माथे के भीतर धपकन को फायदा करती है। शराब पीने वाले लोगों के लिये नक्सवोमीका, बलसेडिला, ओपीयम और कलकेरिया बहुत उपयोगी है। जवानी के शुरू में लड़कियोंके लिये एकोनाइट, बलोडोना, पलसेटिला फायदा करता है। दांत निकलने के वक्त बच्चों के लिये एकोनाइट, कैमोमिला, कौफिया, और जलसिमीनम देना चाहिय।

बहुत भारी खुश्की होने के कारण माथे में खून की जियादती के लिये कौफिया, और ओपीयम देना चाहिये भय के कारण माथे में खून की जियादती होने के लिये ओपीयम देना चाहिये अथवा क्रोध से रोग उत्पन्न हो तो कैमोमिला उपयोगी है।

गिरने और चोट लगने से हो तो आर्निका और मरक्यूरियस देना चाहिये।

सहकारी उपाय—प्रात काल उठ कर साफ हवा में मामूली कसरत, और ठंडे पानी से स्नान, और ठंडा जल पीना जरूरी है। सब तरह की गर्म चीज खाना मना है

हर रोज सध्या के समय ठंडे पानी में पैर धुयाकर पीछे खूब जोर से मल देना चाहिये।

५४।—सिर का घूमना

इस रोग में ऐसा मालूम होता है कि चारों तरफ सब चीजे घूमती है अथवा रोगी स्वय घूमता है।

पाकाशय का दोष, इन्द्रियों का अत्याचार, नशीली चीजों का सेवन, रात में जागना, दिमाग में बहुत खून भरना, अथवा कम होना, और मस्तक में चोट लगने इत्यादि कारण से यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोग की उत्पत्ति कई कारणों से होती हैं इस लिये पहले इस का कारण निश्चय कर पीछे उस के अनुसार चिकित्सा करने से बहुत जल्द फायदा होता है

(१) दिमाग में जियादा खून की वजह से

लक्षण—दिमाग में जियादा खून इकट्ठा हो जाने का य थान देखो।

चिकित्सा—एकोनाइट, और जिलसीमिना शरीर से दिया जाता है। विशेष करके चारपाई से उठने में अथवा सिर को नीचे से ऊपर उठाने में सिर घूमने लगे और मुंह लाल रंग का हो जाय।

जेल्सीमिना—एकोनाइट देखो ॥ यदि अज्ञानता शराबी की तरह पैरों का रखना दिमाग में खून का भरजाना और बहुत बोझ मालुम पड़ना।

नक्सवोमीका—अगर खाने के समय अथवा खाने के बाद बाहर हवा में घूमने के वक्त मूर्छा सी मालूम हो, और सिर में सन सनाहट होकर एसा मालुम हो कि नींद आयेगी तब यह दवा दी जाती है अगर चक्कर खाकर बीमार गिर पड़े तो बेले-डोना, पल्सेटिला और रस्टक्स देना चाहिये।

(२) अजीर्ण के कारण

लक्षण—सिर घूमना, नींद सी आना, विशेष कर भो-जन के बाद ही सिर का भारी होना सिर में दर्द जीभ मैली पेट फूला हुआ, खाने की अरुचि और उल्टी होना।

चिकित्सा—नक्सवोमिका—इस से पहले देखो।

बहुत खानेअथवा नशीली चीजों के सेवन से रोग हो तो दी जाती है। पल्सेटिला बहुत घी का पकमान खाने से रोग हुआ हो तो देना चाहिये।

बाहर हवा में फायदा मालुम होता हो और सायर जी

मिचलाता हो अथवा नशा सा माफिक मालुम होता हो तो यह दवाई देनी चाहिये।

सहकारी उपाय—पेट में गड़बड़ रहे तो उपवास करना चाहिये पीछे हलका पथ्य लेना चाहिये पीने को ठंडा पानी देना चाहिये।

(३) दुर्वलता के सबब

चिकित्सा—चायना अच्छी दवा है। सुबह के वक्त सिर घूमने से कैलकेरिया, नक्सवामीका, रसटक्स, फासफरस देना चाहिये। शाम के वक्त सिर घूमता हो तो थेलेडोना पलसेटिला, सीपिया, लेकेसिस फायदा करती है।

सोने के वक्त अगर सिर घूमता हो तो पलसाटिला, आरसेनिक दिया जाता है।

उठने के वक्त होतो नक्सवामिका, रसटक्स, लैकेसिस उपयोगी हैं।

घूमने के वक्त होतो पलसेटिला, आइकोपोडियम फासफरस, और कैलकेरिया देना चाहिय। सिर झुकने से कैलकेरिया आइयोनिया और सीपिया फायदा करता है।

खाली पेट रहने से दर्द हो तो फासफारस, कैलकेरिया और चायना दिया जाता है।

भोजन करने के बाद होतो कैलकेरिया, नक्स, और फासफरस।

नींद से जगने पर होतो फासफरस, सीपिया और नक्स।

चलने से आराम मालूम होतो रसटक्स और पलसटीला।

विश्राम करने से आराम मालूम होतो नक्स और थिलाडोना।

सिर घुमने से नक्स, इपीका, आरसेनिक, पलसटीला ।

सिर घूम कर आगे गिर पड़े तो नैपाद्रिम, सिक्यूटा, स्पाइजीलिया ।

पीछे गिरे तो रसटक्स, नक्स और ब्रायोनिया ।

बगल में हो तो साइलीसिया, सलफर और इपीका देना चाहिये ।

सहकारी उपाय—और कोई रोग न होतो पुष्टि कारक यानी ताकत वर चीजें देनी चाहिये ।

५५ सिर में दर्द Headache

लक्षण—सिर में दर्द होने में चाहे कुल सिर में हो अथवा किसी हिस्से में हो उस को सिरका दर्द कहते हैं । यह सर्दी, सिर में खून की विशेषता, अजीर्ण, स्नायु विधान की गड़बड़ से, मानसिक चिन्ता, कब्ज, अजीर्ण थकावट इत्यादि कारणों से होता है । यह अकसर शरीर में प्रवेश किये हुए किसी रोग का उपसर्ग मात्र है ।

१—सर्दी के कारण ।

लक्षण—सिर में तेज दर्द—अकसर सवेरे के वक्त कम, सन्ध्या के समय ज्यादा, आंखों में पानी भरआना, छींक, नाक में

कैमोमिला - ठंडी हवा लगकर अथवा पसीना दबने के कारण सिर में दर्द होने से देना चाहिये।

मरक्यूरियस सोल—हमेशा छींक आना, नाक से पानी गिरना, ठंड लगना, रात में पसीना आना, हाथ पैरों में दर्द इत्यादि हालतों में दिया जाता है॥

नक्सवोमिका - माथे में भारीपन, और नाक बंद मालूम होने से देना चाहिये। सवेरे पतला कफ निकलना शाम और रात में सूखा कफ निकलना, मुह सूखा हुआ और ज्यादा प्यास इत्यादि हालत में रहे तो उपकारी है।

सहकारी उपाय - सर्दी का बुखार देखो।

२ सिर में अधिक खून होने से

लक्षण -माथे में खून भरा हुआ और भारी मालूम होना, सिर घूमना, विशेष कर नीचा करने से। सिर के भीतर लपकन मालूम होना, माथे का उत्ताप, गले की सब -रगों- का -फड़कना, सिर हिलाने या झुकाने से या लेटने से दर्द का बढ़ आना।

चिकित्सा- ऐकोनाइट - मुह की रंगत लाल और सूजा हुआ मालूम होना दर्द इतना ज्यादा होकि बेहोश कर देता हो।

बेलेडोना - दर्द सख्त मालूम हो तो ऐकोनाइट के साथ पारी पारी से दिया जाता है। सिर में लपकन, सिर में खून अधिक, माथे के भीतर सामान्य शब्द मालूम होना, हिलने झुकने में और रोशनी में कष्ट मालूम होना।

ग्लोनोयिन सिर हिलाने स ऐसा दर्द हो कि सिर फटा जाता हो, मज़बूत लपकन, पैदल चलने से, विशेष कर माथ खोलने से, और हिलने झुलने से दर्द कु ।

जैलसीमियम - सिर में भारीपन, विशेष कर गरदन और सिरके पीछे की तरफ, - दर्द कधे तक फैला हुआ, ऊचे तकिये का सहारा लेने से दर्द कम होना। आंखों से धुंधला दीखना, सिर घूमना, भारी अशक्तता, और सब शरीर की दुर्बलता और तन्दुरुस्ती खराब मालूम होने पर यह देने से खूब फायदा करताहै।

नक्सवोमिका-सिरमें दर्द - सिरमें बोझसा मालूम हो कि सिर फटजायेगा-अथवा आंखों के ऊपर भयानक दर्द सिर हिलने से और खांसने में ज्यादा दर्द मालूम होना-पित्त, और खट्टी उल्टी का होना। बहुत नशीली चीजोंका इस्तेमाल, घर में बैठकर बहुत काम करना मानसिक परिश्रम के सबब होने से देना चाहिये- दर्द सुबह के वक्त और खुली हुई जगह में बढ़ता होतो यह दवा फायदा करते हैं। ओपियम—अशक्तता मालूम होने से देनी चाहिये

सहकारी उपाय—सब तरह की उत्तेजना बन्द करना चाहिये भोजन इत्यादि बातों में विशेष ध्यान रखना चाहिये-मांस और शराब बिलकुल छोड़ देना चाहिये।

२ कब्ज अथवा अजीर्ण के कारण।

लक्षण—जीभ मैली, मुह का बुरा स्वाद, भूख न लगना, जी मिचलाना, के होना, वद के साथ २ उल्टी जियादा होना।

चिकित्सा ब्रायोनिया— यदि मल कड़ा पड़ गया हो और निकलने में बहुत तकलीफ देता होतो बहुत उपकारी है।

इपीकाक— बहुत जी मिचलाने से या के होने में बहुत उपकारी है।

नक्सवोमिका–बहुत कब्ज। पाखाने जाने में दस्त। का नहोना अथवा बहुत सिर मे दर्द होना। (Coffee) (कहवा) तमाखू

अथवा नशीली चीजों के सेवन करने से होतो बहुत फायदा करता है।

नौक्सवोमिका— अगर बहुत दिन से दस्त बन्द होगया हो और दस्त की बिलकुल हाजत नहो और उसके साथ साथ सिर में भारापन हो तो देना चाहिये।

पलसटिला - अजीर्ण होने के साथ यदि सिर के दर्द का कोई संबंध रहे और बहुत तेल या घी की चीज खाने से दर्द हुआ होवे, तीसरे पहर या सन्ध्या के वक्त दर्द की ज्यादती, सुबह के वक्त मुह का स्वाद बिगड़ जावे तो देना चाहिये।

सहकारी उपाय - अजीर्ण के कारण सिर में दर्द होने से सब से पहले भोजन आदि का ठीक नियम करना चाहिये। बहुत तेल की अथवा भारी या न पचने वाली चीजों का छोड़दें। हलका भोजन करना चाहिये - बाहर हवा में सहज कसरत करना बहुत अच्छा है।

४ - बाहरी सबबों से

चिकित्सा—आर्निका—गिरने स चोटलगने से, घाव होने से, अथवा बहुत मिहनत करने से जो दर्द हो तो देना चाहिये।

आइयोनिया - सर्दी या गरमी लगने से वायु परिवर्तन होने से या बहुत शरीर गरम होकरजो सिरमें दर्द हो तो देना चाहिये।

नक्सवोमिका—मनकी चिन्ता, घर में बैठकर बहुत काम करना अथवा बहुत दिन किसी रोगी क पास रहकर उसकी सेवा करने से जो सिरमें दर्द हो तो देना चाहिये।

५ - मानसिक विकारके कारण।

चिकित्सा—कैमोमिला - गुस्सा अथवा उत्तेजना होने के कारण दर्द होतो देना चाहिये।

ओपियम - भयके कारण जो सिरमें दर्द हो तो फायदा करता है।

इगनेशिया - मानसिक रंज या दुःख अथवा दिल टूट जाने से दर्द होतो देना चाहिये

६ - स्नायविक विकार से सिर में दर्द।

लक्षण - इसका खास लक्षण यह है कि यह कभी कभी होता है - दर्द सिरके एक तरफ अथवा किसी खास जगह जम कर हो - दर्द की जगह दाबने से तकलीफ मालूम हो, बेचैनी, आवाज, और मनकी चिन्ता बरदाश्त न होती हो, सिर दर्द के साथ अकसर पित्त अथवा कफ की उल्टी होती रहे।

चिकित्सा—बेलेडोना-सिर में खून की ज्यादती के सिर दर्द का बयान देखो—

स्पाइजीलिया—चपका चलने वाला दर्द-ज्यादातर जो एक तरफ हो—और टहलने से और गरम हवा लगने से दर्द बढ़े, दोनों आंखों में इतना दर्द हो कि छुए न जाती हो।

चायना—स्त्रियों के मासिक धर्म के समय बहुत खून गिरने से, अथवा ऋतु बहुत दिन तक ठहरना होने —अथवा और किसी तरह स्त्रियों के खून गिरने से, और पुराना उदरामय रहने से जो दर्द हो तो देना चाहिये-दर्द मानसिक चिन्ता के कारण बढ़ना-अथवा बहुत इन्द्रिय के अत्याचार के कारण सिर के पीछे के हिस्से में दर्द हो तो यह दवाई देनी चाहिये।

कौफिया—दर्द बहुत ज्यादा होने से तथा सिर के एक

तरफ ठहरे रहने पर उस जगह ऐसा मालूम देता हो कि सूआ चुभाया जाता है, आधा सिर दर्द होना उस के साथ सामान्य उत्तेजना से दिल कांपना, रात में अनिद्रा हो तो बहुत उपयोगी है।

जेलसीमीनम—आंखों के ऊपर और सिर में दर्द रहने से, सिर में दर्द होने के पहले आंखों से कम दीखना—दर्द सिर के पीछे के तरफ हो ज्यादा, सब चीजें दो दीखती हों, दर्द होने पर कान के भीतर शब्द सुनाई देता हो तो देना चाहिये—

इगनेसिया—सिर में ऐसा मालूम होता हो कि सुई चुभाये जाते हैं—नाक के बासे में बहुत दर्द—स्थान या अवस्था परिवर्तन करने से कुछ आराम मालुम होना—सोते वक्त दर्द कम होना॥ दर्द आठवे दिन १५ दिन पीछे अथवा १ महीने बाद हो तो देना चाहिये।

नक्सवोमीका—खून की जियादती होने का बयान देखो।

पलसेटिला—बाहर हवा में दर्द कम मालुम हो, और घर में रहने से, लेटने से अथवा शाम के वक्त दर्द बढ़ता हो, सिर का फटना मालुम होता हो तो देना चाहिये।

सीपिया—औरतों के लिये खास कर उन के लिये जिन को कि मासिक धर्म की गड़बड़ रहती हो उन के लिये बहुत फायदे मन्द है, सिर में कोई चीज चुभाने का सा दर्द मालूम हो, हर रोज एक ही वक्त सिर में दर्द होता हो, उल्टी अथवा जी मिचलाता हो तो यह दवाई बहुत फायदा करती है॥

साँगूनेरिया—दर्द इतना जियादा हो कि सिर को जोर

ने जमीन में सौंघ के रखना पड़ता हो, सबेरे दर्द शुरू होता हो, दिन भर बढ़ता हो, और शाम तक रहता हो, दाहिनी तरफ दर्द जियादा हो, और सोने से दर्द कम होता है तो देनी चाहिये।

स्पाईजीलिया-- असह्य दर्द, आँख तक फैला हुआ। सिर हिलाने से दर्द, बढ़ता हो सूर्य के साथ साथ दर्द का बढ़ना और कम होना, धिक्का, शब्द इत्यादि से दर्द की जियादती, और दाबने से कम रहने में दी जाती है।

साईलेसिया--स्नायुविक थकावट से सिर में दर्द, गर्दन में दर्द शुरू हो, और सिर के ऊपर तक पहुंचे, और पीछे आंख के ऊपर तक आ जावे, और सेकने से कम हो, लेकिन दाबने से नहीं। सिर के बाल झड़ जांय तो यह दवा उपयोगी है,

सहकारी उपाय——स्नायविक--सिर दर्द के लिये भोजन का नियम, ठंडे जल से नहाना हैसियत के माफिक घोड़े पर बैठना बहुत अच्छा है, जो सिर में दर्द कमीर हो तो बहुत मुश्किल से आराम होता है।

५६ मुख क्षत

(छाले)

लक्षण--मुंह-गाल-जीभ इत्यादि में छाले होते हैं, पहले पहल छाले अकसर ही सफेद रंगत के रहते हैं पेट में गरमस रहने की वजह से अक्सर छाले हुआ करते हैं।

चिकित्सा--बोरेक्स (सुहागा) बच्चों के मुंह में छाले होने पर यह दवाई बहुत फायदा करती है, ४ ड्राम ग्लिसरिन

और एक आउंस पानी में ४ ग्रेन सुहागा मिलाकर उस से मुंह के छालों को धोने से बहुत फायदा मालूम होता है— जब इस दवा से फायदा नहो तो दूसरी दवा लगानी चाहिये ।

नक्सवोमीका—मसूड़ा सूजा हुआ और उस में दर्द होता हो, छालों में बदबू आती हो, मुंह मसूड़ा, जीभ, और तालु आदि के छालों में दर्द होता हो, लार में खून मिला हुआ गिरता हो और कब्ज हो तो यह दवा देनी उचित है।

मर्क्यूरियस—मुंह से लार गिरना, उदरामय, मुंह में, दुर्गन्ध और मुंह में छालों के घाव सफेद से रहते हों तो देना चाहिये। तथा दांत हिलने हों मसूड़ों में खुजली चलती हो और जलन होती हो। और जीभ सफेद और कड़ी हो तो भी यह दवा बहुत उपकार करती है।

आर्सेनिक—मुंह में बदबू, दुर्गन्ध लार देने वाला उदरामय अत्यन्त दुर्बलता, जीभ के किनारों में छाले और उन में बहुत दर्द होने पर दिया जाता है।

कार्बो वेजीटेबलिस— यदि आर्सेनिक से फायदा नहो अथवा थोड़ा फायदा होतो देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड— मुंह के छालों के लिये बहुत उपयोगी औषध है। मसूड़े सफेद हों, और सूजे हुये हों, उनों से खून गिरता हो, मुंहसे दुर्गन्ध आती हो और लार गिरती होतो देना चाहिये।

रुक गया हो और फिर फायदा नहोता हो तो बीच २ में यह येक येक मात्रा देना आवश्यक है। मुंह में छाले हों और उसके साथ २ शरीर में और फोड़ा फुन्सी भी होतो यह दवा विशेष उपयोगी है।

सहकारी उपाय—साफ कपड़े पहनना बहुत भारी आवश्यक है। हलके और सहज में पचने वाला भोजन करना चाहिये। मुंह में छाले हों तो मछली खाना अच्छा नहीं है।

५७।—मूर्छागत वायु (एक तरह का मिरगी रोग)।

(Hysteriae)

लक्षण—यह रोग प्रायः स्त्रियों को होता है, रोगी चिल्लाते चिल्लाते अथवा बकते बकते बेहोश हो जाता है-बाल नोचता है, हाथ पैर इधर उधर पटकता है और ऐंठता है, मुंह से फाग निकलते हैं और बोल बंद हो जाता है, अथवा कभी कभी मूर्छा धीरे धीरे होकर अज्ञानता को प्राप्त होता है।

चिकित्सा—कैम्फर—मूर्छा के समय यह दवा विशेष उपकार करती है, विशेष कर यदि शरीर ठंडा पड़ गया हो तो दो तीन बूंद कैम्फर यानी अरक कपूर चीनी के साथ अथवा दो गोली पन्द्रह बीस मिनट के अन्तर से मूर्छा के समय देना चाहिये।

मस्कस—मूर्छा के समय कैम्फर के बदले इस का व्यवहार किया जाता है। इस को खाने को भी देते हैं। और नाक

के पास रख कर सुघाते भी हैं।

दूसरे समय--

इग्नेसिया—ऐसा मालूम होता हो कि गले के भीतर से कुछ उठता है या निकलता है—स्वास का बन्द होना, गला बन्द सा होना और निगलने में कष्ट मालुम हो तो यह दवा दी जाती है--रोगी घबड़ाया हुआ, दुखी और दुःख के कारण चुप रहता हो तो भी यह फायदा करती है।

नक्सवोमीका—रात में ३ बजे बाद नींद न आती हो लेकिन ५ बजे बाद औंघने लगें, कब्ज रहता हो, कड़वी डकार का आना, पेट फूलना—हुचकी आना—सिर में दर्द—पाकस्थली में तकलीफ आदि रहती हों तो बहुत उपयोगी है। कुछ दिन इस के व्यवहार करने के बाद सलफर दी जाती है

पलसेटिला—जरायु (बच्चे दानी) में कुछ गड़बड़ रहती हो और ऋतु यानी मासिक धर्म बन्द हो गया हो तो यह दवा देना चाहिये॥ उदरामय, प्यास का न लगना, श्लेष्मा की उलटी होना, और जरायु के दर्द में यह उपकारी है—जो स्त्रियां मुलायम प्रकृति की होती हैं, जिन को अवश्य रोना आजाता है, और जो बहुत मोटी होती हैं उन के लिये यह बहुत उपयोगी है। इस के बाद सिपाइया और साइलिसिया दिया जाता है॥

निरंतर चिंता मग्न रहने पर रोगी को - इग्नेशिया - नक्स वोमिका। विमर्ष रहने पर अर्थात दुखके कारण वाक बंद होजाने पर पलसेटिला। श्वास कष्ट रहने पर कैलकेरिया और इग्नेशिया। अनिद्रा रहने पर जेलसिमिनम नक्स, और इग्नेशिया। वायटे आते होंतो सिफूटा इग्नेशिया। सिर में दर्द होंतो - इग्नेशिया, प्लाटीना। ऋतु अथवा जरायु दोष होंतो - कोफूलस, इग्नेशिया, पलसेटिला; प्लाटीना और सीपिया देना चाहिये।

सहकारी उपाय - उपयुक्त चित्त को प्रसन्न रखने वाले काम में रोगी के चित्त को हमेशा लगाये रहना चाहिये - आलस्य में रहना इस रोग में बिलकुल निषिद्ध है। समय समय पर देश भ्रमण और इसके द्वारा मानसिक अवस्था का प्रसन्न रखना बहुत आवश्यकीय है। सब तरह की विलासता, उत्तेजना करने वाले खाने के पदार्थ; अथवा मन में विकार लाने वाली पुस्तकों का पढ़ना और गप्प करना बिलकुल निषिद्ध है। जिससे साधारण स्वास्थ्य में कुछ फरक पड़े एसे नियमों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। ठंडे पानी से नहाना, नियमित परिश्रम, और साफ हवा इत्यादिक स्वास्थ्य संबंधी नियमों का प्रतिपालन पूरे तौर से करना चाहिये।

मूर्छाके समय भय करने का कोई कारण नहीं है, आंखों में मुंह पर, और छाती पर ठंडे जल के छींटे देने चाहियें और ऊपर लिखी दवाइयां देना चाहिये - उस वक्त रोगी की बात न मान कर जैसा मुनासिब हो उसी माफिक उसका इलाज करना चाहिये।

हम लोगों के देश में इस बीमारी से ग्रस्त रोगी के लिये ऐसा विश्वास करलेते हैं कि भूतने घर लिया है, और तरह तरह की कुचिकित्सा करते हैं यह बिलकुल भ्रम है।

५८ - मूत्रकृच्छ्रता।

लक्षण - मूत्र यंत्र में किसी न किसी रोगके दोष के कारण यह रोग उत्पन्न होजाता है। मूत्र धार में जलन होना - पथरी होजाना अथवा प्रमेह इत्यादि कई प्रकार के रोगों के साथ मूत्र कृच्छ्रता के लक्षण देखने में आते हैं - यह रोग बड़ा ही दुखदाई

होता है। इससे इतना कष्ट होता है कि जीवन का भी संदेह होसक्ता है। बार बार पेशाब की हाजत होती है परन्तु पेशाब नहीं उतरता है और जो उतरता भी है तो बूंद बूंद करके होता है और बड़े दर्द के साथ उतरता है।

चिकित्सा - ऐकोनाइट - प्रवाह के अनुसार हों, ठंड लगकर रोग उत्पन्न हुआ होवे, शरीर गरम रहे, भारी प्यास लगती होवे, रोगी भीत और चिन्तित रहता हो, पेशाब की बहुत हाजत लगती हो, और लाल लाल मैला पेशाब होता होतो—यह दवा बहुत फायदा करती है।

कैंफर - बहुत तकलीफ देने वाली हालत में हर पन्द्रह मिनट के बाद एक एक बूंद साफ चीनी के ऊपर डालकर तीन चार बार देना चाहिये।

कैंथेरिस - पेशाब बन्द होना, पेशाब की बहुत हाजत का लगना उसके साथ जलन और काटने जैसा दर्द होना, पेशाब होने के पहले और पीछे भारी दर्द का होना, खून मिला हुआ पेशाब अथवा कभी कभी बूंद बूंद करके खून का गिरना इत्यादि अवस्थाओं में दिया जाता है।

नक्सवोमिका - बहुत तकलीफ देने वाली और बार बार पेशाब की हाजत का होना, लेकिन पेशाब का न उतरना। बहुत शराब पीने आदि कारणों से उत्पन्न हुए मूत्र कृच्छ्र रोग में यह दवा उपयोगी है।

सल्फर - अगर रोग रहे तो यह देना चाहिये।

आर्निका - चोट लगने से अथवा गिर पड़ने से जो रोग उत्पन्न होवे तो यह दवा फायदा करती है।

साइक्लोपोडियम - पेशाब के साथ ईंट का चूर्ण सा अथवा बालू रेत सा मिला हुआ निकले या रात में बार बार पेशाब होतां हो और दिन में कम होता हो या खून गिरता हो परन्तु जलन न होती हो तो यह दवा बहुत उपयोगी है।

मरक्यूरियस - मूत्रस्थली के कूने में दर्द होता हो - पतली धार से अथवा बूंद बूंद कर पेशाब उतरता हो - पेशाब के साथ खून और राध गिरती हो—खून का पेशाब होता हो, और पेशाब की हाजत सही न जाती हो तो यह दवा बहुत उपयोगी है।

सहकारी उपाय —पेडू पर ठंडा जल छिड़कने से फायदा मालूम होता है, एक दम ठंडे पानी में डुबकी मारकर नहाना अच्छा है। कभी कभी पेडू के ऊपर गरम पानी में फलालैन डुबो-कर उससे सेकने से पेशाब का कष्ट निवारण होता है। पथ्य रसीला और हलका देना उचित है जैसे साबूदाना बार्ली शरबत इत्यादि।

५९।—रजःस्वल्पता वा ऋतुरोध—

घबराहट, भय, दुःख आदि आवेग, दुर्बलता, ऋतु काल में ठंड लगने इत्यादि कई कारणों से यह रोग उत्पन्न होता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि लड़कियों को ऋतुकाल होजाने पर भी ऋतु आरम्भ नहीं होता।

चिकित्सा—लड़कियों को ठीक समय पर ऋतु आरंभ न होतो पलसेटिला और पीछे बायना या लगाकर देना चाहिये।

पलसेटिला—यह इस रोग की सब से अच्छी दवाई है।

ऋतु बन्द होजाना, अथवा थोड़ा होना, बड़े जलन के साथ पेट में

दर्द, भूख कम लगना, उबकाई होना, इत्यादिलक्षणों में यह दवा दीजाती है।

पेल्सेटिला– ठण्ड लगने से भय, अथवा अचानक और कोई मानसिक आवेग होने से रोग की उत्पत्ति हो और उसके साथ ज्वर रहता होतो यह दवा बहुत उपकारी है यौवनारम्भ में और रक्तप्रधान प्रकृति की स्त्रियों के लिये यह दवाई विशेष उपयोगी है। यह पल्सेटिला के साथ साथ भी बारी बारी से दीजाती है।

चायना - बहुत दुर्बलता के कारण ऋतु बंद होगया होवे और बहुत खून निकलने या राध निकलने के बाद यह विशेष उपकारी है। अकसर बहुत पानी सा रक्त स्राव होवे तो केवल चायना अथवा बारी बारी से चायना और पल्सेटिला देनी चाहिये।

सलफर - इस दवाको पल्सेटीला के साथ बारी बारी से देने से चमत्कार दिखलाने वाला फायदा होता है।

सीपिया - यदि श्वेत प्रदर हो और वृद्धावस्था में बंद होने के समय ऋतु थोड़ा होता होतो यह दवा देनी चाहिये। लड़कियों को प्रथम ऋतु होने में देर होतो कैलकेरिया - पल्सेटिला और सलफर देना चाहिये।

ऋतु थोड़ा होता हो और एक समय में बंद न होता होतो कैलकेरिया, ग्राफाईटिस, और पल्सेटिला बहुत फायदा करती है।

सहकारी उपाय—दुर्बलता अथवा खून की कमी के कारण जो ऋतु बन्द होजाये तो पथ्यकी तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये। यदि गर्भ रहने की सम्भावना होतो कुछ दिन देखे बिना औषध नहीं देनाचाहिये। पेडू पर गरम पानी का सेक देने से अकसर फायदा देखा गया है।

६०—बिछौने पर पेशाब कर देना।

लड़कों को यह बहुत बुरी बीमारी होती है। हर जगह इस रोग का ठीक कारण निश्चय करना बड़ा कठिन होता है। पेशाब रोकने की शक्ति कम होने से यह बीमारी उत्पन्न होती है। पेट में कीड़ा उत्पन्न होने सेभी यह बीमारी होजाती है।

चिकित्सा—बेलेडोना—यदि रात के पहली पहर बिछौने पर पेशाब कर देता होतो यह दवा पेशाब रोकने की शक्ति को बढ़ाती है। यदि सोते में बालक चिल्लाता हो यें,—यें, करता हो अथवा चमक उठता होतो यह दवा उपकारी है।

सीना—यदि रोग कीड़ों के कारण उत्पन्न होगया होतो सीना देना चाहिये।

कौस्टिकम - पहले नींद के समय बे मालूम पेशाब निकल जाता होतो यह दवा देनी चाहिये।

फस्फरिक ऐसिड - यदि पानी सा बेरंग का पेशाब होता हो और बहुत होता होतो यह दवा देनी चाहिये।

फैरम - फौस - रात भर में ५ ६ दफे बिछौने पर पेशाब कर दे तो उपयोगी है।

बेलसीमिनम - चाहें रात में हो चाहें दिन में हो पेशाब रोकने की सब तरह की कमजोरी को आराम करता है।

मुलेनआयल - यह नई दवा बालकों के बिछौने पर पेशाब कर देने की अमोघ औषध है। यदि और दवाइयों से फायदा न होतो हर मनुष्य को इसकी परीक्षा करना उचित है। एक एक बूंद करके दिन रात में, अवस्था के अनुसार दो तीन बार देना चाहिये।

सहकारी उपाय - यदि बालक आलस्य के कारण और

आगते रहने पर भी बिछोने पर पेशाब कर रहे तो, धमकाने तथा थलकी ताड़ना देने से भी फिर बालक बिछोने पर पेशाब नहीं करता - लेकिन बिना अच्छी तरह जाने वृथा धमकाना या ताड़ना करना ठीक नहीं - सोने से पहले पेशाब कराकर फिर सुलाना चाहिये। और सोते वक्त दूध या पानी कुछ न पिलाना चाहिये। रात में दो येक दफे बालक को उठा कर पेशाब करा देने से फिर कुछ भय नहीं रहता। हररोज ठन्डे पानी में स्नान कराना चाहिये।

६१ ।— लड़कोंकाऐंठजाना—

लक्षण—मामूली हालत में चहरे के पट्ठे सुकड़ जाते हैं आंखें घूमती हैं और उसास में कुछ व्यतिक्रम होकर ही रहजाता है। जब रोग बढ़ने की हालत पर पहुंचता है तो बालक अज्ञान होजाता है, जाबड़े बन्द होजाते हैं हाथ पैरों में वांयटे आने लगते हैं। आंखें कपाल की तरफ चढ़जाती हैं मुह नीला पड़जाता है। और मुह से झाग निकलने लगती है घरोंटे के साथ उसास आता जाता है। और २ ऐसे ही भयानक लक्षण प्रकाशित होते हैं। कभी दो येक मिनट बालक मूर्छा की हालत में रहकर अच्छा होजाता है अथवा कभी जल्दी और कभी देर से होशमें आता है। साधारण तौर पर ४ बरस तक ऐसा रोग होते देखा गया है।

कारण— अनेक कारणों से बालकों को यह बीमारी होजाती है इनमें से दांत निकलने की उत्तेजना, प्रेचक, इत्यादि के फोड़ा फुन्सी के कारण ज्वर, अचानक चेचक आदि का बैठजाना, कीड़े, अहार और पेट का दोष, सिरमें चोट लगना, और मानसिक-आवेग इत्यादि प्रधान कारण होते हैं।

चिकित्सा—दांत निकलने के कारण होने से बेलेडोना, ऐकोनाइट, और कैमोमिला देना चाहिये।

मानसिक उद्वेग के कारण होने से ऐकोनाइट [भयहेतु], कैमोमिला [क्रोधहेतु], ओपियम [भयहेतु], देना चाहिये। अजीर्णों से होने के कारण - इपिका [उलटी होतो], नक्सवोमिका [कब्ज होतो], पलसेटिला [आहार का दोष होतो], मस्तिष्क की पीड़ा से होतो - ऐकोनाइट, बेलेडोना, जलसीमिनम, देना चाहिये।

चेचक बैठ जाने से होतो - ब्रायवानिया, बेलेडोना देना चाहिये। कीड़े पेटमें होने के कारण से होतो सीना और पलेटिया देना चाहिये।

गिरने से अथवा मस्तक में चोट लगने के कारण से होतो आर्निका देना चाहिये।

ऐकोनाइट - प्रबलज्वर, सूखा और उत्तप्त शरीर, बचैनी दांत निकलने या उलटी होने के समय से अथवा भय या उत्तेजना के कारण से रोग उत्पन्न होवे तो देना चाहिये।

बैलेडोना - चहरे की रंगत लाल हो - आंखें उज्वल और लाल, मस्तक उत्तप्त और रोगी सामान्य शब्द से चमक उठता हो, तथा सब शरीर कड़ा पड़ गया होतो देनी चाहिये।

ब्रायोनिया - चेचक बैठ जावे और उसके कारण खांसी और श्वास लेने में कष्ट होतो देना चाहिये।

ओपियम - यदि मुंह की रंगत काली सी हो - और मूत्र हा आखें कपाल की तरफ चढ़जायें - रोआगी न सहनी हो पेशाब न होता हो, या कम होता हो, कब्ज और घर्राट के साथ श्वास आता जाता होतो दिया जाता है।

सहकारी उपाय — चौंपटे आने के साथ ही कपड़े बिल्कुल उतार डालने चाहियें और शरीर खोल देना चाहिये।

सिर ऊंचा करके सिर पर, मुंह पर, आंखों पर, और छाती पर ठंडे पानी के छींटे देने चाहियें - बहुत से आदमियों को इकट्ठे होकर हवा की आमद रफ्त बन्द नहीं करनी चाहिये - यदि भोजन के दोष से रोग होतो उलटी कराना चाहिये। और कब्ज के कारण से होतो साधन और गरम पानी की पिचकारी लगानी चाहिये।

६२ - शूल का दर्द।

शूल का दर्द कई कारणों से होजाता है। जैसे भस्मशूल पित्तशूल, ऋतुशूल, इत्यादि - आंतों के सुकड़ने वा ऐंठने से जो दर्द उपस्थित होता है उसी का यहां वर्णन किया जाता है।

पहचान — पेट में विशेष कर टूंडी के आस पास कटन और मरोड़ने कासा दर्द। दाबने से या बोझ रखने से आराम मालूम होता है। इस लिये रोगी पेट पर हाथ या तकिया रखकर आगे को झुक पड़ता है। कब्ज रहता है परन्तु ज्वर नहीं रहता, खाने के अनियम से, ठंड लगने से, पेट में कीड़े रहने से, और कब्ज इत्यादि के रहने के कारण यह उत्पन्न होता है।

चिकित्सा — कोलोसिंथ--काटने कीसी तकलीफ, और ठहर ठहर कर दर्द का होना, पेट फूलना, अफरागय का रहना, खाने से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि लक्षणों के होने पर यह दवाई दीजाती है।

नक्सवोमिका - अनियमित आहार करने के कारण जो दर्द होतो यह दवाई फायदा करती है।

कायमना-पित्त या पथरी के कारण दर्द होता होतो देना चाहिये।

कैमोमिला—दांत और बच्चों के दर्द के लिये बहुत उपयोगी है।

मार्टिस—आज एक ऊपर लिखी हुई तीनों दवाइयों से जब कुछ फायदा नहीं होता तब इस से आश्चर्य जनक फायदा दीखता है।

मर्क्यूरियस या सीना—पेट में कीड़े पड़ने के कारण जो दर्द होवे तो दिया जाता है।

वायु भरजाने के कारण दर्द होने में—कार्बोवेजिटेबलिस लाइकोपोडियम, कैमोमिला, काक्युलस, और नक्स, दिया जाता है।

ठहर ठहर कर मरोड़ा जाना दर्द होने से—बेलाडोना, कोक्युलस, और कोलोसिंथ देते हैं।

सहकारी उपाय—गरम फलालैन का सेक, और गरमजल की पिचकारी देने से तुरन्त आराम मालूम देता है।

आहार खूब सावधानी से करना चाहिये।

६३।—श्वेतप्रदर।

लक्षण—योनि या जरायु में से एक तरह का सफेद कफ या पानी कीसी चीज निकलती है। इस तरह के स्राव को श्वेत प्रदर कहते हैं। इस बीमारी के शुरु में ही चिकित्सा कराना चाहिये यदि शुरु में ही रोग आराम न होजाय तो क्रमशः शरीर की दुर्बलता, खून कमहोना, भूख कम लगना, परिपाक क्रिया में गड़बड़, इत्यादि तरह तरह की शिकायतें इस के साथ उपस्थित होजाती हैं तथा गर्भ धारण की शक्ति भी जाती रहती है।

कारण-प्रसव के बाद में विशेष कर गर्भ *गिरने* के बाद

उपयुक्त विश्राम न मिलने के कारण, अथवा और और नियमों का अप्रतिपालन न करने के कारण अकसर यह बीमारी होजाती है। अनियमित या असमय में स्नान सहवास भी इस रोग का एक प्रधान कारण है।

चिकित्सा — केलकेरियाकार्ब--सफेद दूधसा प्रदर होता होनो पैरगीले और ठंडे रहते हों, दुर्बल और रुग्न प्रकृति की स्त्रियों के लिये खास कर उन के लिये जिन को अधिक रज स्राव होता हो बहुत फायदा करता है।

कायना—ऋतु होने से पहलेही प्रदरहो-प्रदर लाल रंगकाहो, योनि के भीतर बहुत तकलीफ देने वाली खुजली और सुरकनहो, रोग की प्रथम अवस्था में विशेष कर रोगी यदि बहुत दुर्बल हो तो इस दवा को देना चाहिये।

पलसेटिला—जलन के साथ, पतला, और घाव कर देनेवाला प्रदर, ऋतु के पहले ऋतु के समय या ऋतु के पीछे सफेद प्रदर, ऋतु बहुत देर से होता हो, और बहुत कम होता हो, बैठे रहने के बाद उठने पर सिर घूमना, और ठंड लगना, इत्यादि हालतों में दिया जाता है।

सीपिया—गर्भावस्था में, वृद्धावस्था, में ऋतु बंद होने के समय, अथवा यौवन के प्रारंभ में यह रोग होतो, सीपिया बहुत फायदा करता है। पीला पानी सा दूधसा या कफसा प्रदर हो और साथ साथ जरायु की ग्रीवा (गरदन का मध्य भाग) में सुई सी चुभती हो और योनि में खुजली चलती हो तथा पेशाब में दुर्गंध और कीचड़ कासा मैला मिला हुआ होतो ऐसी हालत में यह दवा उपयोगी है।

सफफर—ऊपर लिखी हुई दवाइयों से उपकार न होने पर तथा पुराने रोग में यह व्यवहार में लाया जाता है।

पेल्सीना—सिर्फ दिन में बहुत और पतला, घाव करने वाला अथवा पैदा करने वाला प्रदर स्राव, खडे होने से पैरों पर बह कर आजावे, योनि प्रदेश में स्फोट [घाव के तरह के होन हैं] होजाये और कब्ज रहता होतो देना चाहिये।

गाढा प्रदर होतो—नट्रम म्यूरेटिक, पलसटिला और सीपिया दिया जाता है।

पानी सा पतला प्रदर होतो—पेलसिना और ग्राफाइटिस दिया जाता है।

पीब के माफिक प्रदर होना मर्क्युरियस दिया जाता है।

पीला प्रदर होतो— लाइकोपोडियम और सीपिया देते हैं

हरे रङ्ग का प्रदर होतो— कार्बे वेज, सेकेलिस मर्क्यूरियस और सीपिया फायदा करता है।

दूध के समान प्रदर होतो— कैलकेरिया और पलसटिला उत्तम है।

बदबू दार प्रदर होतो— क्रियोजोट, नेट्रम और नाइट्रिक ऐसिड उपयोगी है।

सहकारी उपाय—इसरोगकी चिकित्सा के समय इस बात को जानकर कि ऋतुसम्बन्धी कोई गड़ बड़ है कि नहीं। फिर दोनों रोगों की उपयुक्त औषध करनी चाहिये। रोग, प्रसित स्थान को, हमेशा ठन्डे जल से धोकर साफ रखना चाहिये बहुत परिश्रम मानसिक चिन्ता और उत्तेजना से बचना चाहिये। हाईड्रेसटिस या कैमेलिया के लोशन की पिचकारी बहुत फायदा करती है।

६४ ।— शोथ

लक्षण—शरीर के अनेक स्थानों में जल इकट्ठा होजाता है और वह जगह सूज जाती है। इसी को शोथ कहते हैं यह कभी दो ऐक स्थानों पर, और कभी सब शरीर में होजाता है।

मैलेरिया, पुरानी भापतिल्ली, और उदरामय आदि पुराने रोगों की अखीरी हालतों में देखा जाता है। सूजी। हुई जगह को उंगली से दबाने से वहां ऐक गड्ढ़ा सा बन होजाता है।

चिकित्सा ।— आर्सेनिक— मुंह, हाथ, पांव इत्यादि स्थानों के शोथ होने पर और दिल के रोग तिल्ली और जिगर के बढ़ने के कारण शोथ होने पर बहुत उपकारी है।

दुर्बलता, शरीर का कृश होना, हाथ पैरों का ठंडा पड़जाना, नाड़ी क्षीण, कलेजे पर बोझ सा मालूम देना, बहुत प्यास, बेचैनी, और चिन्ता आदि लक्षण रहते पर दिया जाता है।

डिजिटेलिस—बहुत तरह के असाध्य शोथों को इस दवा के देने से विशेष फायदा होता है। नाड़ी की अनियमित गति और उसका क्षीण होजाना, बहुत रक्त हीन होजाना, श्वास कष्ट, और दिलके रोग की हालत में देना चाहिये।

एपिस- मूत्र ग्रन्थि के ऊपर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस लिये शोथ की ऐसी अवस्था में जबकि पेशाब बन्द होगया हो या कम होता हो -या और ऐसे ही लक्षण उपस्थित होतो यह दवा बहुत फायदा करती है। सामान्य शोथ और सूजन में भी यह दीजाती है।

चायना— रक्त स्राव, उदरामय, इत्यादि शरीर को क्षय करने वाले रोगों के कारण शोथ हो, और तिल्ली या जिगर का व्याधि क्रम होतो यह दवाई दीजाती है।

सलफर— चेचक, खसरा इत्यादि फोड़ा फुन्सी के रोगों में, फुन्सी यदि बैठ जाने के कारण से शोथ होतो यह दवा फायदामन्द है।

एकोनाइट—पीड़ा शोथ की प्रथम अवस्था में, विशेष कर जब ज्वर रहता हो और तिल्ली या कामला इत्यादि यांतरिक रोग मौजूद हों तो यह दवा देनी चाहिये।

एपोसाईनम- जलोदर (जरी) अथवा दिलको ढकने वाली वस्तु पर शोथ होतो यह विशेष उपकार करती है।

चेचक इत्यादि के बैठ जाने से शोथ होतो- एपिस, आर्सेनिक और सलफर देना चाहिये।

तापतिल्ली अथवा जिगर के दर्द के कारण शोथ होतो चायना और लाईकोपोडियम देना चाहिये।

बहुत दिन के बुखार के कारण शोथ होतो आर्सेनिक, फेरम और सलफर देना चाहिये।

दिलके रोगके कारण शोथ होतो आर्सेनिक और डिजिटेलिस देना चाहिये।

सहकारी उपाय-- सूखी जगह में रहना उचित है। रोग की पहली अवस्था में हलकी भोजन करना चाहिये; रोग पुराना पड़जाने से रोटी तथा मांस भी दिया जासका है। यदि सहाहोतो गरम पानी में स्नान करना अच्छा है।

६५ — फोड़ा।

लक्षण - चमड़े के नीचे या मांस के बीच में पीप इकट्ठी होकर सूज जाता है इसी सूजे हुये स्थान को फोड़ा अथवा विद्रधि कहते हैं। सूजन के साथ २ दर्द और जलन रहती है। और

मसोर में राध निकल जाती है, यह फोड़ा नया और पुराना दोनों तरह का होसक्ता है। पट्ठों के बीच में हड्डी के ऊपर, जिगर और स्त्रियों की छाती आदि स्थानों में अक्सर फोड़े उपस्थित होते हैं।

(१)—नयाफोड़ा।

लक्षण—स्थान सूज जाता है जलन और दर्द होता है। कुछ दिन बाद उसमें राध पड़जाती है, दर्द और चपकन मालूम होती है, और दाबने से राध चलती फिरती मालूम होती है। पीछे आहिस्ते २ उसमें मुंह होकर फोड़ा फूट जाता है और उस में से गाढ़ी पीप निकल जाती है।

चिकित्सा - यदि किसी स्थान में दर्द, लाल रङ्गत और जलन के सिवाय फूला हुआ सा मालूम होवे तो बेलेडोना दिया जाता है। यदि २४ घंटे या दो दिन तक इस दवा को देने से सूजन कम न होवे तो हीपर, सलफर देने से फूला हुआ कम होजाता है। और फिर पक नहीं सक्ता लेकिन जो एक बार राध पड़ चुकी है तो मर्क्यूरियस देने से राध निकल कर घाव अपने आप सूख जावेगा, जो पीप पड़ जावे तो मर्क्यू-रियस दिया जाता है जो बराबर मर्क्यूरियस देने पर भी घाव न सूखे तो हीपर अथवा साइलेशिया देना चाहिये। नये पुराने अथवा दुर्गंध युक्त सब प्रकारके घावों में ऊपर लिखी दोनों दवाइयां बहुत फायदा करती हैं।

हीपर- सौफ- दर्द की जगह में टपक चलती होवे, चमड़े में बहुत जलन होती हो, चमड़ा कड़ा, उभार और सूजा हुआ हो, पीप कम, कचलोहू और बदबू दार होतो यह दवा देनी चाहिये।

गीला कपड़ा पहनने से यह स्मरण रखना चाहिये कि जितनी देर गीला कपड़ा पहिन कर परिश्रम करते रहेंगे। उतनी देर तक परिश्रम के करने से जो उत्ताप शरीर में उत्पन्न होता है उसके कारण से सर्दी असर नहीं कर सकती, लेकिन परिश्रम बन्द कर देने पर भी गीला कपड़ा पहने रहने से सर्दी होने की निश्चय सम्भावना है ॥ (२) ठंडी हवा का शरीर में लगना (३) पानी में बहुत देर तक रहना (४) एक दम गरमी में से सर्दी में चला आना ॥ (५) पहनने ओढ़ने के कपड़े का कम होना। इत्यादि बच्चे, वृद्ध, रोगी तथा दुर्बल, लोगों को इन सब बातों से हुशियार रहना उचित है ॥

चिकित्सा-सर्दी का सूत्रपात मालूम होते ही कैम्फर यानी कपूर का अरक चीनी के साथ दो दो बूंद करके आध आध घंटे में ५, ६ बार खाने से सर्दी एक दम बन्द होजावेगी। जो कैम्फर सर्दी शरीर में शुरू होते ही न दिया जावे तो उससे कोई विशेष फायदा नहीं दीखता ॥

ऐकोनाइट - जुकाम या ठंड लगकर जो बहुत सी पीड़ा उपस्थित होजाती हैं विशेष कर उसके साथ ज्वर रहता हो तो ऐकोनाइट सब से उत्तम दवाई है। १ बूंद दो या ३ घंटे के अन्तर से देनी चाहिये।

नक्सवोमिका - जो जुकाम सूख जावे और कफ गिरना बंद होजाय और उसके कारण नाक बन्द आवे सिर में धमक मालूम होता हो तो यह दवा बहुत उपकारी है।

आर्सेनिक - बराबर नाक से गरम, जलन करने वाला पानी या कफ निकलता हो, आंखों से पानी झरता हो, नाक में दर्द मालूम [illegible] तकलीफ कम मालूम देती हो तो दवा

सहकारी उपाय - पके फोड़े को पहले गरम जल में सेकना चाहिये, और पीछे बराबर अलसी की पुलटिस बांधे। जब एक बारकी बांधी हुई पुलटिस ठंडी होजावे तो फिर पुलटिस को बदल देना चाहिये। जो पीब निकलना होता फेंसकूला लोशन में धोकर और एक कपड़ा उसी में भिगोकर बांध दये, फैंसकूला सब तरह के घावों के लिये महौषध है॥ इसका जितना अधिक प्रयोग किया जाता है उतनी ही जल्दी घाव सूख जाता है॥ ऊपरकी पट्टी मैली होते ही बदल देनी चाहिये॥ जरूरत पड़ने पर पुराने फोड़े अकसर नश्तर से फायदा दिये जाते हैं॥

६६ सर्दी [जुकाम]

लक्षण - यह बहुत साधारण रोगहै-नाक और उसके पास के सब स्थानों की श्लैष्मिक झिल्लियों के प्रदाहही को सरदी या जुकाम कहते हैं। नाक और तालुए आदि स्थानों में सुरसुराहट और खुजली चलती है, और पीछे पानी झड़ता है॥ बारबार छीकें आती हैं, मस्तक आदि स्थानों में बोझला मालूम होता है, आंखें डबडबाई हुई और उनमें पानी भर आता है, और कभी कभी ज्वर भी हो जाता है॥ हमारे देश में जहां कि अकसर मौसम गरम रहता है इसके होने से तथा इसके परिणाम का कुछ भय नहीं किया जाता॥ लेकिन इसके होने से अनेक प्रकार के सब जीवन के संहारकारी और भयानक रोग उत्पन्न होसकते हैं। इस लिये शुरू में ही इसकी उचित चिकित्सा कराना अवश्य चाहिये॥ अतएव इसकी चिकित्सा के विषय में संक्षेप से कुछ लिखते हैं॥

कारण - शरीर में किसी तरह से भी जो उत्ताप कम हो-जाता है तो सर्दी अपना असर कर डालती है॥ जैसे (१)

के बाद अच्छी तरह से सूखे कपड़े से पैरों को पोंछ डालना चाहिये। दिन में ३।४ बार पानी के साथ नमक मिला कर नाक में श्वास से चढ़ावे तो बहुत फायदा दीखता है।

जुकाम की पहली अवस्था में सब तरह की रसीली चीजों का खाना बंद करने से, बहुतों की राय में उपकार करता है। जिनको बहुत ही मामूली सबब होते ही झट जुकाम होजाता है उनको नीचे लिखे नियमों का पालन करना उचित है।

(१) नंगे बदन हर रोज खुली हवा में टहलना चाहिये। इससे चम में सर्दी रोकने की शक्ति उत्पन्न होजाती है॥

(२) हर रोज सवेरे उठते ही स्नान करना चाहिये॥ नदी में गोता लेकर नहाने से बहुत फायदा होता है॥

(३) नाक से उसास लेना चाहिये, और मुंह से नहीं, क्योंकि मुंह की अपेक्षा नाक में सरदी सहने की शक्ति अधिक होती है।

६७ - सर्द गरमी।

लक्षण - उत्ताप अथवा तेज धूप में रहने से मस्तक बहुत उत्तेजित होजाता है। पीछे उसकी क्रिया जाती रहती है॥ पहले प्यास, उत्ताप, और चर्म का सूखापन, इसके बाद माथा सिर घूमना, सिर में दर्द आंखें लाल रंगत की, बार बार पेशाब का होना, पीछे एक दम या थोड़ी थोड़ी करके मूर्छा का होजाना, कभी कभी मूर्छा के साथ आंचटे भी मौजूद रहते हैं और कभी नहीं भी रहते॥

चिकित्सा—रोगी को ठंडे स्थान में रखना चाहिये, यदि कायदा हो तो सब शरीर के कपड़े उतार कर अलग करदें। और सिर पीठ, छाती, और सब शरीर पर ठंडा जल डालें। कपूर को नाक

मर्क्यूरियस—सौल—बराबर छींक आती हो, गाढ़ कफ निकलता हो, बहुत पसीना आता हो, गले में दर्द मालूम देता हो, आंखों में जलन हो, और लाल रंगत हो, शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना, इत्यादि हालतों में दियाजाता है। इसको कभी कभी नक्सवोमिका के साथ बारी बारी से भी देते हैं

पलसेटिला—गाढ़ा और बदबूदार कफ निकलता होय जीभ से कुछ स्वाद मालूम न देता हो, और न नाक से कोई तरह की गंध मालूम देती हो—सिर में बोझ और गड़ बड़ मालूम होती हो, कान में, और सिर के आस पास बहुत दर्द इत्यादि हालतों में यह दवा दीजाती है।

सूखा कफ, और नाक बंद होने पर—ब्रायोनिया, नक्स, और कैलकेरिया दिया जाता है।

हाल के पैदा हुये बच्चों की अकसर नाक बंद हो कर बड़ाही कष्ट देती है, क्यों कि वह स्तन पान नहीं कर सक्ता, ऐसी हालत में नक्स देने से तत्काल फल दीखता है।

जुकाम के साथ ज्वर रहे तो—ऐकोनाइट- मर्क्यूरियस—नक्स और जेलसीमीनम देना चाहिये।

अधिक सर्दी और जुकाम के होने को दूर करने वाली दवाई—कैलकेरिया है। जुकाम दब जाये, और सिर में दर्द होवे तो, बेले डोना, और नक्स दिये जाते हैं, और दमा होजाय तो आर्सेनिक, इपीका और नक्स देते हैं।

सहकारी उपाय—जुकाम हो जाने पर दो एक दिन घर में भीतर ही रहना उचित है। सोने के समय पैरों को करीब २० मिनट तक डुबा कर गरम पानी में रखने चाहियें— इस अर्से में ही जो पानी ठंडा होजावे तो और गरम पानी मिलाना चाहिये। इस

के बाद अच्छी तरह से सूखे कपड़े से पैरों को पोंछ डाल ना चाहिये। दिन में ३।४ बार पानी के साथ नमक मिला कर नाक से श्वास से चढ़ाय तो बहुत फायदा होता है।

जुकाम की पहली अवस्था में सब तरह की रसीली चीजों का खाना बंद करने से, बहुतों की राय में उपकार करता है। जिसको बहुत ही मामूली सबब होते ही झट जुकाम होजाता है उसको नीचे लिखे नियमों का पालन करना उचित है।

(१) नग वक्त हर रोज खुली हवा में टहलना चाहिये। इससे चम में सर्दी रोकने की शक्ति उत्पन्न होजाती है॥

(२) हर रोज सवेरे उठते ही स्नान करना चाहिये॥ नदी में गोता लेकर नहाने से बहुत फायदा होता है॥

(३) नाक से उसास लेना चाहिये, और मुंह से नहीं, क्योंकि मुंह की अपेक्षा नाक में सरदी सहने की शक्ति अधिक होती है।

६७ - सर्द गरमी।

लक्षण - उत्ताप अथवा तेज धूप में पहले मस्तक बहुत उत्तेजित होजाता है। पीछे उसकी क्रिया जाती रहती है॥ पहले प्यास, उत्ताप, और चर्म का सूखापन, इसके बाद क्रमशः सिर घूमना, सिर में दर्द आखें लाल रंगत की, बार बार पेशाब का होना पीछे एक दम या थोड़ी थोड़ी करके मूर्छा का होजाना कभी कभी मूर्छा के साथ बायटे भी मौजूद रहते हैं और कभी नहीं भी रहते॥

चिकित्सा—रोगी को ठंडे स्थान में रखना चाहिये, यदि बायटा नहीं तो सब शरीर के कपड़े उतार कर अलग करदें। और सिर पीठ, छाती, और सब शरीर पर ठंडा जल डालें। कपूर को नाक

के पास रखकर रोगी को सुलाना चाहिये। या अगर रोगी खांस कहे तो दो एक बूंद अर्क कपूर चीनी के साथ देना चाहिये-यदि रोग हुआ हुआ होसे तो १०।१५ मिनट के अंतर से कपूर के पश्चात् ग पेपोलाइट देना चाहिये। जो बीमार प्रात हो तो जब तक रोगी का शरीर स्वाभाविक अवस्था में न आजावे तब तक उसको थोड़े गरम पानी में बिठलाकर फिर क्रमशः उसमें ठंडा पानी मिलाना रहे।

ग्लोनाइन - बेहोशी, मूर्च्छा, ऐसा मालूम होता हो कि सब खून सिर में चढ़ गया है। और सिर फटा जाता है, सिर घूमना और सिर नीचा करने में या हिलाने में बढ़ना, इत्यादि हालतों में दिया जाता है॥

बेलेडोना - बहुत तेज सिरका दर्द, मस्तक में रक्त की अधिकता, एक दम मूर्च्छा होकर गिर पड़ना, चहरे की लाल रंगत। होना, बहुत धड़का श्वास लेने में कष्ट मालूम होना, इत्यादि हालतों में फायदा करता है॥

विरट्रम - विरिड-कानों में भों, भों, करना शब्द होना, और की रंगत पीला पड़जाना, उल्टी होना, छाती में रक्त की अधिकता, जल्दी २ श्वास लेना, और निपालना, सब शरीर ठंडा पड़जाना, मुंह हाथ और पगमें ठंडा पसीना आना, इत्यादि लक्षणों में यह दवाई फायदा करती है। इस रोग के पीछे हाल चाल लक्षण - उसका बहुत होशियारी करनी चाहिये - अब जैसे लक्षण उपस्थित हों जैसे ज्वर दुर्बलता, फेफड़े का ख्रासिकल इत्यादि उस तक वैसा ही उपचार करके माफिक दवाइयों का प्रयोग करना चाहिये।

सहकारी उपाय--वायु मर्दन को दुर्बलता और दुर्बी

के कारण मर्द गरमी होजाती है - स्नायु समूह की उत्तेजना के कारण नहीं होती, इसलिये ठंडा पानी मस्तक पर, शरीर पर, छाती और पीठ पर, प्रयोग करना इसका बहुत अच्छा इलाज है। सिर और पीठ पर बरफ लगाना और यदि रोगी का हाथ होतो बरफ से पानी ठंडा करके पिलाना चाहिये ॥

६८ - स्तन प्रदाह ।

लक्षण--स्तन, [छाती] सूजी हुई, प्रदाह युक्त, लालरंग और बहुत दर्द होता हो। स्तन में दूध जम जाना, स्तन में से दूध न निकलना, ठंड लगना, स्तन पीने की गड़बड़ अथवा स्तन में बहुत दूध इकट्ठा होने से यह बीमारी उपस्थित होती है।

चिकित्सा—ब्रायोनिया बहुत ज्यादा दूध इकट्ठा होना स्तन कड़ापन आना, भारी होजाना, गरम होना, और दर्द करने की हालतों में यह दवा होजाती है। स्तन लालरंग का चमकदार होना इसके साथ मेलहोगा, और यदि बुखार रहता होतो ब्रायोनिया के साथ एकोनाइट बारी बारी से देना चाहिये।

मर्क्यूरियस सोल - और सूजन क्रमशः बढ़ती जाय, और पीब पड़ना किसी तरह से बन्द न हुआ हो या ऐसा मालूम होकि पीब पड़ गया है तो यह दवा देनी चाहिये।

हीपर - सल्फर - जब ऐसा मालूम होकि निश्चय पक जावेगा तब यह दवाइ देनी चाहिये। और उसके साथ साथ पुलटिस भी लगानी चाहिये।

साइलिशिया - सब पक गई हो, पीब पतली पानी सी हो या गाढ़ी और बदबूदार होतो यह दवाइ देनी चाहिये।

फाइटोलैका यह दवाइ प्रदाह की हालतों या पत्थर जैसी

सब हालतों में ये ही लगानी चाहिये ॥ स्तन प्रदाह की एक बहुत ही उमदा दवाई है ॥ इस दवा के खाने से तथा असली अरक (Mother Tincture) २० बीस बूंद एक आऊंस पानी में मिलाकर बाहर प्रयोग करने से बहुत उपकार करता है ॥

सहकारी उपाय - दूध स्तन में आमते ही बच्चे को पिला दिया जावे तो यह बीमारी नहीं होगी - दर्द शुरू होते ही स्तनों का लटकना फौरन बन्द करदेना चाहिये (यदि चोली पहनने में तकलीफ होतो एक पट्टी से स्तनों को लपेटकर उसको गले में बांध देना चाहिये) गरम पानी से सेकने से भी बहुत फायदा होता है ॥

(स्तन्य ज्वर देखो)

६९ - दमा

यह रोग देखने में जैसा भयानक और रोगीको कष्ट देने वाला है वैसा प्राण घातक नहीं है ॥ श्वास कष्ट जैसा श्वास लेने में होता है वैसा श्वास निकालने में नहीं होता - खांसी गले में कफ की घरघराहट छाती में भारापन, मुंह की रंगत बदल जाना, सब शरीर में पसीना आना, रोगी सांस लेने की बहुत चेष्टा करताहो । बीमारी के आक्रमण करने का कोई विशेष समय नहीं होता परन्तु प्रायः आधीरातके पीछे ही शुरू होती है ॥ उस समय बिछाने पर से उठ बैठता है, हाथों कन्धे और गरदन ऊंची हो
हैं सांसें खुलसी जाती हैं नाक फूल आती है साथ होठ
हांपना जाता है ऐसी तकलीफ बहुत देर या थोड़ी दे
से धीरे धीरे कफ उठ आता है । और कफ निकल
रोगी को कुछ आराम मालूम होता है--और सांस
साथ घुरघुर नहीं रहता, इस रोगका कोई

का निश्चय नहीं होता जिसको जिस जगह आराम रहता हो उसको उसी जगह रहना चाहिये ॥

चिकित्सा - इपिका - दमा, छाती पर बोझसामालूम होना, गलेमें कफ घड़घड़ाना, और ऐसा मालूम होना कि कफ भरा हुआ है और खांसने से नहीं निकलता है, तकलीफ और उल्टी करने की इच्छा होना, तकलीफ देने वाली खासी मामूली चलने में ही बढ़जाना, कफ बैठजाने पर भी दमे का उपस्थित होना, इत्यादि हालतों में यह बहुत उपकार करती है ॥

एकोनाइट - श्वास कष्ट दिलका कम चलना और खांसी के साथ यदि दमा होतो शुरू में ही यह दवा फायदा करती है ॥ और जो ऐसी हालत भी होकि रोगी अपने मरने का दिन निश्चय करने लगे तो भी यह उपकार करती है।

नक्सवामिका यह दवा दमेको रोकने वाली है जिनको अजीर्णता के कारण दमा हो उनको यह दवा बहुत फायदा करती है ॥ इसका आक्रमण होने के पीछे भी जी मिचलाना, पेटफूलना कब्ज होना, और थोड़ा थोड़ा श्वास कष्ट आदि लक्षण रहें तो यह बहुत उपकारी औषध है।

आर्सेनिक—रोग पुराना पड़जाय तो बुड्ढे और दुबले आदमियों के लिये यह बहुत उपकारी है। जल्दी और साय साय शब्द के साथ दमा—सोने और थोड़ा हिलने डुलने फिर से भी दमा का उठआना मुंह की रंगत बदल जाना, पुरानी हालत में छाती में जलन होना, ठंडा पसीना आना और दुर्बलता रहने पर यह दवा देनी चाहिये।

सलफर—पुराने रोग में विशेष कर उन चर्म रोग मा

सब हालतों में ये ही लगानी चाहिये ॥ स्तन प्रदाह की एक बहुत ही उमदा दवाई है ॥ इस दवा के खाने से तथा अफर्का अरक (Mother Tincture) २० बीस बूंद एक आउंस पानी में मिलाकर बाहर प्रयोग करने से बहुत उपकार करता है ॥

सहकारी उपाय - दूध स्तन में जमने ही बच्चे को पिला दिया जावे तो यह बीमारी नहीं होती - दर्द शुरू होते ही स्तनों का लटकना फौरन बन्द करदेना चाहिये (यदि चोली पहनने में तकलीफ होतो एक पट्टी से स्तनों को लपेटकर उनको गले में बांध देना चाहिये) गरम पानी से सेकने से भी बहुत फायदा होता है ॥

(स्नायु ज्वर देखो)

६१ - दमा

यह रोग देखने में जैसा भयानक और रोगीको कष्ट देने वाला है वैसा प्रायः घातक नहीं है ॥ श्वास कष्ट जैसा श्वास लेने में होता है वैसा श्वास निकालने में नहीं होता - खांसी गले में कफ की घरघराहट छाती में भारापन, मुंह की रंगत बदल जाना, सब शरीर में पसीना आना, रोगी सांस लेने की बहुत चेष्टा करताहै। बीमारी के आक्रमण करने का कोई विशेष समय नहीं होता परन्तु प्रायः आधीरातके पीछे ही शुरू होती है ॥ उस समय रोगी बिछाने परसे उठ बैठता है, दोनों कन्धे और गरदन ऊंची होजाती हैं आंखें खुलती आती हैं नाक फूल आती है सांस लेते वक्त रोगी हांपता जाता है ऐसी तकलीफ बहुत देर या थोड़ी देर तक रहने से धीरे धीरे कफ उठ आता है। और कफ निकल जाने के बाद रोगी को कुछ आराम मालूम होता है--और सोजाता है दम के साथ बुखार नहीं रहता, इस रोगका कोई विशेष समय या स्थान

का निश्चय नहीं होता जिसको जिस जगह आराम रहता हो उसको उसी जगह रहना चाहिये ॥

चिकित्सा - इपिका - दमा; छाती पर बाक्रमनामालूम होना, गलेमें कफ घड़घड़ाना, और ऐसा मालूम होना कि कफ भरा हुआ है और खांसने से नहीं निकलता है, तकलीफ और उल्टी करने की इच्छा होना, तकलीफ वाले वाली खांसी, मामूली चलने में ही बढ़जाना; कफ बैठजाने पर भी दमे का उपस्थित होना, इत्यादि हालतों में यह बहुत उपकार करता है ॥

एकोनाइट - श्वास कष्ट दिलका कम चलना और खांसी के साथ यदि दमा होतो शुरू में ही यह दवा फायदा करती है ॥ और जो ऐसी हालत भी होकि रोगी अपने मरने का दिन निश्चय करने लगे तो भी यह उपकार करती है ।

नक्सवामिका यह दवा उनको फायदा वाली है जिनको अजीर्ण के कारण दमा हो उनको यह दवा बहुत फायदा करती है ॥ दमका आक्रमण होने के पीछे भी जी मिचलाना, पेटफूलना कब्ज होना, और थोड़ा थोड़ा श्वास कष्ट आदि लक्षण रहें तो यह बहुत उपकारी औषध है ।

आर्सेनिक—रोग पुराना पड़जाय तो बुड्ढे और दुबले आदमियों केलिये यह बहुत उपकारी है । जल्दी और साय साय शब्द के साथ दमा—सोने और थोड़ा हिलने डुलने बिना ही दमा का उठआना मुंह की रंगत बदल जाना पुरानी हालत में छाती में जलन होना, ठंढा पसीना आना और दुर्बलता रहने पर यह दवा देनी चाहिये ।

सलफर—पुराने रोग में विशेष कर अन्य रोग या

प्रकृति में और कोई दोष रहा हो तथा और दवाइयां सविशेष फल न दीखा होतो यह दवा देनी चाहिये।

अायोलिया- रोगी को स्थिर रहना चाहिये जरा हिलने डुलने में कष्ट मालूम हो, हमेशा खांसी रहती हो, छाती और पसली के नीचे दर्द मालूम होता हो, और गला फड़ा पड़ गया हो तो यह दवा बहुत उपकार करती है।

दमा, दो तरह का होता है—कोई श्लेष्मा प्रधान, और कोई वायु प्रधान होते हैं। श्लेष्मा प्रधान दमे में ओस, ठंड, नहाना इत्यादि सह्य नहीं होता। वायु प्रधान दमे में नहाना और कभी कभी दोनों वक्त नहाना सह्य होता है। श्लेष्मा प्रधान दमे की खास खास औषधें आर्सेनिक पलसेटिला इपीकाक और वेरिट्राईट है। वायु प्रधान दमे की प्रधान प्रधान दवा में कूप्रम, इपीकाक लोबेलिया, मौफस, और ब्लेटा हैं।

सहकारी उपाय—रोगी को ठंडे पानी से स्नान कराना चाहिये और हलका भोजन कराना चाहिये-ओस,वृष्टि, और ठंडी हवा से शरीर को बचाना चाहिये।

जब दमा उठता हो तब धतूरे के पत्ते या चुरट बना कर पीना चाहिये और गरम पानी की गले में भाप लेनी चाहिये शोरे के पानी में स्याही सोखता (Blotting paper) कागज भिगो कर और सुखाकर फिर उस को चुरट की तरह बना कर गले में धूमा लेना चाहिये।

छाती में दर्द रहता हो तो छाती और पीठ पर गरम पानी में फ्लानली भिगो कर—उससे सेक करना चाहिये। दवा लगाने के वक्त कडुए तेल में कपूर मिलाकर छाती और मेरु दंड पर मालिश करनेसे बहुत फायदा होता है। दमा उठने के समय

इपीकाक आध आध घंटे में देना चाहिये और जो इससे विशेष फायदा न हो तो आर्सेनिक देना चाहिये।

७०—खसरा (एक तरह की चेचक)

Measles

लक्षण—यह एक तरह का संक्रामक रोग है।

पहले चार पांच दिन तक सरदी, छींक, खांसी, इत्यादि होती है आंखें लाल रंगत की पानी भरी हुई रहती हैं। पीछे चौथे पांचवे दिन सब शरीर में गोल गोल दाग बाहर निकल आते हैं। और आठवें या नवें दिन बैठ जाते हैं। यह प्रायः बच्चों को होते देखा गया है। इस के बुखार में शरीर का उत्ताप बहुत ज्यादा होता है—तापमान (Thermometer) से देखने से १०४ या इससे ज्यादा भी गरमी मालूम होती है।

चिकित्सा—एकोनाइट और पलसेटिला—साधारण खसरे के बुखार की बहुत अच्छी दवा है।

जेलसीमीनम—दाने बाहर निकलने में देर होने से या दाने बैठ जाने पर और बहुत तेज बुखार के साथ निद्रालुता और खांसी उपस्थित होने का उपक्रम होने पर यह दवा दी जाती है।

बिरेट्रमविरिड—मस्तिक अथवा स्नायुविक उत्तेजना और उस के साथ खांसी का होना अथवा फेफड़े में ज्यादा खून जमने की आशंका होने से उपकारी है।

बेलेडोना—निद्रालुता—आंखें लाल रंग की होना, सिर में दर्द रहना, रोशनी सहन न होना, गले में घाव होना, सूखी स्वरभंग युक्त खांसी के साथ, खांसी का आना, इत्यादि अवस्थाओं में बहुत उपकार करने वाली दवाई है।

यूफ्रेशिया—मूर्छा खांसी व आंख और नाक में सरदी के लक्षण रहना विशेष कर आंखों में दर्द रहने पर यह दवा दीजाती है।

इपीका—गले में कफ का घर घराना, बहुत उबकाई या उलटी होना, चेचक के निकलने में देर और श्वास लेने में कष्ट होतो यह दवा दीजाती है।

पलसेटिला—यह दवा प्रायः इस रोग की सब हालता मेंही दीजाती है विशेष कर सरदी, और उदरामय रहने पर और खसरा निकलने में देर होने पर दीजाती है।

सलफर—दाने बैठने के वक्त और आवश्यक हो तो बीच बीच में भी एक एक मात्रा दीजाती है।

सहकारी उपाय-रोगी के घर में अकेला रहना चाहिये हवा की आमद रफ्त रखनी चाहिये, और घर को थोड़ा गरम रखनी चाहिये।

हवाकी आमद रफ्त से मतलब यह है खराब हवा निकलती रहे और साफ हवा आती रहे, लेकिन बहुत तेज हवा के झोंके से रोगी को बचाना चाहिये। खसरा निकलने पर तथा आराम होजाने के कुछ दिन पीछे तक भी रोगी को ओस और ठण्ड न लगने देना चाहिये। गरम जलमें कपड़ा डुबो कर शरीर पोंछ दिया जा सका है। शरीर के कपड़े हमेशा बदलते रहना चाहिये। और आंखों के पलक दोनों चिपक जावें तो हुशयारी से गरम पानी से धो डालना चाहिये। पहले साबू दाना बार्ली आदि हलका पथ्य और पीछे जब बुखार छोड़ जावे तो दूध दिया जाता है।

रोकने वाली दवाई—आस पास जो यह रोग फैला हुआ होतो दिन में दो दफे पलसेटिला या एक दिन एकोनाइट और दूसरे दिन पलसेटिला खाना चाहिये।

(१) यदि खसरा ठीक न निकल कर बैसे ही बैठ जावे—

ठण्ड लगजाने से, या उत्ताप का परिवर्तन होने से दाना ठीक तरह से उठ नहीं सकता है, और जो उठता भी है तो बीच में ही बैठ जाता है। चिकित्सा— फौरन ब्रायोनिया देना चाहिये विशेष कर यदि खासी और छाती में दर्द होवे।

(२) चेचक के पीछे की शिकायतें

(१) खासी—

चिकित्सा—खासी स्वर भंग, गले में घाव, इत्यादि शिकायतें रहें तो - ब्रायोनिया, ड्रोसेरा, नोक्स और सलफर दिये जाते हैं। घांयटें लगने वाली खांसी होतो बेलेडोना, हायसायमस दिया जाता है।

सहकारी उपाय— जो बहुत खांसी हो तो मुंह फाड़ कर गर्म पानी की भाप लेना चाहिये।

(२) उदरामय—

चिकित्सा—पलसेटिला और सलफर बारी बारी से देना चाहिये दुर्बलता और दस्त की शिकायत होतो चायना देना चाहिये, मरक्यूरियस की भी समय समय पर आवश्यकता होती है।

सहकारी उपाय उदरामय देखो॥

३ - कान में दर्द वा पीव होना

चिकित्सा—बारी बारी से पलसेटिला और सलफर उपकार करते हैं।

मरक्यूरियस भी ऐसी हालत में एक अच्छी दवा है ॥

४ - गाठ का फूलना

चिकित्सा—रस्टक्स और आरनिका बारी बारी से देने से फायदा मालूम होता है ॥

मर्क्यूरियस - आयोड - रस्टक्स और आर्निका से फायदा न होतो देना चाहिये ॥

खसरे के निकल जाने के बाद फेंफड़े का प्रदाह (Pneumonia) एक बहुत कठिन रोग है और अकसर सांघातिक अवस्था को पहुंच जाता है ऐसा होने पर रोगी को हुशियार चिकित्सक को दिखलाना चाहिये ।

५- दिल धड़कना ।

स्वस्थ और स्वाभाविक अवस्था में छाती के भीतर दिलका काम कुछ भी मालूम नहीं होता - इसका शब्द भी नहीं सुना जाता और धड़कन भी मालूम नहीं होती, परन्तु कोई बीमारी होने से इसकी चाल ऐसी बढ़जाती है कि छाती के भीतर जोर से धड़कन होने लगती है ॥ कभी कभी उसका जल्द जोर से धड़कना इतना बढ़जाता है जिस्पष्ट सुना जाता है। यहां तक कि रोगी भी कांपने लग जाता है ॥ स्नायविक दुर्बलता, बहुत मानसिक चिंता, अथवा आवेग, कब्ज, अजीर्ण, बहुत रक्तस्राव होने के कारण दुबलता, बहुत स्नायविक परिश्रम, दिलका दर्द, इत्यादि तरह २ की बीमारियों के कारण दिल धड़कने का रोग उत्पन्न होजाता है। बहुत चाय, अथवा धूम्र पान करने से अकसर यह रोग देखा जाता है ॥ स्त्रियों का ऋतु संबंधी गड़बड़ रहने से भी इस रूप देखा जाता है ॥

[१] दुर्वलता के कारण

चिकित्सा—चायना बहुत अच्छी दवाई है। रक्तस्राव इत्यादि देह को क्षय करने वाली शिकायतों से यह बीमारी उत्पन्न हो-और मुंह लाल रंग का और हाथ ठंडे हों तो यह दवाई विशेष फायदा करती है॥

फौसफरस - छाती में ऐसा मालूम होकि किसी चीज से दबा दीगई है और उसके साथ श्वास कष्ट और दुर्बलता, भोजन के बाद और मानसिक चिंता से बीमारी बढ़जाती हो तो यह दवाई विशेष उपकार करती है॥

डिजिटेलिस - बात कहने से या बिछने झुकने से दिल धड़कता होतो यह दवाइ देनी चाहिये॥

रस्टक्स—चुप चाप बैठे रहने से दिल धड़कता होतो यह दवा बहुत फायदा करती है।

औरम—वृद्ध मनुष्यों की दुर्बलता के कारण दिल धड़कता होतो यह दवा दीजाती है।

[२] अजीर्ण के कारण।

चिकित्सा नक्सवोमिका–शराब पीने वाले और बलिष्टकारक मनुष्यों के पक्ष में विशेष फायदा करती है।

पलसेटिला—यह एक बहुत अच्छी दवा है मानो दिल का धड़कना, इस के साथ दर्द कम होलना, और हाथ पैरों का कांपना, बीमारी का शाम के वक्त बढ़ जाना और भय के कारण जो बीमारी हुई होतो यह दवा फायदा करती है। स्त्रियों को प्रथम ऋतु के समय अथवा ऋतु बंद होने के कारण यह बीमारी होतो उसमेंभी पलसटिला देना चाहिये।

(३) मानसिक आवेग के कारण ।

चिकित्सा——येकोनाइट-भय से रोग उत्पन्न हुआ हो, दिल बहुत जोर से धड़कता हो-और उस के साथ मृत्यु का भय होना, हाथ पैरों का सुन्न होजाना, मुंह गरम लाल रंग का, जल्दी २ उसास आना जाना, इत्यादि लक्षण होंतो यह दवाई दीजाती है।

ओपियम-भय, शोक, और कोई रंज की खबर सुनने से रोग की उत्पत्ति हो, तथा नाड़ी आहिस्ते आहिस्ते चलती हो और अनियमित होतो यह दवाई उपयोगी है।

बेलेडोना—मस्तिष्क में खून की विशेषता, दिल की जगह दर्द और कष्ट मालूम होना, विश्राम की हालत में दिल धड़कना, हिलने से बढ़ना, गले और मस्तक में लपकन मालूम होना इत्यादि लक्षणों में बेलेडोना दिया जाता है।

बहुत परिश्रम करने के कारण रोग उत्पन्न हुआ होवे तो आर्निका बहुत फायदा करता है।

खून की ज्यादती के कारण रोग की उत्पत्ति होने पर येकोनाइट और बेलेडोना दिया जाता है।

स्नायविक कारण अथवा वायु की वृद्धि होजाने से मस्कस स्पाईजिलिया, बेलडोना, येकोनाइट और आरसेनिक दिया जाता है॥

दवाई खिलाने की तरकीब । अचानक दिल धड़कना शुरू होतो-फौरनही दवा देनी चाहिये और जरूरत के माफक एक या आध घंटा के बाद दवाई देनी चाहिये। इसके बाद थोड़े दिन तक दिनमें दो तीन दफे करके दवा-देने से बिलकुल आराम होजाता है॥

सहकारी उपाय— रोगी को मानसिक चिंता और उद्वेग, उत्तेजक पदार्थ जैसे शराब, चाय, काफी; देर से हजम होन वाला भोजन और सख्त मिहनत आदि छोड़देना चाहिये, रोगी को रोज प्रभात के समय ठंढे पानी से नहाना चाहिये ॥

७२ - क्षत अथवा घाव

लक्षण—चोट या और कोई बाहरके कारण से चर्म उड़कर घाव होजाता है ॥ यह कभी जल्द सूख जाता है और कभी उसमें प्रदाह को करके बहुत तकलीफ देता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जब घाव पुराना होजाता है तो आराम नहीं होता ॥ भीतर सर पड़ने से या चारों तरफ फैलने से बहुत तकलीफ देता है ॥ शरीर में पारे का दोष रहने पर जल्द घाव होने की संभावना होती है और जो एकबार घाव हो भी जाता है तो जल्दी आराम नहीं होता ॥

चिकित्सा—दवाई खाने का असली मतलब शरीर को स्वस्थ रखना है ॥

साईलशिया - पुराने और सामान्य घाव तथा सर पड़जाने, और सूखने में देरी होने से यह दवाई दीजाती है ॥

बेलडोना—बहुत दर्द करने वाला घाव, और चारों तरफ लाल रंगत होने की हालत में दिया जाता है ॥

हाईड्रास्टिस - मुंह, गला, नाक आंख इत्यादि स्थानों में घाव, होने पर यह फायदा करती है-इसका लोशन और कुल्ली आवश्यकता के माफक काम में लाये जाते हैं।

आर्सेनिक - बहुत प्रदाहित और जलन करने वाला घाव, हर वक्त खून और पतला सड़ा हुआ पीब गिरना, अथवा घाव के

आराम होने में देर लगना इत्यादि अवस्थाओं में यह दवा दीजाती है ॥

हेपर-सलफर, कैलकेरियाकार्ब, सलफर, यह दवा घाव भरने के लिये व्यवहार करनी चाहिये ॥

बहुत पीब निकलती रहने पर, चायना, मर्क्यूरिस पलसेटिला, हिपरसलफर अथवा सलफर दिया जाता है ॥

सड़ा हुआ घाव होने से आर्सेनिक, लेकेसिस, कार्बो- वेजी, हीपर और साइलेशिया देना चाहिये।

हड्डियों में घाव होने पर फासफारसऐसिड, कल्केरियाफोरिया, साइलेशिया और मर्क्यूरियस देना चाहिये।

यदि घाव में से खून गिरता हो तो आर्सेनिक, चायना, फॉस-फरिक, कार्बो—वेजी, सलफर और मर्क्यूरियस दियाजाता है।

उपदंश यानी गरमी के कारण घाव हों तो मर्क्यूरियस नाइट्रिक एसिड और थूजा- दिये जाते हैं।

पारे खाने के कारण घावों के लिये—नाइट्रिक ऐसिड और औरम देना चाहिये।

सहकारी उपाय—कैलेंडुला लोशन बनाकर (एकभाग कैलेंडुला और ९ भाग पानी) घाव की जगह को अच्छी तरह धोना चाहिये। घाव की जगह के बांधने वाली पट्टी को खोलने पर, पहले पानी से तर कर लेना चाहिये। ताकि खून न निकल जावे आवश्यकता के अनुसार रोज अथवा दिन में दो दफे धोना चाहिये। पीड़ित स्थान को पूरे तरह आराम देना बहुत जरूरी है। पैर में घाव होने से घूमना अथवा पैर लटका कर बैठना एक दम निषिद्ध है। हलके और पुष्टि कारक भोजन करना चाहिये मछली, मांस, बहुत दूध और सोडा निषिद्ध है।

घाव पर चाहे जैसी मरहम लगाना अनुचित है, घाव की जगह को खुला हुआ बिलकुल नहीं रखना चाहिये जितना साफ रक्खा जावेगा उतनाही जलदी घाव सूख जावेगा।

॥ तृतीय अध्याय ॥

---

(१) ॥ हड्डी टूटना ॥

लक्षण— गिर पड़ने या हाथ पैर में जोरसे चोट लगने के कारण हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट जाने से शरीर का वह हिस्सा टेढ़ा अथवा छोटा होजाता है और टूटी हुई हड्डी की जगह के दोनों तरफ, अगर हाथों से पकड़ के हिलाया जाय तो दोनों हिस्से अलग मालूम पड़ेंगे और यदि इस तरह से हिलाया जाय तो टूटी हुई हड्डी के दोनों सिरे एक दूसरे से लगकर एक तरह का शब्द करते हैं, इसी शब्द से ठीक मालूम पड़जाता है कि हड्डी टूट गई है, इसके सिवाय उस जगह में बड़ा दर्द होता है और शक्ति शून्य मालूम पड़ता है।

चिकित्सा—हड्डी टूटते ही उस जगह को अच्छी तरह ओर से पकड़ कर टूटे हुए दोनों टुकड़ों को परस्पर एक दूसरे से मिला कर टूटे हुए जगह के दोनों तरफ पतली और मजबूत दो लकड़ी की खपची (Splin) मजबूत रख लपेट कर बांध देना चाहिये। इसी कारण से यह एसी तरकीब करना चाहिये जिससे कि हड्डी का जोड़ हिलने न पावे इसके लिये अच्छा उपाय यह है कि गले में एक पट्टी बांध कर उसमें हाथ को लटकाये रखना चाहिये। यदि पैर टूट जाय और उस वक्त अच्छी खपची भी न मिले [Splint] न मिले तो मसहरीदार छड़ी या छाते या कुछ भी मिल सके टूटे हुए स्थान को अच्छी तरह जोड़ कर उस पर दो चार

रुमाल से कसकर बांध देना चाहिये। बांधने वक्त खूब सावधानि से बांधना चाहिये क्योंकि बहुत जोर से खून बांधदेने से भी चाल रुकने का अंदेशा होता है जिस से कि वह जगह फूल उठती है और बहुत तकलीफ देती है। जब तक हड्डी अच्छी तरह से जुड़ न जावे जब तक हाथ पैर चलाना न चाहियें, और लकड़ी बंधी रखनी चाहिये।

खाने की दवाइयों में सिफाइरम बहुत ही उमदा दवाई है दिन में २।३ बार खाना चाहिये।

यदि प्रदाह होतो ऐकोनाइट अथवा बेलेडोना दियाजाता है।

हड्डी में तेज दर्द होतो ऐसिड फौसफारिक अथवा मैजेरियम देते हैं यदि हड्डी जुड़ने में देर लगेतो कैलकेरिया और सांइलिशिया उमदा दवाई हैं।

२ कान या आंख में कीडा घुसजाना।

कभी कभी आंख कान इत्यादि स्थानों में कीड़े घुस कर बहुत तकलीफ देते हैं। आंख में किरकिरी, [कंकड़ या रेत] छोटाबाल अथवा कीडा आदि कुछ गिरपड़े तो उस आदमी को बैठाकर उसके पीछे खड़े होकर आंख के ऊपरले पलक पर एक पेंसिल लगाकर बिंनूनी [पलक के बाल] पकड़कर धीरे धीरे पलक को उलट देना चाहिये॥ यदि आंखके नीचे के पलक में कोई चीज गिरपड़े तो वह आसानी से निकाल लीजासकी है॥

आंख में यदि सफेदी गिर पड़े तो पानी नहीं लगाना चाहिये। आंख में गिरी हुई चीज निकल जाने के बाद फैर्रुहूवा लोशन में कपडा भिगोकर उसके ऊपर रखना चाहिये, और आध आध घंटे में ऐकोनाइट देना चाहिये॥ आंख में यदि कोई चीज गिर पड़े तो उसको रगड़ना नहीं चाहिये॥

कान में यदि कीड़ा गिर पड़े तो तेल गरम करके कान में डालने से कीड़ा मर जाता है ॥ तेल को गरम करने के बाद उंगली से देख लेना चाहिये - इतना गरम न हो कि कान में जलन मालूम होने लगे - यदि और कोई चीज़ कान में गिरपड़े—जैसे किसी फलका बीज, कौड़ी, और पेंसिल का छोटा टुकड़ा इत्यादि तो उसको बहुत होशयारी से चीमटी से निकाल लेना चाहिये।

३ - कीड़े का काटना या डंक चुभाना।

चिकित्सा--कीड़े या बर्रे, ततैया आदि के डंक मारने से अकसर डंक चमड़े में रहजाता है ॥ सुई, चिमटी, या चाबी के छेद के बीच में डंक की जगह को दबाने से डंक ऊपर उठ आता है। इसके बाद नाखून से पकड़ कर डंक को निकाल लेना चाहिये ॥ डंक लगने या काटने की जगह में चूने का पानी, कपूर का अरक, या प्याज का रस लगाने से जलन कम होजाती है ॥ आर्निका अथवा लेडम के पेवेस्टर के लोशन को उस पर लगाना चाहिये।

४ - चोट लगकर खून जमजाना।

चिकित्सा—दो चार खुराक आर्निका की पीनी चाहिये। चोट लगते ही आर्निका लोशन लगाने से उसमें न दर्द होता है और न खून जमसका है ॥

यदि खून जमकर नीला होजावे तो मोमेलिस उमदा दवाई है ॥

५—चोट से कुचल जाना

चिकित्सा— चमड़ा भड़के और चोट लगकर वह जगह कुचल जावे तो गरम आर्निका लोशन में रुई, लिंट अथवा कपड़ा भिगो

कर उस जगह रखना चाहिये। यदि हड्डी में चोट लगे तो हाथ, और लात अथवा किसी गांठ में चोट लगे तो कोल्डकम्प्रेस देना चाहिये यदि मवाद होने लगे तो पलास्टर देना चाहिये—जितने दिन तक वह जगह फूली हुई रहे तब तक उस जगह को स्थिर रखना आवश्यक है।

६—जल जाना या जलने से घाव हो जाना

जलना तीन प्रकार का होता है (१) मामूली जलना, इस में ज्यादा खून आजाना, चमड़े में प्रदाह और लाल रंग होजाना इत्यादि होता है। परन्तु फफोला नहीं पड़ता। (२) फफोला पड़जाना और घाव में प्रबल प्रदाह उपस्थित होजाना।

(३) जल कर घाव होजाना, और उसका गलकर दुर्गन्ध युक्त होना। इस में कभी सिर्फ चमड़ा और कभी कभी चमड़े के नीचे मांस तक का असर पहुंचता है—इस तरह के जल जाने से यह अक्सर संघातिक होजाता है। हाथ पैर जलने से उस को फौरन ठण्डे पानी में डुबाने से जलन मिट जाती है।

चिकित्सा—यदि और कोई जगह में जल जायें तो फौरन उस को रुई से ढक देना चाहिये।

जले हुए जगह में तेल इत्यादि कुछ नहीं लगाना चाहिये। जले हुए जगह में यदि कपड़ा चिपक जाय तो उसको खींच कर नहीं खोलना चाहिये— बल्कि कपड़े को जगह से काट कर साफ करने के बाद ढक देना चाहिये।

जब तक घाव न भरे तथा जब तक रोगी को दर्द न मालूम पड़ता हो, तथा दर्द ऐसा न होजाय तब तक जले हुए जगह

धोलना नहीं चाहिये। क्योंकि जली हुई जगह जितनी कम खोली जायगी उतनी जल्दी चगाड़ा आराम होगा।

यदि बड़े बड़े फफोले पड़ जावें तो सुई चुभाकर उनका पानी बाहर निकाल देना चाहिये। लेकिन इतनी हुश्यारी रखनी चाहिये कि फफोले का चमड़ा न उखड़जाय। घाव पुराने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि कोई अंग वक्र(टेढ़ा न होजावे।

एकही जगह अधिक गहरा होजाने से ऐसा सांघातिक नहीं होता जितना कि बहुत दूर तक जलने से होता है।

जलन की दवाई —एकभाग कार्बोलिक एसिड और ८ भाग अलसी के तेल को मिलाकर और उस में रुई भिगोकर जली हुई जगह पर लगाना चाहिये।

मामूली जलन पर बोरिक प्यूरेन्स या वेसलेरिन लोशन लगाने से आराम होजाता है। चूनेका पानी और नारियल का तेल लगाने से भी बहुत जल्दी फायदा होता है। जलजाने के समय यदि तारपीन का तेल या गरम पानी फौरन लगादी जाय तो ऊपर जलन मिट जाती है परन्तु बाद में यदि घाव मालूम पड़े तो नारियलका तेल मक्खन उसमें बेकिंगसोडा या कार्बोलिक यूरेन्स मिलाकर लगाना चाहिये। यदि घाव पकजाय तो उसको धोडालना चाहिये। साफ जली हुई जगह को पानी से धोनेकी जरूरत नहीं है।

जलन की दवाई - मामूली जलने के सिवाय और सब हालतों में दवाई डाक्टरी चाहिए। शुरुआ में टेकानाइट देने से बुखार अच्छा और दर्द फौरन मिटजाता है। बहुत ज्यादा घाव होने पर सड़ने का मालूम होने पर कि सड़ जायगा आर्सेनिक दवा चाहिये। यह दवा ऊपर लिखी हुई हालतों में सिरका और काब मेडी टेबिलिस दिया जाता है।

७ - जहर खाना

जहर अथवा जहरीली चीज खाई है ऐसा मालूम होने से ही बिलकुल समय नष्ट न करके फौरन अच्छी चिकित्सा का बदोबस्त करना बहुत जरूरी है। क्योंकि देर करने से रोगी के जीवन के संशय होजाता है॥

अगर कोई दो तरह का जहर खावे तो उसके लिये दो तरह के उपाय करने चाहियें जहर खाया है ऐसा जानने सेही बहुत सी उलटी कराने की दवाई देनी चाहिये॥

किसी २ जहर के खाने से उलटी कराना उचित है और किसी २ में शुरू ही शुरू में उलटी कराने वाली दवाई देनी उचित नहीं है किस तरह के जहर में उल्टी कराने वाली दवाई देनी चाहिये और किस तरह के में न देनी चाहिये इसका जानना बहुत जरूरी है।

१— जब मुंह और होट इत्यादि स्थानों पर जलन या घाव न रहे तो उलटी कराने वाली दवाई देनी चाहिये।

२— और जिस जगह ऊपर लिखी हुई हालतें सब मौजूद हों वहां उलटी करानें वाली दवाई नहीं देनी चाहिये ऐसे मौके पर चूने का पानी अथवा पानी, में खड़ियां मिलाकर या मेगनेशिया घोलकर पिलाना चाहिये अगर ये चीजें न मिलें तो राख या साबुन पानी में घोल कर दिया जाता है। हम लोगों के देश में अक्सर लोग अफीम खा लेते हैं यह मालुम होते ही ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिये कि रोगी सोने न पावे जिसने अफीम खाई है यो यदि एक दफे सो जाय तो फिर जगाया नहीं जासका। वह निश्चय हमेशा के लिये सो जाता है। इसलिये ऐसा काम करना चाहिये कि रोगी सो न सके दो आदमी रोगी को दोनों हाथों

स पकड़ कर खूब दौड़ावें तो नींद से रक्षा हो सकती है। इस तरह से दौड़ाते २ जब रोगी की निद्रालुता हट जाय तब उसको बैठने देना चाहिये। पहले उलटी कराने वाली दवाई देनी चाहिये अथवा स्टोमकपंप द्वारा पाक स्थली से अफीम निकालने की कोशिश करनी चाहिये तूतिया, नमक, राई, अथवा पिसी हुई राई को गरम पानी में मिलाकर पिलाने से फौरन उलटी होजाती है। अफीम के जहरको रोकने वाली दवाई टिन्चर बेलेडोना है हर पन्द्रह मिन्ट में दस२ बूंद देनी चाहिये गाढी काफी (कहवा) भी फायदा करता है।

। ८— मोच ।—

असावधानी से पैर रखने से या एक दम कोई चीज उठाने से हाथ पैर में मोच आजाती है। मोच की जगह में बहुत दर्द होता है और सूजन भी आजाती है।

चिकित्सा — जबतक सूजन और दर्द में कुछ कमी न हो तबतक गरम जलमें डुबा रखना या गरम जल से सेकना चाहिये। जल ठण्डा होजाने पर उसमें और गरम पानी मिलाता रहे, मोच की जगह को बिलकुल नहीं हिलाना चाहिये। और अवस्था के अनुसारमार्नीका पफोमाईट, रसटक्स, रूटा या हाइपेरीकमलोशन में कपड़ा भिगो कर दर्द की जगह लगाना चाहिये इस के साथ ही साथ आरनिका, या रसटकस पीने को देना चाहिये। दर्द कम होने पर आहिस्ते २ थोड़ा २ हाथ पैर हिलाने की कोशिश करनी चाहिये। जबतक दर्द कम न होजाय हाथ पैर से काम नहीं लेना चाहिये। जबतक दर्द बिलकुल न जाता रहे और हाथ

पैर मे काम लेना शुरू करदेने से आराम नहोकर गठिया की तरह होजाता है ।

आरनिका — मोचके साथ यदि वह जगह कुचल जाय या चूर इकट्ठा होकर नीला पड़जाय तो यह दवाई देना चाहिये।

ऐकोनाइट — उत्ताप, लाल रङ्ग, सूजन, इसके साथ २ ज्वर प्यास, और बेचैनी इत्यादि होतो यह दवाई देनी चाहिये ।

रसटक्स — मोच आना उसके साथ सूजन, बहुत दर्द होना विश्राम करने से दर्द का बढना, और हिलाने झुलाने से कम होना इत्यादि हालतो में यह दवाई दी जाती है ।

कोई भारी चीज उठाने से, पीठ में जोर से लगने के सबब मोच आजावे तोभी यह दवाई फायदा करती है ।

हाइपेरीकम — इसका असर रसटक्स के माफिक है लेकिन जब स्नायुओं के ऊपर असर होतो यह बहुत फायदा करती है ।

रोग अगर पुराना पड़ जायतो नीचे लिखी हुइ दवाई देना चाहिये – केल्कोरियाकार्ब या फसफोरस (जोड़ों की कमजोरी) (ब्राईयोनिया,) हिलाने से दर्द का बढना आयोडियम (जोड़ों में रस इकट्ठा होजाना)।

। ६– मस्तिष्क मे चोटलगना ।

गिरने से वा सिरमें चोट लगने से मसतिष्क की क्रिया में गड़ बड़ होने से उसको मसतिष्क घात कहते हैं । सामान्य चोट लगने से मसतिष्क स्थिर रहजाता है और जियादा चोट लगने से प्राणों का संशय भी होसका है ।

मसतिष्क में जोरकी चोट लगने से तीन तरह की हालत देखी जाती है ।

प्रथम–हाथ पैर ठंडे होजाना, शरीररक्त शून्य, नाड़ी और

श्वासक्रिया दुर्बल, आख की पुतली बढी हुई, यह हालत एक घंटे से लगाकर तीनघंटे तक रहसकी है

दूसरी—रोगीका बेचेन फराहना, इधर उधर करवट लेना, और उलटी करना। रोगीको आवाज देनेसे रोगी जगता है और आवाज देताहै। यह हालत कई घंटे तक रहसकी है।

तीसरी—बेहोशी वा निद्रा की अवस्था—जैसे नाडी पूर्ण और अनियमित, सरीर गरम, चेहरा लाल, आंखकी पुतली छोटी और रोगी का गहरी नींद में सोना। रोगी को इस नींद से जगाना सहज नहीं है। यह हालत एक दिन से लगाकर सप्ताह तक रहसकी है।

चिकित्सा—यदि घर से कुछ फासिले पर ऐसी दुर्घटना हो तो रोगी को घर लाते समय जितनी होसके इसबातकी चेष्टा रखनी चाहिये कि रोगीशिर आरसे रहे अर्थात बहुत हिले डुले नहीं – पालकी में अथवा हाथों पर आहिस्ते आहिस्ते लाना अच्छा है। रोगी को अच्छी तरह से आराम से सिर नीचा कर के सुलाकर केवल खूब उढादेना चाहिये, ताकि शरीर की गरमाई कम न होने पावे। रोगी को सपूर्ण विश्राम करनेदेना चाहिये। कोई बात पूछना, आहट करना रोशनी इत्यादि नकरनी चाहिये। जिससे कि रोगी को शुराम मालूम होवे।

प्रतिक्रिया जब—शुरू हो तब माथे और कधेरे के पास थोडा ऊंचा कर देना चाहिये। ठंडा और एकान्त स्थान रोगी केलिये बहुत उपयोगी है। २।३ सप्ताह तक ज्यादा होशयारी रखन की आवश्यकता होती है। सब तरहका मानसिक श्रम और चिन्ता बिलकुल वर्जित है।

चोट लगतेही आर्निका देना चाहिये। यदि होश होने प

साथ साथ ज्वर आजावे तो आर्निका के साथ एकोनाइटबारी बारी से दिया जाता है। यदि विकार के लक्षण उपस्थित हों यथा सिर में दर्द, चहरे की रंगत लाल, इत्यादि तो एकोनाइट और बेलेडोना बारी बारी से देना चाहिये। श्वास लेने में घर्राटा होताहो और कब्ज इत्यादि हालतों में ओपियम दिया जाता है। और यदि रोगी बकता होतो-हायोसायेमस दिया जाता है। आवश्यकता के अनुसार १-२-अथवा ३-घंटे के अन्तर से दवा देना चाहिये।

१०—मूर्च्छा

अनेक कारणों से मूर्च्छा होजाती है। गिरना, चोट लगना, असह्ययन्त्रणा, शोक, बहुत ज्यादा रक्तस्राव, और बहुत आदमियों के एकही स्थान में भरजाने के कारण वायु दूषित होने से मूर्छा होजाती है। अकसर ऐसा भी देखागया है कि जिन की स्नायविक दुर्बलता होती है उनको कोई कष्ट कारक दृश्य देखने से जैसे बकरा काटना या किसी कोड़े में चीरा लगाना ऐसे कारणों से भी मूर्छा होजाती है।

मूर्छा हुई है कि नहीं इस बात को नीचे लिखी हुई रीती से निश्चय कर लेना चाहिये-बगल में हाथ रखकर रोगी के शरीर का उत्ताप देखना; आंख कीहालतया छाती के ऊपर कान रखकर दिल की धड़कन का मालूम करना; मुहके पास एक साफ काच रख कर मुह देखना कि उस में किस तरह भाप लगती है। और नाक के पास पख रखकर देखना कि वह कितनी हिलती है। इन सब लक्षणों के देखने से मालूम होजायगा कि मूर्च्छा हुई या नहीं।

मूर्च्छित मनुष्य को एकान्त खुली हुई जगह में लाकर उसकी छाती, शरीर, गले, और कमर के कपड़ों को बिलकुल खोल दे या ढीला करदे और सिर नीचा करके सुलावे। आंख,छाती और

सिर पर ठंढे पानी के छींटे लगाये और नाक के पास कपूर के भरक को रखकर सुंघायें।

अधिक रक्तस्राव के कारण मूर्च्छा होतो आयमा, मानसिक उद्वेग जैसे शोक, इत्यादि कारणों से होतो इग्नेशिया और भय के कारण होतो ओपियम देना चाहिये

११—घाव या कट जाना।

किसी जगह कटजाने से नीचे लिखे हुये नियमों पर द्रष्टि रखनी चाहिये।

(१) खून गिरना बंद करना चाहिये। इसका इलाज कई तरह से होसका है जैसे — कटी हुई जगह को ज़ोर से दाबने से, ऊंची उठा कर रखने से, और ठंढा पानी या बरफ लगाने से इत्यादि। यदि कोई सिर या धमनी कट गई होवे तो खून बड़े ज़ोर से निकलने लगता है ऐसी हालतों में सिरया धमनी का मुंह बांध देना पड़ता है।

घाव की जगह में कैलेंडुला लोशन लगाना चाहिये इससे खून गिरना और पीब पड़ना रुक जाता है।

(२) कटी हुई जगह को या घाव को खूब सावधानी से धोना चाहिये। जिस चीज से कट जाताहै या जो चीज घुस जाती है वही अक्सर घाव के भीतर रहजी जाती है बांधने से पहले कोई मैल, बाल, कांचका टुकड़ा, कांटा, या फांस यदि रहगई होवे तो उसको निकाल डालना चाहिये।

(३) कटी हुई जगह के दोनो हिस्सों को मिलाकर बांध देना चाहिये क्योंकि इससे शीघ्र मुंह जुड़कर घाव सूख आता है

(४) कटीहुई जगह को स्थिर रखना चाहिये हाथ पैर कट जाय तो टहलना या कोई काम करना निषिद्ध है।

(५) घाव को रोज धोना चाहिये - धोने के समय धोने से पहिले जो पट्टी बंधी हो उसको तथा घाव के ऊपर के कपड़े को खूब गरम पानी मे तर करलेना चाहिये पीछे सावधानी से उसे खोले, यदि ऐसा न करके जल्दी से और जोर से यदि पट्टी खोलडाली जावे तो रोगी को कष्ट होता है, बहुत खून गिरने लगता है और घाव के सूखन में अड़चल पड़जाती है।

चिकित्सा— कैलेंडुलालोशन से घाव को धोकर कैलेंडुला की मलुम या कैलेंडुला में नारियल का तेल मिला कर लगाना चाहिये।

ऊपर की दवाई लगाने के सिवाय बीच २ में दवा खिलाने की आवश्यकता भी पड़ती हैं एकोनाइट और आर्निका बारी २ से देनेसे अक्सर बहुत फायदा होता है।

यदि घाव बहुत दर्द करता हो और इधर उधर सूजन आगई हो तथा मस्तक में रक्त की अधिकता के कारण दर्द होता हो तो बेलडोना देना चाहिये। घाव यदि पकजावे तो हीपर सलफर। और सूखने में देर लगे तो साइलेशिया दिया जाता है जरा कुछ लगजाने से ही घाव में से खून निकलने लगे तो एकोनाइट, आर्निका, चायना, और फासफरस दिये जाते हैं।

यदि घाव म बहुत राध पड़जावे तो चायना, मर्क्यूरियस, पलसेटिला, सलफर और हीपरसलफर देना चाहिये।

-यदि घाव सड़जावें तो —आर्सेनिक, चायना, लेकेसिस, साइलेशिया, और कार्बो-वेजीटेबिस देना चाहिये। यदि किसी गांठ पर घाव होवे तो —कोनायम, आयोडियम, फसफोरस, हीपरसलफर और मर्क्यूरियस दिये जाते हैं।

॥ चतुर्थ अध्याय ॥



। संक्षिप्त भैषज्य तत्व ।

पहिले अध्यायों में रोगों का वर्णन और चिकित्सा लिखी गई है; इस अध्याय में आवश्यकीय ५० दवाइयों के लक्षण, गुण, और यह प्राय किन २ रोगों में दीजाती हैं इस को संक्षेप रीति से लिखा है।

१—आर्सेनिक-सर्दी, दमा, श्वासकष्ट, के साथ सां सां करने वाली खांसी, इत्यादि, ज्वर, यथा सविराम, विकार, बहुत प्यास और दुरबलता, इन सब रोगों में तथा अवस्थाओं में जिन में बहुत दुरबलता हो, जीवन शक्ति का कम होना, नाड़ी क्षीण, तथा विलुप्त प्राय इत्यादि सांघातक लक्षण हों। हैजा, पेटकी बीमारी, विशेष कर उसके साथ जलन, और कमजोरी रहने से, उदरामय दस्त पानी के समान रंगत का हरा और जलन के साथ चर्म रोग विशेष कर सब तरह की खुश्क फुन्सी, जिनमें बहुत पतला रस बहे और जलन हो, पुराना घाव, उस में जलन, रस युक्त, और पतला या दुर्गन्ध युक्त स्राव हो, शोथ इत्यादि

२—आर्निका — इसका प्रधान व्यवहार चोट लगने से जो बीमारि होती है उसमें ही होता है गिरने या चोट लगने से धनुष्टंकार, मस्तक या और किसी जगह जोर से चोट लगना, बहुत परिश्रम के बाद शरीर में दर्द, गठिया का दर्द, थकावट प्रसव के उपरांत यह औषध बहुत उपकारी है।

ऊपर लगाने को— चोट, कुचल जाना, धक्के से चोट, मार खाकर काला पड़जाना, चोट लगने तथा कुचल जाने के बाद

फौरन ही यदि यह दवा लगादी जावे तो काला पड़ना, दर्द, और सूजन कुछ नहीं होती। इस दवा की २० बूद येक छटाक पानी में मिला कर चोट लगने की जगह पर कपड़ा भिगो कर रखना चाहिये। और एक सूखे कपड़े से उसे ढक रखना चाहिये। इस के साथ २ आर्निका ३ क्रम पिलावे।

३--इपीका- अक्सर खास और, परिपाक, यन्त्र के रोगों में व्यवहार होती है। श्वास रोकने वाली आक्षेप युक्त खासी -- गले में सुरसुराहट, कभी २ कै होना दमा, विशेष कर रात्री में हूपिंग खांसी, परिपाक यन्त्र के रोग, उदरामय हो या नहो लेकिन जी मिचलाता हो और उलटी होती हो, पेट में दर्द, आमाशय (पेचिश) रक्त स्राव, खून उज्वल लाल रङ्ग का, उसके साथ उद्वेग, चहरा रक्त शून्य और उलटी इत्यादि।

४—इग्नेसिया-शोक से जो रोग उत्पन्न हों और जो पुरुष अथवा स्त्री जरासी बात में उदास और दुखी होजाते होंतो उनके लिये विशेष उपकारी है। स्नायविक कारणों से सिर में दर्द, मूर्च्छागत वायू (Hysteria) शोक, दुःख, निराशा, विरक्त के कारण आक्षेप भाव में इसके साथ ऐसा मालुम होना जैसा कोई गोल चीज गले से निकल आती है, जवानी आरम्भ में अथवा वृद्धावस्था में ऋतु बन्द होने के समय, स्त्रियों की तरह २ के रोग उत्पन्न होना, कीड़ों के कारण बच्चों को तकलीफ, कांच निकलना इत्यादि।

५—एकोनाइट-यह दवा होमियो पैथिक में सब प्रधान है क्योंकि ऐसी कोई नई बीमारी नहीं है जिसमें यह थोड़ी बहुत नहीं दीजाती हो। प्रधान व्यवहार —सब तरह का बुखार और प्रदाह में विशेष कर शुरु में।

प्रधान लक्षण;— प्यास, गरम और सूखा शरीर, पहले ठंड और कंप पीछे ज्वर; नाड़ी पूर्ण और जल्दी जल्दी चलने वाली; बेचैनी, उद्वेग, मृत्युभय, घबराहट, दर्द, जल्दी और तकलीफ से सांस लेना, ज्वर के साथ सूखी खांसी, थोड़ा और लाल रंगत का पेशाब, और सर्दी, (प्रथम अवस्था) इत्यादि।

६—एंटिम टार्ट। इसकी प्रधान क्रिया श्लैष्मिक झिल्ली, फेंफड़ा और चर्म के ऊपर होती है। घरांटे की आवाज के साथ खांसी, दमा, घुंगरी खांसी, फेंफड़े का प्रदाह इत्यादि, माता (चेचक) जल्दी, दस्त के साथ ठंडा और रक्त हीन दुर्बल शरीर रहना। बच्चों की घरांटे के साथ खांसी, छाती में कफ भरा रहे परन्तु खांसी के साथ कफ नहि निकलना, भयानक श्वास कष्ट इत्यादि अवस्थाओं में यह बहुत ही उत्तम दवा है।

७—एंटिम क्रूड — इसकी क्रिया पाकाशय और आंतों कि श्लेष्मा की झिल्ली के ऊपर इस की क्रिया है। दुर्गंधयुक्त खट्टी डकार आना, जी मिचलाना, और उल्टी होना, दुर्गंध वायु निकलना, भूख न लगना, पर्याय क्रम से कब्ज और उदरामय, आम निकलना, दूध कीसी रंगत की सफेद जीभ, परिपाक शक्ति (हाजमे) का कम होना।

८—हेपिस। शरीर के सब स्थानों में सूजन और शोथ, आमवात, स्वरभंग और सूखी खांसी, और इसके साथ पेशाब कष्ट, बार बार हाजत हो परन्तु पेशाब न होताहो, विकारज्वर बाय) ठहरठहर कर जोर से चिल्ला पड़ना।

९- ऐसिड-नाइट्रिक । गरमी तथा पारेके बहुत इस्तेमाल से रोग उत्पन्न हों, हड्डी अथवा गाठों की बीमारी, चर्म और श्लेष्मा निकालने वाली झिल्ली में घाव ।

चक्षुप्रदाह, सर्दी, छाती में दर्द, डिपथीरिया (Diphtheria) आंतों से खून निकलना, श्वेत प्रदर, अर्श, प्रमेह, गठिया, इत्यादि रोगों में यह दवा सर्वदा दीजाती है ।

१० — ऐसिड - फौस । बहुत इन्द्रिय सेवनसे रोग, हस्त मैथुन, शोक और दुःख से उत्पन्न पीड़ा । हड्डियों का क्षय और उन में घाव, गाठों में दर्द, मूर्च्छागत वायु, अजीर्ण, पुराना उदरामय, ध्वजभंग, स्वप्न दोष, डिम्बाधारप्रदाह, जरायु-प्रदाह, बहुत रजस्राव अथवा श्वेत प्रदर, पेशाब में शक्कर और बहुमूत्र आदि पीड़ा में उपकारी है ।

११ — ओपियम — बहुत ज्यादा कब्ज, पेशाब बंद होना, अचानक भय अथवा मानसिक चिंता से रोग उत्पन्न हो उनमन में, सर्दीगर्मी, गले में घर्राहट के साथ सांस आना और निकलना, विकारज्वर, रोगी निद्रावस्था में पड़ा रहता हो, और बेचैनसा हो, शारीरिक और मानसिक निस्तेजता, हैजा में एक दम दस्त बन्द होकर पेट फूलजाना इस के लिये यह महौषध है । तन्द्रा दोष ओपियम का एक प्रधान लक्षण है ।

१२ — कैमोमिला — बच्चे तथा स्त्रियों की पीड़ा, वायु पित्त, और जरायुज बीमारियों में, बायटे, दांत निकलने के समय, क्रोधके कारण अथवा पेट में दर्द होनेके कारण; स्नायु शूल, दांतों में दर्द, रात्रि में दर्द और ऐसा मालूम होकि दांत लम्बा हो-गया है, बच्चों के दांत निकलने के समय पीड़ाओं में; बच्चों का

उदरामय, हस्त पतला, आम के साथ हरा या पीली रगत का; दाँत निकलने समय ज्वर, बच्चोंकी सर्दी या खांसी स्त्री रोग यथा अतृ शूल, गर्भावस्था की पीड़ा प्रसव के उपरांत दर्द इत्यादि ।

१३-- काली- बाइक्रोमिकम्— श्लेष्मिक झिल्ली और चमड़ पर इसकी क्रिया है पुरानी खांसी, कफ गोंद के समान, कफ आसानी से नहीं निकलता हो खर मज्ञ, नाक की बीमारी, गर्मी के जहर के कारण आंखों के रोग, पुराना अजीर्ण रोग, इसके साथ छाती में जलन, डकार, कडुवा स्वाद, जीभ मोटी और पीली ।

१४-- कौफिया-- दर्द अनिद्र रोग, बच्चों का रोना, नींद न आना जगते पड़े रहना, बहुत बनावट प्रसव, तथा इसके उपरांत दर्द, वायु प्रधान सब प्रकार पिशन कर बच्चे और स्त्रियों के

१५-- केल्केरिया कार्ब गण्डमाला के जहर के कारण उत्पन्न हुए सब रोगों में; गले की गांठों का फूलना, दाँत निकलने में देर होना और तकलीफ से दांतनिकलना पक्षाघात, कानों में शब्द, कान से पीप निकलना, पुराना उदरामय खांसी और उस के साथ गाढ़ा और पद्मबूदार कफ; गला पड़जाना, स्त्री रोग विशेष कर जिनको बहुत देर में ऋतु हो, और खून बहुत गिरता हो, पक्षाघात, श्वेतप्रदर हड्डियों की बीमारि, साधारण तरह से, स्त्रियों का बच्चों को, पुरानी बीमारी में दिया जाता है

१६ — कार्बो वेजिटेबिलिस — परिपाक यंत्र का रोग, भोजन के उपरांत कष्ट मालूम होना, पेट फूलना, और उसके साथ छाती में दर्द, और खट्टापन, दुर्गन्ध वायु निकलना, उदरामय, भरी पेट, के कीड़े, पुराना आमवात, खर मज्ञ, गुमची,

पदबूदार सदा हुआ घाव, हैजे की अखीरी हालत में जब नाड़ी बैठ जाती है और रोगी निष्पन्द होजाता है; और पेट फूल जाता है तब यह बहुत उत्तम दवा है।

१७ -- कौलोसिन्थ -- पेट में दर्द, शूल, स्नायु शूल इत्यादि।

१८ — कैन्थेरिस— प्रस्नव यन्त्र की पीड़ा, रक्त स्राव, पेशाब में बहुत जलन गुलाबी रङ्ग का पेशाब; हैजे में पेशाब बन्द होजाना।

१९ -- कैलेंडुला - यह दवा अकसर लगाने के काम आती है घाव किसी तरह का भी होवे अर्थात चाहे कटजाने से हो, चाहे नश्तर लगाने से हो-कैलेंडूलालोशन लगाने से पीप नहीं पड़ती है और शीघ्र आराम होजाता है।

यदि कोई जगह कट जावे तो कैलेंडूलालोशन लगाने से रक्त स्राव बन्द होजाता है। दर्द अच्छा पड़ जाता है और पीप न पड़ कर घाव जल्द सूख जाताहै। चार भाग पानी में एक भाग कैलेंडूला मिलाकर लोशन बनाया जाता है। घाव पर लगाने को इसका मरहम भी उपकारी है।

२०-कैम्फर— सर्दी की प्रथम अवस्था में; हैजा; कोई कारण से मूर्च्छा मूर्च्छागत वायु में अचानक स्नायुविक दुर्बलता हैजे की शुरू हालत में ही पांच बूंद अर्क-कफूर चीनी के साथ १५–१५ मिनट के अन्तर से देना चाहिये। पेहोशी के समय इसको सुंघाने से होश होता है। कपूर सब होमियो पैथिक दवा-

गुण नष्ट करता है। इस लिये इसको अलग रखना । बहुत से होमियो पैथिक दवाईखाने से यदि कोई भ्रमा हो तो थोड़ा कपूर का अर्क खिलाने से उसका ार आता रहता है।

— कूप्रम-- स्नायु विधान पीड़ा यथा आक्षेप; मस्तक में ैं, मिरगी; हैजे में अगुलियों का वायटा और उल्टी, तृषित ासी असह्य पेट में दर्द उसके साथ फुपकापन और चहरे का ला रङ्ग।

२२ चायना — रक्तस्राव, पुराना उदरामय, अधिक पीब निकलना, अधिक विषय भोग, बहुत दिनों तक बालक को न दूध पिलाने से जो एक प्रकार निर्बलता की पीड़ा होती है ाका होना, सविराम (अन्तर देकर होने वाला) ज्वर; पारीज्वर धेक पसीना का निकलना; उदरामय (ग्रीष्मऋतु का) ी के समान दस्त हो; पीला रङ्ग लिये हुये हो; कभी कभी अजीर्ण पदार्थों के साथ हो, भूख लगती हो पेटफूला हो।

कामला (पीलिया) प्लीहा, स्वप्न दोष

(सोते हुये वीर्य्य पात) विशेष कर इन्द्रिय दोष में चायना का व्यवहार करना बहुत ही लाभ दायक होता है।

२३ जलसिमिनिम् -- एकोनाइट या बेलेडोना जिस अ-वस्था में दिया जाता है बीच बीच उन्हीं में यह भी दवा व्यवहार होती है। स्नायु रोग — पक्षाघात, शीत महीनों पर भी कापना घरी आमी, जब इस में एकोनाइट कुछ उपकार नकरे तब, बालकों को नींद नआना, स्वल्प विराम ज्वर, देखने की

छाती का भरा होना, मस्तक का घूमना, दांत उठने के समय में जो बच्चों को रोग होते हैं उन में, और बिछौना पर मूतना आदि में अश्वसेमिनियम उपकार करती है।

२४ ड्रोसेरा— कुपिङ्ग खांसी, खांसी के साथ सांस के रुकने वाले समय, मल या नाक में रक्त का गिरना, (टीका और येवेसोना देने के पश्चात) आक्षेपिक खांसी, गले के भीतर सुर सुराहट का होना, वमन अथवा सांई सांई शब्द का होना, या सांस रुक रहा है ऐसा मालूम होतो-इस औषध को देना फल दायक है।

२५ डलका मारा— सर्दी आम के साथ उदरामय आदि सीले स्थान में रहने, और जल में भीजने से जो रोग उत्पन्न होते हैं उनसब को डलकामारा नाश करता है भीजने के बाद ही सेवन करने से सर्दी नहीं होती है।

२६ थूजा—मांसिक (मस्सा) प्रमेह या प्रमेह से उत्पन्न रोग समस्त, गर्मी, आरमक, हर प्रकार के चर्म रोग, मुख के घाव, शरीर के भीतर बढ़ने के बाद होने वाला ज्वर -या पुराना प्रमेह आदि के लिये यह औषध अतीव उपकारी है।

२७ नक्सवोमिका—परिपाक नहोने वाले समस्त रोगों में यथा कब्जियत, बार बार मलत्याग की इच्छा-पर मल का नहोना, मुख में पानी का आना, छाती पर जलन होना, पेट फूलना, नाभि में दर्द, मानसिक भाव मंद घूमना, कोष्ठ बद्ध के साथ साथ पाकाशयके और मंद दोष, पाचन शक्ति की हीनता, बार बार जी उकताना, कभी कभी वमन का होना, गले की वायु स्थान

से हाथ पांव का कांपना, यकृत की पीड़ा, दमा, सूखी सर्दी आक्षेप के द्वारा दर्द होना नाना प्रकार के उपद्रव, जो लोग केवल एक स्थान पर ही बैठ २ काम करते हैं और किसी प्रकार का शारीरिक परिश्रम नहीं करते, परन्तु मानसिक परिश्रम ही अधिक करते हैं, उनको या चिन्ता करने वालों का, बराबर २ निरादर उठाना करते वाला, रात्रि में जागने, रोगी की सेवा करने, और नियत से भोजन न करने वाले, मादक द्रव्य का सेवन करना, हुक्का आदि पीने वालों को और जिन लोगों का पेट के रोग पचाशय, बहुत अधिक खाना, भोजन करने के बाद ही और मानसिक चिन्ता से भाग की वृद्धि हो, इत्यादि प्रकार के रोगों में नक्सवोमिका फल प्रद है।

२८ नेट्रोम मिउर—सविराम ज्वर। होंठों में घाव का होना, अधिक आशा ११ बजे के करीब ज्वर, कुइनाइन आदि के अधिक सेवन से प्लीहा यकृत आदि के साथ ज्वर की वृद्धी,। ठन्डे स्थान या कुआ आदि के पास में या नई जमीन खोदने आदि के बाद जो ज्वर होता है उस में यह अधिक उपकारी है। कोष्ठ बद्ध, सिरदर्द, नेत्र प्रदाह, प्रमेह, श्वेत प्रदर, मूत्राशय रोग आंख की फुन्सी, आदि में उपकारक है।

२९ पलसटिला—अजीर्ण रोग, जीभ मलयुक्त, डकार, पित्त, कडुआ खट्टा पदार्थ का वमन होना, घृतादि चिकने पदार्थों के खाने से अजीर्णता, अतिसार विशेष कर रात में दस्त का होना और हमेशा बदलते साथ अतिसार के साथ फुन्सी चकत्तों के साथ में उपकारी सर्दी खांसी, और पलकों का आपस में जुड़ जाना, अञ्जनी (गुहेरी) सर्दी के साथ या हाम [खसरा] के साथ बहिरापन, बच्चों के कान में दर्द या कान से पीब का निकलना,

घात, बेदना होना, जो एक स्थान से अन्य स्थान में फिरती भी हो। स्त्रियों के रोग। विशेष में ऋतु से सम्बन्ध रखने वाली कुक्षपीड़ा में स्वेत प्रदर, प्रसव बेदना, या तत्सम्बन्धी समस्त गड़बड़ी, प्रसव के बाद कुक्ष (नाड़) के गिरने में देर भाधिक दर्द, प्रसव के बाद का अधिक मैलगिरना बन्द होजाना, छाती में दूध का न उतरना, आदि में नितान्त उपकारी समझना चाहिये, पुरुषों के अण्डकोश में सूजन या फूलना, या पुरुष की जनन इन्द्रिय में और २ प्रकार के रोगों में गुण दायक है। यह औषध प्रधानता स्त्रियों के और कोमल प्रकृति के पुरुषों के लिये अधिक उपकारी है।

३० पोडो फाइलम्—उदरामय, हारिस कांच और यकृत की बिमारी में लाभकारी है।

३१ फासफ़रिस—फेफड़ा में प्रदाह स्वरभङ्ग, मूर्छा खांसी और उसी के साथ में रक्त आना, यक्ष्माकाश, पुरातन उदरामय, एव सामान्यगुप्त ज्वर क्रमशः [पिलिया] विकारज्वर, शारीरिक या मानसिक निर्बलता, विशेषतः अधिक और स्वभाव विरुद्ध इन्द्रिय सेवन करने वालों को।

३२ बेलेडोना।—प्रदाह वाले रोगों में इसके साथ एको नाइट का विशेष सम्बन्ध है। किसी स्थान का प्रदाह उज्वल, भारकता या बेदना, प्रकाश, या आवाज सुनने में अरुचि इत्यादि में ऐकोनाइट के साथ या बाद में व्यवहार करना उपकारी है। आंख का, प्रदाह गले का दर्द, दांतका दर्द या मस्तक में अधिक खून के कारण दर्द, आक्षेप, प्रलाप, मस्तक, या वायु रोग में अथवा शिर में पीड़ा, विशेष कर कपाल में, जहां पर दपदप होना हो या ग्रिवाले से ऊपर बढ़ना हो वहां अधिक उपकार पहुंचाता है।

३३ ब्राइयोनिया —प्रदाह फेफड़े में पसली में दर्द, सूखी खांसी पक्वस्थान में सुई गड़ाने का दर्द, यकृत या भीतरी भाग में दर्द, ओंठों पर दर्द, हिलाने से दर्द का बढ़ना, कामला,अपरिपाक सम्बन्धी रोगों में प्रधान लक्षण, जैसे मुख में पानी आना, कड़ुवी, या खट्टी डकार, पाकाशय पर बोझसा मालूम पड़ना, और बद्ध पाखाना कड़ा, और सूखा हो वहां इसे देना चाहिये।

३४ भिरेट्रम अल्बम् — हैजा, सहसा दस्तों का आना या वमन होना, उदरामय, दस्त होते २ वमन होने लगना, हाथ पांव में ऐंठन और शरीर का ठण्डा पसीना हो जाना, या खाली वमन होना, अथवा गर्भावस्था के वमन में फल प्रद।

३५ भिरेट्रम्भिरड— ज्वर, साथही साथ अधिक माथे में दर्द होने लगे, नाड़ी का तेजी से चलना, वमन की इच्छा, बालकों में अल्पविराम ज्वर का होना, हाम आदिकी आरंभिक दशा, माथे में, खून का ज्यादा होना पेव फेफड़े का प्रदाह।

३६ मर्क्यूरियस सल।——गांठ का बढ़ना, पीप निकलना, गले का घाव, उसी से मुख में दर्द, निगलने में तकलीफ, मुख से बहुत लार का निकलना, और दुर्गंध, मुख का घाव, मुखमें सड़ा घाव,मुसकुर या मसूड़ों का फूलना,दर्द होना,पकना पीप निकलना, दांत का दर्द या कीड़ा लगना, कमला, देह आंख का हल्दी कासा रङ्ग होजाना, आंख का उठना, पलकों का दाल में जुड़ आना, कानसे सुनाई न पड़ना, या पीप का निकलना। उदरामय में आंव के साथ सफ़ या सब्ज रङ्ग का मल या कीचड़ के रङ्ग का मल आना प्रदाह कि रङ्गों का गन्धयुक्त दस्त होना। याव-

फाके उदरामय में यकृत की क्रिया का बिगड़ जाना, पित्त का अच्छी प्रकार से न निकलना, मल कड़ा सफेद बदबूदार, दक्षिण अङ्ग में दर्द मालूम होना, भूख का न लगना, मल सुत्त कीड़े, मस्तिष्क का स्राव, धातु या प्रमेह में परम उपकारी समझना चाहिये।

३७ मार्क्यूरियस कारोसाइभस-रक्त आमाशय, पेट में दर्द वेगकी अधिकता, आतशक, या विष के जरिये से मांस का उड़ना,

३८ रस्टक्स-- यह खास कर बात या चर्म रोग में व्यवहार कीजाती है। पुराना बात, एक स्थान पर विश्राम या हिलने डुलने में तकलीफ मालूम करना, थोड़ी देर ऐसा करने से आराम बोध हो। पक्षाघात, बसत, (चेचक) दाद फुन्सी, अग्नि कि चर्मरोग, काऊर रात में होनेवाला ज्वर, गाठ का फूलना, मोचखाजाने, जोड़के स्थान में चोट लगने से बाहर लगाना चाहिये।

३९ लाइकोपोडियम—परिपाक यंत्र की कमजोरी, पेट का फूलना, मुख में पानी का आना। पेट में नानाविधि की आवाज होना, कोष्ठ बद्ध, पथरी गिल्टी की वृद्धि बात की पीड़ा, बालों का उड़जाना, या घाव।

४० सलफर— यह दवा चमड़े पर अधिक उपकार करती है। खाल पर के हर किस्म के रोग में इसका व्यवहार करना चाहिये। खासकर खाज, या फुन्सी जिसके खुजलाने में आराम मालूम पड़े या उष्णता में वृद्धि हो, स्फोटक को आराम करती है, आंगुल हाड़ा (अंगुली का रोग विशेष,) पुराना

काम वद्ध को बवासीर, मूत्र के वेगको रोकने में असमर्थ मलद्वार में खुजली या जलन अथवा कृमि। कोई औषध उपकार नहीं पड़े तब इस दवा को दो एक बार भी बीच में खानेसे उपकार होताहै। औपियम का भी करीब यही लक्षण हैं।

४१ साइलिसिया- घाव, मसूड़े फोड़े, चेचक, गाठ फूलना हड्डी का रोग, दाद, अंगुलहाडा, हाथ पाव में पसीना, स्वेत प्रदर, नाखी का घाव, या पीब का निकलना, और घाव का सूखना, इस दवाका खास काम है-और पुराने रोग में अधिक उपकारी है।

४२ सिकेली— जरायु से रक्त गिरता हो या गर्भ स्राव अथवा अनिश्चित आक्षेप अनक दुर्बल प्रसव वेदना, प्रसव के बाद स्राव बद हागया हो, प्रसव के बाद दर्दरोग प्रसव के बाद नाड़ी का न निकलना आक्षेप, सड़ते वाला घाव या विशुचिका में शरीर का ऐंठना आदि में लाभ कारी है।

४३ सीपिया— ठीक समय पर ऋतु न होना या बाधक रजकी कमी, श्वेतप्रदर जरायू से रक्त गिरना, जरायुका स्थान से हट जाना, मूत्रपाण्डु रोग, सबेरेका वमन, प्रमेह गर्भ स्राव में अवसन्न मूर्च्छा गनवायू, शिरकी पीड़ा, कोष्ठबद्ध पक्षाघात (गोठ) में बेहरा, घाव, दाद, चर्मरोग या फनसा आदि में उपकारी है।

४४. सीना— कृमी नाशक । लक्षण—नाक की खुजली, दांतो का लगना, किड़मिड़ाना, बार बार भूख लगना, या भूख का न लगना, उदरामय कृमि निकल आना से मल द्वार की खुजली, बिस्तर पर मूत्र त्याग पेट का दर्द कृमि इत्यादि में।

४५ सिमिसिफ्यूगा —यह दवा खास कर गठियां सम्बन्धी पीडा में अधिक उपकारी है, शरीर के बायें अङ्ग में खास कर जब उस के साथ में जरायु की कोई पीडा हो अथवा कटि [कमर] में दर्द, माथे की वेदना, हृदय कम्पन, स्वल्परज, या रजशूल, अथवा अधिक रक्त का गिरना, गर्भा वस्था की पीडा, वृद्धा वस्था में जब रज स्राव बन्द होता है उस समय की पीडा।

४६ स्पन्जिया—घुगरि खासी की प्रथम अवस्था में यह दवा एकोनाइट के साथ अदल बदल कर देने से बहुत लाभ होता है। इस के अलावा अगर सूखी खांसी रात्रि में अधिक उठे, स्वरभङ्ग या उसी के साथ सूखी खासी अथवा अयटकोश के बढने या कठोर होने मेंभी उपकारी है।

४७ टेपेकेसिर्स -स्नायविक खासी, हूपिङ्ग खासी, घूगरि खांसी, हापनी विकारज्वर, सविरामज्वर, आक्षेप मृगी, पक्षाघात, शोथ, दुष्प्रवा सन्यापात, केनसर [कर्कट रोग] नाराङ्गा (एक प्रकार का फोडा) ऋतु शूल, अपाक, कमला, टेनसिल प्रदाह डिपथीरिया, उदरामय, अर्श, आदि पीडाओं में व्यवहार होती है।

४८ हायसायेमस — मृगीरोग, येठन,स्नायु की उत्तेजना उन्मत्तता, मद जनित प्रलाप, सन्निपातिकज्वर के बहुत से लक्षण देख पडना, मूत्र बन्द होजाना, या ऐसा होना जो मालूम न पडे। अवधाङ्ग राग में सूखी, खांसी स्नायु या सिर के बहुत प्रकार के रोगों में यह व्यवहार होती है रात्री में सूखी खासी, सोने पर

दुखकी, प्रसव के बाद उदरामय, स्नायु और मसूड़े की पीड़ा में व्यवहार होती।

४६ हेमा मेलिस — वस के द्वारा रक्त का गिरना रक्त गिरने वाली बवासीर, शरीर के हर एक स्थान से रक्त गिरना ओमरी की पीड़ा के कारण रजशूल कालासिरा, बाहर का प्रयोग जहां पर आर्निका सही न आवे वहां पर इसे व्यवहार करना चाहिये, खूनी बवासीर को बन्द करने के लिये चारभाग जल में १ भाग इस दवा को मिलाकर लगाना चाहिये।

५० हेपर सलफर—यह दवा कालकेरिया और सलफर इन दोनों को मिलाकर बनी है। इसी लिये कालकेरिया के समान गांठ पर और सलफर के समान चर्म के ऊपर इस का व्यवहार होता है। श्वास की नली की सब पीड़ा और घुमरी खांसी स्वरभङ्ग, घड़ घड़ श्वास का होना धरमाकाश, गांठ से पीव विस्फोटक और चिह्नभि पारा आदिक के अपव्यवहार करने से जो रोग होते हैं उन सब में प्रयोग होती है।



इति

लाहिड़ी एण्ड को

प्रधान औषधालय—१०१नम्बर कोलेज स्ट्रीट-कलकत्ता

कलकत्ता शाखा	मुफस्सिल शाखा
(१)शोभा बाजार शाखा,	(४)बांकीपुर शाखा चोहट्टा बांकीपुर,
(२) बड़ा बाजार शाखा,	(५) पटना शाखा चौक पटना
(३) भवानीपुर शाखा,	मथुरा शाखा होलीदरवाजा मथुरा

हम लोगों के औषधालय में सर्व प्रकार की होमियो पैथिक पुस्तकें औषधें-इंग्रेजी-बंगला-हिन्दी-उर्दूकी पुस्तकें और होमियोपैथिक चिकित्सा करने के उपयोगी सामान सर्वदा मौजूद रहते हैं

हमारे औषधालय में अच्छे अच्छे डाक्टर रहकर औषधी का काम देखा करते हैं। उत्कृष्ट और अकृत्रिम औषध विक्रय करनाही हम लोगो का उद्देश्य है। सस्ते मुल्य दिखाकर, निकृष्ट वस्तु विक्रय करना अधर्म समझते हैं-सर्व लोगो से प्रार्थना है कि हम लोगों की उत्तम औषध की परीक्षा करके देखे-मांग आने से, सूचीपत्र इंग्रेजी--बंगला--हिन्दी--उर्दू भाषाओं का छपा बिना मुल्य भेजा जाता हैं।

और सर्व साधारण लोगों के सुभीते के लिये और विदेशीय ग्राहक महाशयों के लिये--बांकीपुर--पटना और मथुरा शाखा के औषधालय में होमियो पैथिक औषधियों के सिवाय एलो पैथिक औषधों भी दुसरे स्थान में रखकर विक्रय करते हैं। सम्पूर्ण औषधें बिलायत को सीधा ओर्डर भेजकर मगाते हैं इस लिये और औषधालयों की अपेक्षा उत्तम औषध और बहुत कम नफे पर विक्रय करते हैं। सिवाय होमियो पैथिक--एलोपैथिक औषधों के और भी उपयोगी सामान जैसे -थर्मोमेटर [बुखार-

आगने का यन्त्र] पिचकारी नश्तर--आदि डाक्टरी चिकित्सा करने के औजार भी मौजूद रहते हैं।

साधारण औषधों की सूची

	१ ड्राम	२ ड्राम	४ ड्राम	१ औंस
अमिश्रअर्क(मदरटिंचर)	।=)	॥=)	१)	१॥)
१ नम्बर से १२ तक	।)	।=)	॥=)	१)
३०	।=)	॥)	॥।)	१।)
२००	१)	१॥)	२॥)	४)
५००	२)	३)	४)	५)
१०००	३)	४)	५)	६)
चूर्ण (पाउडर) ३ नम्बर	।)	॥।)	१।)	२)
टिंचर चूर्ण ३० न, तक	।=)	॥)	॥।)	१।)

हैजे की अमूल्य औषध डा० रूबनी - साहिब का असली स्प्रिट कैम्फर

यह औषध हैजे के लिये अत्यंत ही उपयोगी साबित हुई है इस से बढ़कर शीघ्र फायदा करने वाली दूसरी औषध नहीं है। इसको हर एक गृहस्थ मनुष्य को पास रखना चाहिये और प्राय उन मनुष्यों को जो विदेश भ्रमण करते हैं, तीर्थ यात्रा करते हैं, या तिजारत करने जाते हैं उनके लिये तो बहुत उपयोगी है। क्योंकि हर एक स्थान पर औषधी मिलना बहुतही मुश्किल है, और कोई कोई स्थान ऐसे है जहां पर नतो औषध मिल सकी है न कोई चिकित्सक है। वहां पर बीमारी होजाने से मनुष्य घबरा गया बैठते हैं, उनके लिये मित्र के समान हैजे से बचाने वाली औषध अर्क कपूर की जरूर १ शीशी पास रखना चाहिये १ शीशी से कितनेही मनुष्यों को फायदा पहुंचता है

और इसी उपयोगी औषध होने पर भी मूल्य बहुत कम है यानी छोटी शीशी मूल्य ।-) मध्यमशीशी मूल्य ॥) बड़ीशीशी ॥।=) है

अर्क कपूर की गोली

यह गोली भी अर्क कपूर के समान फायदा पहुचाती है। इसे बच्चे तक बड़ी आसानी से खासके हैं और विदेश में भ्रमण करने वालों के लिये इसके पास रखने में बड़ा सुभीता पड़ता है और विशेष फायदा करती है मूल्य आधी औंस की शीशी ।।।) । १ औंस की शीशी १।)

डाक्टर सालजर साहिब का बनाया हुआ कपूर का चूर्ण।

चूर्ण इस चूर्ण के सेवन करने में बड़ा सुभीता पड़ता है और फायदा अर्क कपूर व कपूर की गोली के समान ही करता है मूल्य आधा औंस शीशी १ रु- येक औंस की शीशी का १॥)

औषधो से भरा हुआ बक्स

न १—हैजे की दवाई का बक्स (छोटा) १२ शीशी दवाई और पुस्तक हैजा के इलाज करने की,१शीशी कपूर का अर्क,और १ बूंद टपकाने का यन्त्र के सहित मूल्य ४॥।)

२—हैजे की दवाई का बक्स (बड़ा)। २४ शीशी दवाई व उपरोक्त लिखा सामान सहित मूल्य ८)

३—गृह चिकित्सा करने का बक्स (छोटा) २४ शीशी दवाई सहित बक्स १ गृह चिकित्सा नाम की हिन्दी पुस्तक, और बून्द टपकाने के यंत्र सहित मूल्य ८)

नं०४—गृह चिकित्सा का (बड़ा) बक्स ३६ शीशी दवाई व उपरोक्त सामान सहित मुल्य ११॥)